सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 07, नई दिल्ली । मंगलवार, 18 मार्च 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अपने मिशन में सफल होने के लिए आपको अपने लक्ष्य के प्रति एक चित भाव से समर्पित होना पड़ेगा।

03 *जंतर मंतर पर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की बैठक
06 महिलाओं की बढ़ती वित्तीय भागीदारी
08 पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रधान (केंद्रमंत्री धर्मेंद्र प्रधान का पिता) का निधन

परिवहन आयुक्त के प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरों को विभाग ने जारी किया आदेश, आखिर क्यों?

संजय बाटला

नई दिल्ली। परिवहन आयुक्त द्वारा अपने प्रिय बाहरी राज्यों में पंजीकृत वाहन स्क्रैप डीलरो को अपने पद के बल का दुरुपयोग करने के साथ बॉक्सरों के बल पर जनता के वाहनों को उठवाने **(यहां उठवाना शब्द का सही अर्थ लुटवाना)** का जो कृत्य करवाया उसका बढ़ा सबूत आज सामने आ ही गया। इस सबूत का अर्ध है की किसी भी परिवहन आयुक्त के प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो ने ना तो जनता को उनके वाहनों की स्क्रैप कीमत दी ओर ना ही परिवहन विभाग में जमा करवाई। **इतना ही नही यहां यह भी जानने योग्य बाते है**

1. आखिर किस की शय पर परिवहन आयुक्त के प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो द्वारा वाहन मालिकों या समय सीमा में पैसों को जमा क्यों नहीं करवाया?

2. परिवहन विभाग द्वारा समय सीमा में ही कानूनी कार्यवाही क्यों नहीं की आख़िर कौन था इसके पीछे?

3. परिवहन आयुक्त के इन प्रिय वाहन स्क्रैप डीलरो ने जब्त किए वाहनों के पैसे तो नहीं दिए और साथ ही भारत सरकार के राजस्व को मोटा चुना लगाया और इसकी पूर्ण जानकारी दिल्ली के परिवहन आयुक्त को है फिर भी कार्यवाही नहीं आखिर क्यों ?

इस लेखा के साथ परिवहन विभाग द्वारा जारी आदेश ईमेल का हिंदू रूपांतरण और कापी स्लगन

कितना जनता और सरकार का हित करने वाला है सह मुख्य सचिव एवम्परिवहन आयुक्त दिल्ली

स्क्रैपसेल टीपीटी 4:29 अपराह्न

अनिरुद्ध को, भरत, भारत, जाओ, गोग्री...

ट्रेल मेल का संदर्भ लें.

सर/मैडम, सभी आरवीएसएफ को निर्देश दिया जाता है कि वे उन वाहनों के संबंध में पूर्ण स्क्रैप मूल्य (राशि) सरकारी खजाने में 15 दिनों की अवधि के भीतर बिना किसी शुल्क काटे समयबद्ध तरीके से जमा करें, जिनके लिए स्क्रैप मूल्य का दावा नहीं किया गया है। खाते का विवरण इस प्रकार हैः

खाते का नाम- कमिश्नर टीपीटी- संग्रह

खाता संख्याः 00000010577522233

आईएफएससी कोडः SBIN0005453

एमआईसीआर कोडः 110002094

इसके अलावा, यदि कोई आरवीएसएफ स्क्रैप राशि सरकार के पास जमा नहीं करता है। परिवहन विभाग द्वारा जारी दिनांक 20/02/2024 को दिल्ली के सार्वजनिक स्थानों पर जीवन समाप्ति वाले वाहनों को संभालने के लिए दिशानिर्देश, 2024 के खंड 10 में उल्लिखित निर्धारित समय के भीतर कोषागार में जमा कराना होगा। जीएनसीटीडी द्वारा कारण बताओ नोटिस जारी किया जा सकता है, जिसके बाद संबंधित आरवीएसएफ को ब्लैक लिस्ट करने का आदेश दिया जा सकता है।

इसे सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से जारी किया जाता है। हालाँकि, **अधिकांश आरवीएसएफ ने सरकार को कोई राशि जमा नहीं की है।** कोषागार से एक बार पुनः अनुरोध है कि लावारिस वाहनों से संबंधित धनराशि सरकारी कोषागार में जमा कराई जाए, अन्यथा सख्त कार्रवाई की जाएगी।

Government of National Capital Territory of Delhi
Transport Department: Scrapping Cell
5/9, Under Hill Road: Delhi -110054

F.24(1)/NO/SCRAP/TPT/2024/075786517/4136 Dated 23/01/2025

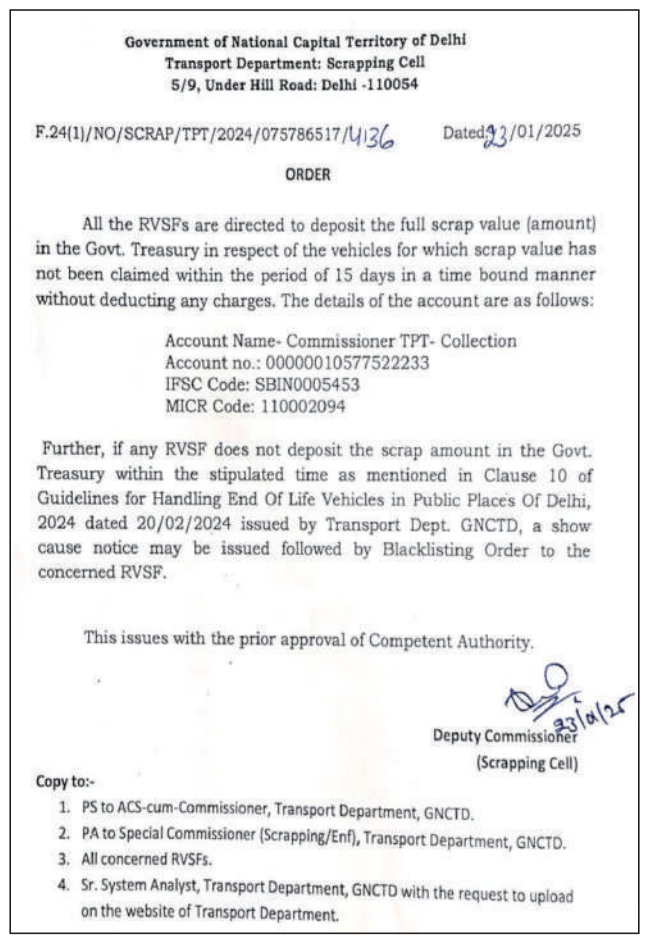

ORDER

All the RVSFs are directed to deposit the full scrap value (amount) in the Govt. Treasury in respect of the vehicles for which scrap value has not been claimed within the period of 15 days in a time bound manner without deducting any charges. The details of the account are as follows:

Account Name- Commissioner TPT- Collection
Account no.: 00000010577522233
IFSC Code: SBIN0005453
MICR Code: 110002094

Further, if any RVSF does not deposit the scrap amount in the Govt. Treasury within the stipulated time as mentioned in Clause 10 of Guidelines for Handling End Of Life Vehicles in Public Places Of Delhi, 2024 dated 20/02/2024 issued by Transport Dept. GNCTD, a show cause notice may be issued followed by Blacklisting Order to the concerned RVSF.

This issues with the prior approval of Competent Authority.

23/01/25
Deputy Commissioner
(Scrapping Cell)

Copy to:-
1. PS to ACS-cum-Commissioner, Transport Department, GNCTD.
2. PA to Special Commissioner (Scrapping/Enf), Transport Department, GNCTD.
3. All concerned RVSFs.
4. Sr. System Analyst, Transport Department, GNCTD with the request to upload on the website of Transport Department.

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मेंन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

मातृशक्ति, पूरे विश्व की प्रेरणा स्रोत थी, हैं और रहेगी

मातृशक्ति, पूरे विश्व की प्रेरणा स्रोत थी, हैं और रहेगी।
इस संसार में दो सबसे बड़ी शक्तियां हे प्रकृति और नारी (मातृ शक्ति) दोनों पर हमारा अस्तित्व निर्भर है। समाज ही नहीं राष्ट्र ओर विश्व उत्थान के हर क्षेत्र मे मातृ शक्ति का योगदान अनुकुर्णिय अभूतपूर्व है,

* स्त्री यदि बहन है तो प्यार का दर्पण है,
* स्त्री यदि पत्नी है तो खुद का समर्पण है,
* स्त्री अगर भाभी है तो भावना का भंडार है
* मामी – मौसी– बुआ है तो स्नेह का सत्कार है,
* स्त्री यदि काकी है तो कर्तव्य की साधना है,
* स्त्री अगर साथी है तो सुख की शतत संभावना है,
* स्त्री अगर बहु–बेटी है तो परमात्मा की आत्मा है !!!
* और अंतिम पंक्ति स्त्री यदि श्माँश है तो साक्षात श्परमात्माश है,
* हज़ारों फूल चाहिए एक माला बनाने के लिए, हज़ारों दीपक चाहिए एक आरती सजाने के लिए, हज़ारों बून्द चाहिए एक समुंद्र बनाने के लिए, पर एक मातृ शक्ति अकेली ही काफी है घर, समाज ओर राष्ट्र को स्वर्ग बनाने के लिए।

मातृ शक्ति को सादर वंदन. सादर नमन!

संजय बाटला

विकसित दिल्ली के लिए परिवहन और यातायात प्रबंधन में बड़े बदलाव की जरूरत, जानिए एक्सपर्ट की राय

रिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दिल्ली को एक आधुनिक, सुव्यवस्थित और पर्यावरण-संवेदनशील शहर बनाने की दिशा में परिवहन और यातायात प्रबंधन में बड़े बदलाव की योजना पर काम की जरूरत है। दिल्ली परिवहन विभाग के पूर्व उपायुक्त और असम सरकार में यातायात सलाहकार अनिल छिकारा ने विकसित दिल्ली के लिए परिवहन और यातायत प्रबंधन में क्या बदलाव होने चाहिए इसका एक विस्तृत प्रस्ताव तैयार किया है. इस प्रस्ताव के तहत बस सेवाओं से लेकर निजी परिवहन, ई-रिक्शा, ट्रैफिक नियंत्रण और सड़क सुरक्षा तक व्यापक सुधार किए जाएंगे. योजना का लक्ष्य सार्वजनिक परिवहन को अधिक सुविधाजनक व कुशल बनाना है, जिससे ट्रैफिक जाम और प्रदूषण की समस्या को कम किया जा सके. क्योंकि आज की स्थिति ये है कि ट्रैफिक जाम से हर राहगीर परेशान है।

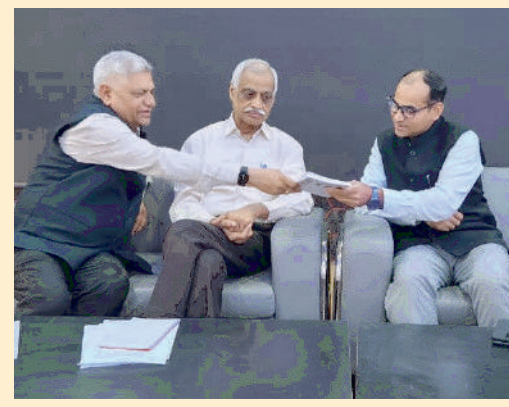

डीटीसी बस सेवा में बदलाव की जरूरतः दिल्ली ट्रांसपोर्ट कॉरपोरेशन (डीटीसी) को नई तकनीक और प्रभावी रूटिंग के साथ अपग्रेड किया जाए. इसके तहत बसों के नए मॉडल लाने, ज़ोन-आधारित रूटिंग और डिजिटल किराया प्रणाली लागू करने की योजना लागू हो. लंबी दूरी की बसों को कम किया जाएगा, जिससे शहर में भीड़भाड़ को नियंत्रित किया जा सके।

अब दिल्ली होगी जाम मुक्त....

दिल्ली में ट्रैफिक जाम की समस्या से निपटने के लिए ट्रैफिक पुलिस कमर कस रही है। गृह मंत्री अमित शाह के निर्देश पर ट्रैफिक पुलिस परिवहन विभाग एनडीएमसी एमसीडी और रोड इंजीनियरिंग से जुड़े विभागों के साथ मिलकर काम कर रही है। ट्रैफिक विशेषज्ञों का कहना है कि जब तक सड़कों की हालत में सुधार नहीं होता तब तक जाम की समस्या से निपटा नहीं जा सकता।

नई दिल्ली। दिल्ली में वर्षों से ट्रैफिक जाम एक बड़ी समस्या रही है। सुबह और शाम के पीक आवर्स में आमतौर पर लगभग सभी जगहों पर जाम लगता है। इसके अलावा अन्य समय में भी अलग-अलग कारणों से कहीं भी जाम लग जाता है, जिससे वाहन चालकों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है।

समाधान निकालने की कोशिशें तेज

दिल्ली में डबल इंजन की सरकार बनने के बाद राजधानी की इस सबसे बड़ी समस्या का समाधान निकालने की कोशिशें तेज हो गई हैं। हाल ही में गृह मंत्री अमित शाह के निर्देश पर ट्रैफिक पुलिस जाम की समस्या से निजात पाने के लिए परिवहन विभाग, एनडीएमसी, एमसीडी, रोड इंजीनियरिंग से जुड़े विभागों के साथ विचार-विमर्श में जुटी है। हर तरह की कवायद चल रही है।

मैनपावर बढ़ाने पर भी विचार

ट्रैफिक विशेषज्ञों का कहना है कि जब तक सड़कों की हालत में सुधार नहीं होता, तब तक जाम की समस्या से निपटा नहीं जा सकता। दूसरी ओर ट्रैफिक में मैनपावर बढ़ाने पर भी विचार किया जा रहा है।

ट्रैफिक पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि बेहतर ट्रैफिक प्रबंधन के लिए कम से कम आठ हजार कर्मियों की जरूरत है। ट्रैफिक पुलिस में फिलहाल 4791 कर्मी तैनात हैं। इसका मतलब है कि प्रणाली में सुधार के लिए 3,000 से अधिक कर्मियों की आवश्यकता होगी।

8 हजार जवानों की तैनाती की जरूरत

मुख्यालय सूत्रों के अनुसार मैनपावर को लेकर राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद की ओर से ऑडिट कराया जा रहा है। यह भारत सरकार की एक संस्था है। राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद को लिखे पत्र में ट्रैफिक यूनिट में 8 हजार जवानों की तैनाती की जरूरत बताई गई है।

जानकारी के अनुसार 2021 में ट्रैफिक पुलिस की जो क्षमता है, उससे फिलहाल एक हजार कम है। यानी इस यूनिट से एक हजार जवान हटा दिए गए, जबकि राजधानी में ट्रैफिक जाम की समस्या बढ़ती जा रही है। सोमवार को भी इस मुद्दे को लेकर पुलिस मुख्यालय में ट्रैफिक पुलिस के आला अधिकारियों और पुलिस कमिश्नर संजय अरोड़ा के बीच बैठक हुई।

यह काउंसिल सड़कों के हिसाब से ऑडिट कर रही है कि राजधानी में ट्रैफिक यूनिट में कितने जवानों की जरूरत है। भविष्य को लेकर भी आकलन किया जा रहा है। यह काउंसिल दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर काम कर रही है, ताकि पुलिस की दक्षता बढ़ाई जा सके, उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाई जा सके, सुरक्षा और विश्वसनीयता कायम रखी जा सके और बेहतर गुणवत्ता सुनिश्चित की जा सके।

डीटीसी बसों का खराब होना भी समस्या

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि राजधानी में डीटीसी बसों का खराब होना भी एक बड़ी समस्या है। हर राज्य की करीब 350 बसें राजधानी की सड़कों पर खराब हो जाती हैं। इसके अलावा अन्य वाहन भी खराब हो जाते हैं। ऐसे मामलों से जल्दी निपटने के लिए परिवहन विभाग से मदद ली जा रही है।

पुरानी सीएनजी बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाने का फैसला

अगले कुछ महीनों में 1000 इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी

दिल्ली की सड़कों पर जल्द ही इलेक्ट्रिक बसों की संख्या बढ़ने वाली है। दिल्ली सरकार ने पुरानी सीएनजी बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाने का फैसला किया है। अगले कुछ महीनों में 1000 इलेक्ट्रिक बसें सड़कों पर उतारी जाएंगी। इससे प्रदूषण कम करने और लोगों को बेहतर परिवहन सुविधा देने में मदद मिलेगी। वहीं पुरानी बसों का इस्तेमाल रेस्तरां के तौर पर करने की योजना है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश की राजधानी की सड़कों पर आगामी कुछ दिनों में अधिकाधिक इलेक्ट्रिक बसें चलती दिखाई देंगी। दिल्ली सरकार पुरानी सीएनजी बसों को चरणबद्ध तरीके से हटाने जा रही है। अधिकारियों ने बताया कि सरकार अगले कुछ महीनों में पुरानी सीएनजी बसों की जगह इलेक्ट्रिक बसें लाने की योजना बना रही है।

अधिकारियों का कहना है कि बीते दिनों परिवहन मंत्री पंकज सिंह ने विभाग के शीर्ष अधिकारियों के साथ एक उच्च स्तरीय बैठक कर उन्हें मार्च के अंत तक 1,000 इलेक्ट्रिक बसों की खरीद में तेजी लाने को कहा। विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि फिलहाल दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) के बेड़े में 2,400 सीएनजी बसें और 1,700 इलेक्ट्रिक बसें हैं। परिवहन मंत्री ने पुरानी बसों के संबंध में एक बैठक की जिनकी आयु लगभग समाप्त होने वाली है।

● सीएनजी बसों के बेड़े में से 50 प्रतिशत को हटा दिया गया

उन्होंने कहा कि विभाग मार्च के अंत तक 1,000 इलेक्ट्रिक बसें शामिल करने पर काम कर रहा है। बता दें कि डीटीसी के सीएनजी बसों के बेड़े में से 50 प्रतिशत को हटा दिया गया है और शेष बसें अगले कुछ महीनों में सेवा से बाहर हो जाएंगी।

● खटारा बसों का इस्तेमाल रेस्तरां के तौर पर होगा

डीटीसी की खटारा बसों को अब किचन के तौर पर इस्तेमाल किया जाएगा। डीडीए इन बसों को यमुना किनारे खड़ा करेगा। किचन भी बस के अंदर ही होगा व बैठकर खाने की व्यवस्था भी। इस महत्वपूर्ण योजना को मूर्त रूप देने के लिए दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) ने काम भी शुरू कर दिया है। अभी जिस बस को रेस्तरां में बदलने का प्लान बनाया जा रहा है, वह टाटा मार्कोपोलो मॉडल एसी सीएनजी लो फ्लोर बस है। यह 2010 का मॉडल है। बस में 36 यात्री सीटें, इंजन तथा सभी इंटीरियर लगे हुए हैं। इलेक्ट्रिक फिटिंग भी है। बस की उम्र पूरी हो चुकी है।

भावुक प्रवृत्ति के होते है, मिथुन राशि के जातक

ज्योतिषाचार्य पं योगेश पौराणिक

नक्षत्र मंडल में जब मृगशिरा नक्षत्र के तीसरे चरण से लेकर पुनर्वसु नक्षत्र के तीसरे चरण तक चंद्रमा का गोचर होता है। तब चंद्रमा मिथुन राशि में माना जाता है। मिथुन राशि वायु तत्व वाली,पश्चिम दिशा की स्वामिनी,शूद्र वर्ण वाली, द्विस्वभाव वाली पुरुष प्रकृति की शूद्र वर्ण वाली राशि है। इस राशि के लोगो पर बुध,मंगल,राहु ग्रहों का प्रभाव देखने को मिलता है।कालपुरुष की कुंडली में इस राशि से कंधे, हाथों और बाहुओं का विचार किया जाता है।

गुण और स्वभाव : मिथुन राशि के लोग मध्यम कद काठी के,मोटी गर्दन वाले,घुंघराले बाल लिए ,मनमोहक छवि के होते हैं। इनकी थोड़ी में गड्ढा होता है और हांथ पतले होते है। मिथुन राशि के लोग पढ़ने लिखने के शौकीन,तीक्ष्ण बुद्धि वाले होते हैं। इन्हे इंडोर खेल में काफी रुचि होती है। यह काफी तार्किक और बातूनी तथा जिज्ञासु प्रवृति के होते हैं। मिथुन राशि के लोग काफी कामुक और प्रेम सक्रिय होते हैं। जीवन साथी से जल्दी गुस्सा होना फिर जल्दी मान जाना इनका स्वाभाविक गुण होता है। कभी कभी यह चिड़चिड़े हो जाते हैं तथा जिंदादिल होने की वजह से धोखे के शिकार हो जाते हैं। विपरीत लिंग के लोगो के साथ घूमना,दोस्ती करना इन्हे काफी भाता है। मिथुन राशि के लोग काफी संवेदनशील और परिर्वतनशील होते हैं। यह किसी भी कार्य की योजना बनाने में काफी कुशल होते हैं।

कैरियर : मिथुन राशि के लोग कुशल गणितज्ञ,मैनेजर,लेखक,कवि, बैंकिंग अधिकारी,आयात निर्यात,टेलीफोन संचालक,चिकित्सक, समीक्षक,अंतरिक्ष अनुसंधान,जुआ, लॉटरी,शेयर आदि के दलाल, कॉमेंटेटर, गायक,एयर फोर्स,क्लर्क,सूती वस्त्र उद्योग,टीचिंग आदि में अपना कैरियर बनाकर सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

रोग : मिथुन राशि के लोगो को थायरॉयड, टी बी,सर्दी खांसी, अतिसार,हड्डी टूटना,निमोनिया या छाती से सम्बन्धित रोग आदि हो सकते हैं।

भाग्यशाली दिन : सोम,बुध,गुरु और शुक्र

भाग्यशाली रंग : हरा,पीला और सफेद

भाग्यशाली अंक :3,5,6,7

शुभ रत्न : पन्ना

उपाय : मिथुन राशि के जातक को पूर्णिमा का व्रत तथा भगवान विष्णु और गणेश जी की उपासना करना अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है। प्रत्येक बुधवार भगवान गणेश को गुड़ का भोग लगाएं।

कौन से ग्रह करवाते हैं प्रेम संबंधों में ब्रेकअप

कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रेम में होता है, उसके लिए दुनिया सबसे खूबसूरत होती है। वह हमेशा कल्पना और भावनाओं की डोर पर सवार रहता है। आज के समय में युवक-युवतियों के बीच प्रेम संबंध यानि अफेयर होना आम बात हो गई है। लेकिन इनमें से कुछ प्रेम प्रसंग यानी लव अफेयर ही शादी में बदल जाते है, और कई अफेयर बीच में ही खत्म हो जाते हैं। प्रेम में ब्रेकअप होने पर बहुत से युवा डिप्रेशन में चले जाने या नशों का शिकार होते भी देखे गए हैं।

कई बार ग्रहों की गणना भी प्रेम की मजबूत डोर को काट देती है और ब्रेकअप के लिए कुछ खास ग्रह जिम्मेदार होते हैं। ज्योतिष शास्त्रों के अनुसार, प्रेम संबंधो का टूटना यानि ब्रेकअप होना भी ग्रहों की दशा पर निर्भर करता है। इन ग्रहों के उतार चढ़ाव के कारण ही लोगो के संबंध टूटते और जुडते हैं। ज्योतिष शास्त्र में प्रेम के कारकों के बारे में बताया गया है। जन्म कुंडली का पंचम भाव प्रेम संबंधों का माना गया है। कुंडली का जब पंचम भाव अशुभ और क्रूर ग्रहों से पीड़ति हो जाता है तो प्रेम संबंधों में अचानक परेशानी आनी लगती है। बात बात पर तनाव और विवाद की स्थिति बनने लगती हैं। कभी कभी भ्रम के कारण लव रिलेशन में दिक्कत आने लगती हैं।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार ब्रेकअप का कारण मुख्य रूप से तीन ग्रह सूर्य , मंगल और शनि होते हैं। इन तीनों ग्रहों के कारण लड़का और लड़की में ब्रेकअप होता है। इन तीनों ग्रहों में से कोई भी एक ग्रह उच्च राशि में होकर पंचम या सप्तम भाव को देखता है, तो प्रेम विच्छेद यानि संबंध टूटने का योग बनता है। यह भी कहा जाता है कि अगर किसी की कुंडली में सूर्य, मंगल और शनि के अलावा पांचवें और सातवें घर के स्वामी ग्रह पर इन तीनों में से किसी एक की दृष्टि भी पड़ रही हो तो भी प्रेम में ब्रेकअप का योग बनता है। किसी का मंगल ग्रह दूषित हो तो यह शुभ नहीं होता। खासतौर पर जब आप किसी के साथ प्रेम में हों। कहा जाता है कि ऐसे जातक अपनी मनमानी करने वाले होते हैं। इन्हें कभी भी अपने पार्टनर की फीलिंग का ख्याल नहीं रहता। बस अपने ख्यालों की दुनिया में रहते हैं। इसके चलते इनके रिश्ते का अंत भी ब्रेकअप से होता है। यह भी कहा जाता है कि शनि की कुदृष्टि हो तो व्यक्ति के स्वभाव में अचानक ही चिड़चिड़ापन आने लगता है। इससे प्रेम संबंधों में आए दिन झगड़े होते रहते हैं और बात इतनी बिगड़ जाती है कि दोनों एक दूसरे के शक्ल देखना नहीं चाहते, जिससे उनके रिश्ते का अंत भी ब्रेकअप से हो जाता है ।

यह भी कहा जाता है यदि किसी पर सूर्य का प्रभाव हो तो वह प्रेम संबंधों में कभी भी सामने वाले को तवज्जो नहीं देता । इसके चलते दोनों कभी भी किसी भी बात पर एकमत नहीं होते । इसके चलते बात इतनी बढ़ जाती है कि ब्रेकअप एक रास्ता बचता है। इसके अलावा प्रेम संबंधों या शादीशुदा जीवन में अचानक ब्रेक अप के लिए ज्योतिष शास्त्र में राहु और केतु को भी जिम्मेदार माना गया है । राहु और केतु यह दोनों पाप ग्रह हैं। जब ये अशुभ होते हैं तो रिश्तों में भ्रम की स्थिति बना देते हैं जिस कारण कभी कभी ऐसी बातों पर विवाद की स्थिति बनने लगती है जिनका कोई अर्थ नहीं होता है। राहु और केतु अचानक ब्रेकअप भी कराते हैं। इसलिए इन ग्रहों को शांत रखने के लिए भगवान शिव और भगवान गणेश जी की पूजा करनी चाहिए।

ज्योतिष अनुसार अगर किसी युवक या युवती की कुंडली में चंद्र व शुक्र एक साथ एक ही राशि में स्थित हो तो वह जातक प्रेम संबंधों में धोखा देता है। अगर प्रेम संबंधों में बाधा पहुंचाने वाले ग्रहों का पता लगाकर यदि उपाय किये जाएं तो दिक्कत दूर भी हो सकती है। सबसे पहले शनि देव को शांत रखना बहुत ही जरूरी है। शनि जब अशुभ होते हैं तो व्यक्ति के प्रेम संबंधों को प्रभावित करते हैं। पंचम भाव पर शनि की दृष्टि पड़ने से वाद विवाद और ब्रेकअप जैसी स्थिति का निर्माण करते हैं। इसके लिए शनिवार के दिन शनि देव की पूजा करनी चाहिए और शनि से जुड़ी चीजों का दान करना चाहिए।

मंगल ग्रह जब कुंडली में अशुभ होता है तो प्रेम संबंध में लड़ाई झगड़े की स्थिति अधिक बनने लगती है। क्रोध के कारण संबंध प्रभावित होने लगते हैं। मंगल को शुभ बनाने के लिए हनुमान जी की पूजा करनी चाहिए। सूर्य ग्रह जब अशुभ होता है तो प्रेम संबंधों को लेकर घर के बड़े नाराज होने लगते हैं जिस कारण प्रेम संबंधों पर बुरा असर पड़ने लगता है। इसके लिए रविवार के दिन सूर्य देव को सुबह उठकर जल देना चाहिए। पिता को प्रसन्न रखने की कोशिश करनी चाहिए।

ज्योतिषशास्त्र अनुसार शादीशुदा जीवन और शादी से पूर्व प्रेम संबंधों में धोखा मिलने की प्रमुख वजह राहु ग्रह को भी माना गया है। राहु कई रहस्यों से जुडा ग्रह है। अगर व्यक्ति की जन्म कुंडली में राहु ग्रह निर्बल है तो उसे धोखा मिलने की संभावनाएं ज्यादा रहती है। प्रेम संबंधों में अचानक दरार पडने का प्रमुख कारक ग्रह केतु को माना है। इस ग्रह की वजह से प्रेम संबंधों में खटास पड जाती है। अगर कोई युवक-युवती प्रेम में हैं या उनमें कोई अफेयर चल रहा है तो किसी अनुभवी ज्योतिषी की मदद से वे अपनी कुंडली में ग्रह स्थितियों का अध्ययन करवा कर प्रेम संबंधों में धोखा खाने से आसानी से बचा जा सकते हैं या फिर अपने लव अफेयर के भविष्य को लेकर पहले से ही मानसिक रूप से तैयार यानी मेंटली प्रिपेयर हो सकते हैं।

हमारे जीवनभर का निचोड़ ही अगले जन्म का बीज बनता है

मरते क्षण की अंतिम चाह दूसरे जीवन की प्रथम घटना बन जाती है जो इस जीवन में अंतिम है, वह दूसरे जीवन में प्रथम बन जाता है। जैसे रात को जब हम सोते हैं तो जो रात सोते समय हमारा आखिरी विचार/भाव होता है वही सुबह जागते समय हमारा पहला विचार/भाव बन जाता है। इसे तो हम अपने अभ्यास से सुनिश्चित कर ही सकतें हैं और इसी तरह मृत्यु महानिद्रा है, बिल्कुल बड़ी नींद की तरह है। बस फर्क इतना पड़ता है के तब हम इस शरीर में नहीं जागते दूसरे शरीर में जागते हैं। लेकिन इस जीवन का जो अंतिम विचार/वासना/कामना/पकड़ होती है, वही दूसरे जीवन का प्रथम विचार, प्रथम वासना बन जाती है। इसीलिए अंतिम समय में प्रभु स्मरण लाभकारी होता है। तदनुसार प्रतीकात्मक/सिम्बोलिक रूप से, सभी अपने बच्चों के नाम प्रभु का समानार्थी रखा करते थे। लेकिन अब तो वह भी संकल्पना विलीन होती जा रही है और बच्चों के नाम भी संजु/मंजु/सोनू/मोनू/सन्नी/विकी, रखकर अपने आप को हम पढ़ा-लिखा सभ्य मानने लगें हैं। साथ ही ध्यान रहे कि यदि जीवनभर हमने निंदा/कुकृत्य का अभ्यास किया है तो इसी अभ्यास की ही प्रधानता मृत्यु के क्षण भी बनी रहेगी। यदि जीवनभर हमने प्रभु स्मरण/प्रभु धन्यवाद/जीवन अध्ययन किया है तो यही अभ्यास हमारे जीवन के अंतिम क्षणों में हमारी रग-रग में होगा। जीवन भर का अभ्यास, जीवन का आखिरी फल बनता है और वही अगले नये जीवन के पहले बीज के रूप में निरूपित होना बिल्कुल सहज/स्वाभाविक है।

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक लाभ पाने के लिये उपाय:-

यम-नियमों का अभ्यास इसका सबसे बड़ा साधन है। यम व नियम संक्षेप से नीचे दिये जाते हैं।

यम (सामाजिक)

१. अहिंसा (किसी सज्जन और बेगुनाह को मन, वचन या कर्म से दुःख न देना)

२. सत्य (जो मन में सोचा हो वही वाणी से बोलना और वही अपने कर्म में करना)

३. अस्तेय (किसी की कोई चीज बिना पूछे न लेना)

४. ब्रह्मचर्य (अपनी इच्छाओं पर नियंत्रण रखना विशेषकर अपनी यौन इच्छाओं पर पूर्ण नियंत्रण)

५. अपरिग्रह (सांसारिक वस्तु भोग व धन आदि में लिप्त न होना)

नियम (व्यक्तिगत)

१. शौच (मन, वाणी व शरीर की शुद्धता)

२. संतोष (पूरे प्रयास करते हुए सदा प्रसन्न रहना, विपरीत परिस्थितियों से दुखी न होना)

३. तप (सुख, दुःख, हानि, लाभ, सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास, डर आदि की वजह से कभी भी धर्म को न छोड़ना)

४. स्वाध्याय (अच्छे ज्ञान, विज्ञान की प्राप्ति के लिये प्रयास करना)

५. ईश्वर प्रणिधान (अपने सब काम ऐसे करना जैसे कि ईश्वर सदा देख रहा है और फिर काम करके उसके फल की चिंता ईश्वर पर ही छोड़ देना)

सफलता अंतिम नहीं है और असफलता घातक नहीं है।

आगे बढ़ने के लिए साहस की आवश्यकता है। मैजिक हमारे आसपास है, हमारे अंदर है, और हम सभी में है। यह हमारी सोच, हमारी कल्पना, हमारी ऊर्जा और हमारे इरादों से बनता है। भरोसा और उम्मीद ही वह शक्ति है जिससे हम अदृश्य को भी देख सकते हैं, अविश्वसनीय पर विश्वास कर सकते हैं और असंभव को भी संभव बना सकते हैं। अपने उन पुराने दिनों को कभी नही भूलना है जब हम उन चीजों के लिए प्रार्थना करते थे जो आज हमारी हैं। सफ़ल होने बाद आदमी पहला काम करता है, मोटिवेशन, स्वयं एक अच्छा मोटिवेटर बन जाता है। लोग सुनते है और कहीं ना कहीं लाभ भी मिलता है सुनने वाले को भी शायद। यूट्यूब पर अच्छे मोटिवेटर है लेकिन जब उनके विरूद्ध अफ़वाह फैली या डाउनफॉल आया तो वो स्वयं कमबैक नहीं कर पाए। जानो मानो और समझो स्वयं से बड़ा कोई मोटिवेशन नहीं है।

हम बदलें तो दुनिया बदले

बूढ़ाअमरनाथ की कथा

पाकिस्तानी क्षेत्र से तीन ओर से घिरी सीमावर्ती पुंछ घाटी के उत्तरी भाग में पुंछ कस्बे से 23 किमी की दूरी पर स्थित का मंदिर सांप्रदायिक सौहार्द की कथा भी सुनाता है जो इस क्षेत्र में है। वैसे यह भी कहा जाता है कि भगवान शिव ने कश्मीर में स्थित अमरनाथ की गुफा में माता पार्वती को जो अमरता की कथा सुनाई थी उसकी शुरुआत बुड्ढा अमरनाथ के स्थान से ही हुई थी और अब यह मान्यता है कि इस मंदिर के दर्शनों के बिना अमरनाथ की कथा ही नहीं, बल्कि अमरनाथ यात्रा भी अधूरी है। कितने आश्चर्य की बात है कि हिन्दुओं का धार्मिक स्थल होने के बावजूद इसके आसपास कोई हिन्दू घर नहीं है और इस मंदिर की देखभाल आसपास रहने वाले मुस्लिम परिवार तथा सीमा सुरक्षा बल के जवान ही करते हैं। बुड्ढा अमरनाथ मंदिरों की नगरी जम्मू से 246 किमी दूरी पर स्थित पुंछ घाटी के राजपुरा मंडी क्षेत्र, जहाँ तक पहुँचने के लिए किसी प्रकार की पैदल यात्रा नहीं करनी पड़ती है और जिसके साथ ही कश्मीर का क्षेत्र तथा बहुत ही खूबसूरत लोरन घाटी लगती है, में स्थित बुड्ढा अमरनाथ का मंदिर चकमक पत्थर से बना हुआ है। यह सभी अन्य शिव मंदिरों से पूरी तरह से भिन्न है। मंदिर की चारदीवारी पर लकड़ी के काम की नक्काशी की गई है जो सदियों पुरानी बताई जाती है। कहा जाता है कि भगवान शिव द्वारा सुनाई जाने वाली अमरता की कथा की शुरुआत भी यहीं से हुई थी। पीर पंजाल पर्वत श्रृंखला के कदमों में ही स्थित मंदिर के आसपास के पहाड़ सालभर बर्फ की सफेद चादर से ढँके रहते हैं जो हमेशा ही एक अद्भुत नजारा प्रस्तुत करते हैं। मंदिर के एक ओर लोरन दरिया भी बहता है जिसे 'पुलस्त्य दरिया' भी कहा जाता है और उसका पानी बर्फ से भी अधिक ठंडक लिए रहता है। सनद रहे कि पुंछ कस्बे का पहला नाम पुलस्त्य ही था। बर्फ से ढँके पहाड़, किनारे पर बहता शुद्ध जल का दरिया तथा चारों ओर से घिरे ऊँचे पर्वतों के कारण यह रमणीक स्थल हिल स्टेशन से कम नहीं माना जाता है। राजपुरा मंडी तक जाने के लिए चंडक से रास्ता जाता है जो जम्मू से 235 किमी की दूरी पर है तथा जम्मू-पुंछ राजमार्ग पर पुंछ कस्बे से 11 किमी पहले ही चंडक आता है। बुड्ढा अमरनाथ के दर्शनार्थ आने वाले किसी धर्म, मजहब, जाति या रंग का भेदभाव नहीं करते हैं। इसकी पुष्टि इससे भी होती है कि मुस्लिम बहुल क्षेत्र में स्थित इस मंदिर की रखवाली मुस्लिम ही करते हैं। सिर्फ राजौरी-पुंछ से ही नहीं, बल्कि

देशभर से लोग चकमक पत्थर के लिंग के रूप में विद्यमान भगवान शिव के दर्शनार्थ इस मंदिर में आते हैं। विभाजन से पहले यहाँ पाकिस्तान तथा पाक अधिकृत कश्मीर से आने वालों का ताँता भी लगा रहता था जो पुंछ कस्बे से मात्र तीन किमी की दूरी पर ही है। जिस प्रकार कश्मीर में स्थित अमरनाथ गुफा में श्रावण पूर्णिमा के दिन, जब रक्षाबंधन का त्योहार होता है, प्रत्येक वर्ष मेला लगता है ठीक उसी प्रकार इस पवित्र स्थल पर भी उसी दिन उसी प्रकार का एक विशाल मेला लगता है और अमरनाथ यात्रा की ही भाँति यहाँ भी यात्रा की शुरुआत होती है और उसी प्रकार 'छड़ी मुबारक' रवाना की जाती है। त्रयोदशी के दिन पुंछ कस्बे के दशनामी अखाड़े से इस धर्मस्थल के लिए छड़ी मुबारक की यात्रा आरंभ होती है। पुलिस की टुकड़ियाँ इस चाँदी की पवित्र छड़ी को, उसकी पूजा के उपरांत, इसका आदर सम्मान करती हैं और फिर अखाड़े के महंत द्वारा पुंछ से मंडी की ओर जुलूस के रूप में ले जाई जाती है। इस यात्रा में हजारों साधु तथा श्रद्धालु भी शामिल होते हैं जो भगवान शिव के लिंग के दर्शन करने की इच्छा लिए होते हैं। हालाँकि हजारों लोग पूर्णिमा से पहले भी सालभर लिंग के दर्शन करते रहते हैं।

ईश्वरीय विधान

एक बार कागज का एक टुकड़ा हवा के वेग से उड़ा और पर्वत के शिखर पर जा पहुँचा, पर्वत ने उसका आत्मीय स्वागत किया और कहा भाई यहाँ कैसे पधारे? कागज ने जवाब दिया अपने दम पर और जैसे ही कागज ने अकड़ में कहा अपने दम पर तभी हवा का एक दूसरा झोंका आया और कागज को उड़ा ले गया। अगले ही पल वह कागज नाली में जाकर गिरा और गल-सड़ गया। जो दशा एक कागज की है वही दशा हमारी भी है पुण्य की अनुकूल वायु का वेग आता है तो हमें शिखर पर पहुँचा देता है और पाप का झोंका आता है तो रसातल पर पहुँचा देता है।

किसका मान ? किसका गुमान ? जीवन की सच्चाई को समझो संसार के संयोग हमारे अधीन नहीं हैं, कर्म के अधीन हैं और कर्म कब कैसी करवट बदल ले कोई भरोसा नहीं इसलिए कर्मों के अधीन परिस्थितियों का कैसा गुमान।

बीज की यात्रा वृक्ष तक है.

नदी की यात्रा सागर तक है

और मनुष्य की यात्रा परमात्मा तक। संसार में जो कुछ भी हो रहा है वह सब ईश्वरीय विधान है। हम और आप तो केवल निमित्त मात्र हैं

स्वप्नशास्त्र, सपने में कुलदेवता-कुलदेवी को देखना

सपने में कुलदेवता-कुलदेवी को देखना शुभ या अशुभ दोनों सपने हो सकते है। अगर आपको अपने कुलदेवता या कुलदेवी से अच्छे संकेत मिलते है तब यह आपके के लिए शुभ सपना है। जैसे सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का आशीर्वाद मिलना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता की पूजा, आरती करना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता मूर्ति देखना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का दर्शन होना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का मंदिर देखना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का फूल अर्पित करना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता के दुवार प्रसाद देना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता नारियल चढ़ाना। इत्यादि सपने शुभ सपने होते है। पर वही आप सपने में देखते है ,सपने में कुलदेवी या कुलदेवता को गुस्सा में /क्रोध में ,सपने में कुलदेवी या कुलदेवता मूर्ति खंडित होना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता मंदिर का खंडित होना। सपने में कुलदेवी या कुलदेवता की मूर्ति में आग लगाना इत्यादि सपने अशुभ होते है। कुलदेवता या कुलदेवी ऐसे देवी-देवता होते है, जो हमारे पूर्वजो की परंपरा के अनुसार स्थापित किया गया था। पूर्वजो से हम उस देवी देवता की पूजा करते आते रहते है मान्यता को मानते आते रहते है, हम सब कुलदेवी या कुलदेवता को हमारे रक्षक, समृद्धि, खुशी, सौभाग्य, उन्नति, वंश की प्रगति के लिए पूजते रहते है और कुलदेवी कुल देवता की कृपा से हमें सुख शांति की प्राप्ति होती रहती है। पर वही कुलदेवी और कुलदेवता को सपने में देखना सकरात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के सपने हो सकते है। इस सपनो का मतलब विस्तार से जानते है।

1. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का आशीर्वाद मिलना- यह शुभ सपना माना जाता है। यह सपना किसी क्षेत्र में सफलता की निशानी है। आपका रुका हुआ कार्य पूरा हो जायेगा। आपकी कोई मनोकामना पूरी हो सकती है।

2. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता की पूजा, आरती करना- यह सपना शुभ माना जाता है। यह सपना आपकी प्रगति का सूचक है। आपके परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है ,कोई उत्सव हो सकता है। यह सपना समृद्धि और खुशी का संकेत देता है। शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है।

3. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता की मूर्ति देखना - सकारात्मक सपना है। अगर आप अच्छे अवस्थ में मूर्ति देखते है ,तो आपको कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है। जल्द आपका अच्छा समय आने वाला है। भविष्य आपका उज्जवल होगा। सफलता का संकेत है।

4. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता की खंडित मूर्ति देखते है / कुलदेवी या कुलदेवता की मूर्ति में आग लगाना देखते है - तो यह सपना आपके लिए अशुभ है ,किसी बीमारी का संकेत देता है, किसी क्षेत्र में हानि हो सकता है। जैसे परिवार में लड़ाई होना, असफ़लता, आर्थिक हानि, व्यापार में हानि, कार्य में अवरोध, परिवार में संतान को कष्ट, या संतान का न होना इत्यादि। उपाय - आपको अपनी परम्पर के अनुसार पूजा विधि करना चाहिए। कुलदेवी कुलदेवता का ताकि आपको उनका आशीर्वाद मिल सके और आपके के लिए लाभदायक हो सके।

5. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का दर्शन होना- यह सपना अत्यंत शुभ सपना माना गया है। आपका कोई कार्य जल्द सिद्धा होने वाला है। यह सपना आपके आध्यात्मिक उन्नति का संकेत देता है। यह सपना समृद्धि और सौभाग्य का सूचक है।

6. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का मंदिर देखना- अच्छे अवस्थ में मंदिर देखना शुभ सपना माना गया है। आप कीसी नये कार्य की शुरुआत का सकते है, आप के लिए शुभ समय है। समस्या का नाश होगा।

7. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता को फूल अर्पित करना- यह शुभ फल प्रदान करने वाला सपना माना गया है। कुलदेवी कुलदेता की कृपा आपको मिलेगी। समृद्धि, खुशी, उन्नति का सूचक है।

8. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता के दुवार प्रसाद देना/ सपने में कुलदेवी या कुलदेवता को नारियल चढ़ाना - दोनों सपने शुभ माने गए है। यह सफलता का सूचक माना जाता है। आपका जल्द मन सामान बढ़ेगा। यह सपना खुशी का संकेत प्रदान करता है। जीवन के समस्या का जल्द निदान होगा।

9. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता को गुस्सा में /क्रोध में देखना - यह सपना अशुभ माना जाता है ,यह सपना आपके नकरात्मक विचारो को प्रदर्शित करता है। अशुभ सामचार मिल सकता है। परिवार में कोई अशुभ घटना का संकेत करता है।

10. सपने में कुलदेवी या कुलदेवता का मंदिर खंडित होना - अशुभ सपना माना गया है। असंतोष का भाव प्रदर्शित करता है। आपके कार्य क्षेत्र में कोई हानि हो सकता है। असफलता का संकेत। यह सपना अचानक समस्या का उत्पन्न होना इत्यादि का संकेत देता है।

शिव पूजा की उपासना पद्धतियां

1. शिव पूजा उपासनांतर्गत पिंडी की पूजा
1. (अ) शिवपिंडी की परिक्रमा कैसे करें ?
1. (आ) शिवपिंडी की परिक्रमा करते समय अरघा के स्रोत को क्यों नही लांघते ?
1. (इ) पिंडी को स्नान कराना
1. (इ) शिवपिंडी पर हलदी-कुमकुम चढाने की अपेक्षा पिंडी को भस्म क्यों लगाएं ?
1. (उ) शिव पूजा में अन्य एक महत्त्वपूर्ण घटक है, श्वेत अक्षत
1. (ऊ) शिव पूजा में प्रयुक्त पुष्प
1. (ए) शिव पूजा में सबसे महत्त्वपूर्ण तथा शिवजीको प्रिय घटक है बिल्वपत्र
1. (ऐ) शिवपिंडी पर बिल्वपत्र चढाने की पद्धति तथा बिल्वपत्र तोडने के नियम
२. कालानुसार आवश्यक उपासना

*. शिव पूजा उपासनांतर्गत पिंडीकी पूजा

1 अ. शिवपिंडी की परिक्रमा कैसे करें ? शिवजी की परिक्रमा चंद्रकला के समान अर्थात सोमसूत्री होती है । सूत्र का अर्थ है, नाला। अरघा से उत्तर दिशा की ओर, अर्थात सोम की दिशा की ओर, जो सूत्र जाता है, उसे सोमसूत्र या जल प्रणालिका कहते हैं । परिक्रमा बाईं ओर से आरंभ कर जल प्रणालिका के दूसरे छोर तक जाते हैं । उसे न लांघते हुए मुडकर पुन: जल प्रणालिका तक आते हैं। ऐसा करने से एक परिक्रमा पूर्ण होती है। यह नियम केवल मानव स्थापित अथवा मानव निर्मित शिवलिंग के लिए ही लागू होता है; स्वयंभू लिंग या चल अर्थात पूजाघर में स्थापित लिंग के लिए नहीं ।

1 आ. शिवपिंडी की परिक्रमा करते समय अरघा के स्रोत को क्यों नही लांघते ? अरघा के जल प्रणालिका से शक्ति स्रोत प्रक्षेपित होता है । उसे लांघते समय पैर फैलने से वीर्य निर्मिति एवं पांच अंतस्थ वायु ओंपर विपरीत परिणाम होता है । इससे देवदत्त एवं धनंजय इन वायु के प्रवाह में रुकावट निर्माण हो जाती है तथा इस स्रोत से शिव की तम प्रधान लय कारी सगुण तरंगें पृथ्वी तथा तेज तत्वों के प्राबल्य के साथ प्रक्षेपित होती रहती है। परिणामस्वरूप व्यक्ति को अचानक मिरगी आना, मुंह में फेन अर्थात फ्रोत आना, देह में ऊष्णता निर्माण होकर देह का तप्त होना, हड्डियां टेढी होना, दांत बजना जैसे कष्ट होने की आशंका रहती है, इसलिए ऐसे शिवलिंग की अर्ध गोलाकृति पद्धति से परिक्रमा करते हैं । शिवजी की परिक्रमा पूरी करने के उपरांत कुछ शिवभक्त शिव उपासना में शिव महिम्न स्तोत्र, शिव कवच इनका पाठ विशेष रूप से करते है । पाठ करने के साथ ही शिवतत्व का अधिकाधिक लाभ पाने के लिए महाशिवरात्रि पर शिवजी के नाम का जप अधिकाधिक करें ।

1 इ. पिंडी को स्नान कराना

शिवजी की पिंडी को ठंडे जल, दूध एवं पंचामृत से स्नान कराते हैं । चौदहवीं शताब्दि से पूर्व शिवजी की पिंडी को केवल जल से स्नान करवाया जाता था; दूध एवं पंचामृत से नहीं। दूध एवं घी 'स्थिति' के प्रतीक हैं, इसलिए 'लय' के देवता शिवजी की पूजा में उनका उपयोग नहीं किया जाता था । चौदहवीं शताब्दि में दूध को शक्ति का प्रतीक मानकर प्रचलित पंचामृत, स्नान, दुग्ध स्नान इत्यादि अपनाए गए। किसी भी देवता पूजन में मूर्ति को स्नान कराने के उपरांत हलदी-कुमकुम चढाया जाता है । परंतु शिवजी की पिंडी की पूजा में हलदी एवं कुमकुम निषिद्ध माना गया है ।

1 ई. शिवपिंडी पर हलदी-कुमकुम चढाने की अपेक्षा पिंडी को भस्म क्यों लगाएं ? हल्दी मिट्टी में उगती है। यह उत्पत्तिका प्रतीक है । कुमकुम भी हल्दी से ही तैयार होता है, इसलिए वह भी उत्पत्तिका ही प्रतीक है। शिवजी 'लय' के देवता हैं, इसीलिए 'उत्पत्ति' के प्रतीक हल्दी-कुमकुम का प्रयोग शिव पूजन में नहीं किया जाता । शिव पिंडी पर भस्म लगाते हैं, क्योंकि वह लय का द्योतक है । पिंडी के दर्शनीय भाग से भस्म की तीन समांतर धारियां बनाते हैं। उन पर मध्य में एक वृत्त बनाते हैं, जिसे शिवाक्ष कहते हैं ।

1 उ. शिव पूजा में अन्य एक महत्त्वपूर्ण घटक है, श्वेत अक्षत श्वेत अक्षत वैराग्य के, अर्थात निष्काम साधना के द्योतक हैं । श्वेत अक्षत की ओर निर्गुण से संबंधित मूल उच्च देवताओं की तरंगें आकृष्ट होती हैं। शिवजी एक उच्च देवता हैं तथा वे अधिकाधिक निर्गुण से संबंधित है। इसलिए श्वेत अक्षत पिंडी के पूजन में प्रयुक्त होने से शिवतत्व का अधिक लाभ मिलता है ।

1 ऊ. शिव पूजा में प्रयुक्त पुष्प शिवजी को श्वेत रंग के पुष्प ही चढाएं उनमें रजनीगंधा, जाही, जुही एवं बेला के पुष्प अवश्य हों। ये पुष्प दस अथवा दस की गुना में हों तथा इन पुष्पों को चढाते समय उनका डंठल शिवजी की ओर रखकर चढाएं । पुष्पों में धतूरा, श्वेत कमल, श्वेत कनेर, आदी पुष्पों का चयन भी कर सकते हैं ।

1 ए. शिव पूजा में सबसे महत्त्वपूर्ण तथा शिव जी को प्रिय घटक है बिल्वपत्र अथर्ववेद, ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण, इन ग्रंथों में बिल्व वृक्ष का उल्लेख आता है, यह एक पवित्र यज्ञीय वृक्ष है। ऐसे पवित्र वृक्ष का पत्ता सामान्यत: त्रिदलीय होता है। यह त्रिदल बिल्वपत्र त्रिकाल, त्रिशक्ति तथा ओंकार की तीन मात्रा इनके निदर्शक हैं ।

1 ऐ. शिवपिंडी पर बिल्वपत्र चढाने की पद्धति तथा बिल्वपत्र तोडने के नियम बिल्व वृक्ष में देवता निवास करते हैं । इस कारण बिल्व वृक्ष के प्रति अतीव कृतज्ञता का भाव रखकर उससे मन ही मन प्रार्थना करने के उपरांत उससे बिल्वपत्र तोडना आरंभ करना चाहिए । शिव पिंडी की पूजा के समय बिल्वपत्र को औंधे रख एवं उसके डंठल को अपनी ओर कर पिंडी पर चढाते हैं । शिव पिंडी पर बिल्वपत्र को औंधे चढाने से उससे निर्गुण स्तर के स्पंदन अधिक प्रक्षेपित होते हैं । इसलिए बिल्वपत्र से श्रद्धालु को अधिक लाभ मिलता है । सोमवार का दिन, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी तथा अमावस्या, ये तिथियां एवं संक्रांतिका काल बिल्वपत्र तोडने के लिए निषिद्ध माना गया है। बिल्वपत्र शिवजी को बहुत प्रिय है, अत: निषिद्ध समय में पहले दिन का रखा बिल्वपत्र उन्हें चढा सकते हैं । बिल्वपत्र में देवता तत्त्व अत्यधिक मात्रा में विद्यमान होता है । वह कई दिनों तक बना रहता है ।

1 ऐ 1. बिल्वपत्र का सूक्ष्म-चित्र

अ. निर्गुण शिवतत्व बिल्वपत्र की ओर आकृष्ट होता है ।

आ. इससे बिल्वपत्र के हर एक पत्ते में त्रिगुणात्मकता की बहिर्गामी सर्प चक्राकार तरंगें कार्यरत होती हैं ।

इ. बिल्वपत्र से शक्ति के कार्यरत स्पंदन प्रक्षेपित होते हैं।

ई. साथ ही शांति के कणों का भी प्रक्षेपण होता है।

1 ऐ २. बिल्वपत्र का सूक्ष्म परिणाम बिल्वपत्र में सात्विकता की मात्रा अधिक होने के कारण सात्विक तरंगों को ग्रहण एवं प्रक्षेपित करने की उसकी क्षमता अधिक होती है । यह एक सूक्ष्म स्तर पर अर्थात आध्यात्मिक स्तर पर होनेवाली प्रक्रिया है। इसका परिणाम विविध प्रकार से होता है। इनमें से एक है, वातावरण में विद्यमान रज-तम प्रधान तत्वों का प्रभाव कम होना ।

अ. ब्रह्म मंडल में विद्यमान शिवस्वरूप चैतन्य की निर्गुण-सगुण तरंगें बिल्वपत्र मे आकृष्ट होती है ।

आ. बिल्वपत्र में शांति विद्यमान होती है ।

इ. बिल्वपत्र से धूसर रंग के निर्गुण शिवतत्त्व के वलयों का प्रक्षेपण होता है ।

ई. वातावरण में चैतन्य के वलयों का भी प्रक्षेपण होता है ।

उ. वातावरण में शक्ति के कणों का प्रक्षेपण होता है ।

२. कालानुसार आवश्यक उपासना आजकल विविध प्रकार से देवताओं का अनादर किया जाता है, इसके कुछ उदाहरण देखेंगे नाटकों एवं चित्रपटों में देवी-देवताओं की अवमानना करना, कला स्वतंत्रता के नाम पर देवताओं के नग्न चित्र बनाना, व्याख्यान, पुस्तक आदि के माध्यम से देवताओं पर टीका-टिप्पणी करना, व्यावसायिक विज्ञप्ति के लिए देवताओं का 'मौडल' के रूप में उपयोग किया जाना, उत्पादनों पर देवताओं के चित्र प्रकाशित करना तथा देवताओं की वेशभूषा पहनकर भीख मांगना इत्यादि अनेक प्रकार दिखाई देते है। यही सब प्रकार शिवजी के संदर्भ में भी होते है। देवताओं की उपासना का मूल है श्रद्धा। देवताओं के इस प्रकार के अनादर से श्रद्धा पर प्रभाव पडता है; तथा धर्म की हानि होती है । धर्म हानि रोकना कालानुसार आवश्यक धर्मपालन है। यह देवता की समष्टि अर्थात समाज के स्तर की उपासना ही है। इसके बिना देवता की उपासना परिपूर्ण हो ही नहीं सकती । इसलिए इन अपमानों को उद्बोधन द्वारा रोकने का प्रयास करे। जो भक्तों के अज्ञान को, अर्थात सत्त्व, रज तथा तम को एक साथ नष्ट कर उन्हें त्रिगुणातीत करते हैं।

दिल्ली में विकास की नई शुरुआत – मंत्री प्रवेश वर्मा की ऐतिहासिक पहल, 100 दिनों में दिखेगा बदलाव

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

नई दिल्ली – दिल्ली में वर्षों से लंबित विकास कार्यों को गति देने के लिए लोक निर्माण विभाग (PWD) मंत्री प्रवेश वर्मा ने ऐतिहासिक पहल की है। अब हर विधायक अपने क्षेत्र की समस्याओं को सीधे अधिकारियों के सामने रख रहे हैं, और संबंधित विभागों को तुरंत समाधान के निर्देश दिए जा रहे हैं। मंत्री प्रवेश वर्मा ने कहा, "पहले कार्य इसलिए नहीं हुए क्योंकि नीयत नहीं थी, लेकिन अब भाजपा सरकार युद्धस्तर पर काम करके दिल्लीवासियों को राहत देगी।"

PWD मंत्री वर्मा ने जोर देकर कहा कि इस पहल का असर अगले 100 दिनों में जमीनी स्तर पर नजर आएगा। इस बैठक में PWD, दिल्ली जल बोर्ड और सिंचाई एवं बाढ़ नियंत्रण विभाग के अधिकारी शामिल हुए। खास बात यह रही कि इसमें संबंधित क्षेत्रों के अधिकारी भी मौजूद थे, जिससे स्थानीय समस्याओं का समाधान तेजी से हो सकेगा।

बैठक में उठाए गए प्रमुख मुद्दे:

✓ सड़कों और नालों की मरम्मत

✓ सीवर सफाई और जल निकासी प्रबंधन

✓ जलभराव की समस्या का समाधान

✓ अवैध कब्जों पर कार्रवाई

✓ लंबित विकास परियोजनाओं में तेजी

मंत्री प्रवेश वर्मा का बयान:

"दिल्ली में वर्षों से कोई काम इसलिए नहीं हुआ क्योंकि सरकार की नीयत साफ नहीं थी। हालात इतने बिगड़ चुके हैं कि अब युद्धस्तर पर काम करने की जरूरत है। हम सड़कों की मरम्मत, सीवर की सफाई और जल निकासी व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए ठोस कदम उठा रहे हैं। हमारी प्राथमिकता विकास है और अगले 100 दिनों में जनता को जमीन पर बदलाव नजर आएगा। हम अधिक से अधिक क्षेत्रों की समस्याओं का समाधान करेंगे। भाजपा सरकार केवल वादे नहीं करती, बल्कि लोगों की सेवा के लिए काम करती है।"

इन विधानसभा क्षेत्रों की समस्याओं पर चर्चा हुई:

बैठक में त्रिलोकपुरी, पटपड़गंज, लक्ष्मी नगर (पूर्वी क्षेत्र), मुंडका, नांगलोई जाट, मोती नगर, माधिपुर (पश्चिमी क्षेत्र), मंगलापुरी, शकरपुर, किराड़ी (उत्तर-पश्चिम क्षेत्र) सहित अन्य विधानसभाओं की समस्याओं पर चर्चा हुई।

मंत्री प्रवेश वर्मा ने दोहराया कि भाजपा सरकार सिर्फ राजनीति के लिए नहीं, बल्कि दिल्ली के लोगों की सेवा के लिए काम कर रही है। यह पहल दिल्ली के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और जनता को त्वरित राहत प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

दक्षिणी दिल्ली में सीवर की सफाई करते समय तीन फंसे, एक की मौत और दो अस्पताल में भर्ती

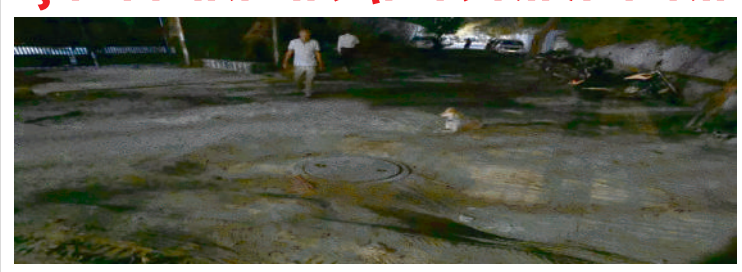

दक्षिण दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में सीवर की सफाई के दौरान एक कर्मचारी की मौत हो गई और दो घायल हो गए। घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने एक बयान में कहा कि रविवार शाम करीब 5.45 बजे दिल्ली जल बोर्ड के सीवर की सफाई करते समय पंथ लाल चंद्रा की मौत हो गई।

नई दिल्ली। दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी में सोमवार को एक दुखद घटना सामने आई है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि इलाके में सीवर की सफाई करते समय 43 वर्षीय एक कर्मचारी की मौत हो गई। दो अन्य घायल हो गए, जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

पंथ लाल चंद्रा की मौत

पुलिस ने एक बयान में कहा कि रविवार शाम करीब 5.45 बजे दिल्ली जल बोर्ड के सीवर की सफाई करते समय पंथ लाल चंद्रा की मौत हो गई। घायलों, रामकिशन चंद्रा और शिव दास, जिनकी उम्र 35 और 25 वर्ष है, दोनों का अस्पताल में इलाज चल रहा है।

फायर ब्रिगेड और स्थानीय पुलिस की टीमों ने तीनों को बेहोशी की हालत में मैनहोल से बाहर निकाला। अस्पताल में पंथ को मृत घोषित कर दिया गया।

पुलिस ने कहा कि बीएनएस की धारा 105 और मैनुअल स्कैवेंजिंग एक्ट की धारा 7 और 9 के तहत मामला दर्ज किया गया है। घटना पर डीजेबी की ओर से तत्काल कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली।

जंतर मंतर पर ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की बैठक

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। जंतर मंतरः ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के तहत आज आयोजित विरोध प्रदर्शन को संबोधित करते हुए जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद असअद मदनी ने वक्फ़ एक्ट में किए जा रहे संशोधन को देश के संविधान और उसके बुनियादी ढांचे पर एक गंभीर हमला करार दिया। उन्होंने कहा कि यह उस रूपरेखा को विकृत करने का प्रयास है, जिसे हमारे संविधान निर्माताओं ने एक आधुनिक और लोकतांत्रिक भारत के लिए तैयार किया था। आज हमारे घरों, मस्जिदों और मदरसों पर बुलडोज़र चलाया जा रहा है और अब संविधान पर भी बुलडोज़र चलाने की कोशिश की जा रही है।

मौलाना मदनी ने कहा कि कुछ लोग इसे केवल मुसलमानों का मुद्दा बना रहे हैं, जबकि हकीकत यह है कि यह पूरे देश का मसला है। हमें इस साजिश का हर हाल में विरोध करना है, क्योंकि यह लड़ाई किसी एक वर्ग की नहीं, बल्कि हर उस नागरिक की है जो संविधान और लोकतंत्र में विश्वास रखता है।

उन्होंने आगे कहा कि यह देश बहुसंख्यकों में अल्पसंख्यकों का है, और हमें सिर्फ अपने साथ ही नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति को जोड़ना होगा जो इस देश के लोकतांत्रिक और संवैधानिक ढांचे में विश्वास रखता है। अगर हम सभी मिलकर, सभी चिंतित नागरिकों को साथ लेकर इस आंदोलन को आगे बढ़ाएंगे, तो सफलता निश्चित होगी।

मौलाना मदनी ने इस मौके पर कहा कि हर बड़ी लड़ाई कुर्बानी मांगती है। अगर हम यह उम्मीद करें कि यह लड़ाई आराम से बैठे-बैठे जीत ली जाएगी, तो यह हमारी भूल होगी। हमें कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना होगा, अपनी आवाज़ को और मजबूत बनाना होगा और अपनी कतारों में एकता पैदा करनी होगी।

अंत में, उन्होंने एक शेर कहकर अपनी बात पूरी कीः

थोड़ी तकलीफ-ए-रसन, फिर थोड़ी सी तकलीफ-ए-दार

उसके बाद ऐ दोस्तों, आराम ही आराम है

'इंडिया' शब्द को बदलकर भारत या हिंदुस्तान करने पर जल्द करें फैसला', दिल्ली हाईकोर्ट ने दिए केंद्र को निर्देश

दिल्ली हाई कोर्ट ने केंद्र सरकार को इंडिया शब्द को भारत या हिंदुस्तान से बदलने पर शीघ्र निर्णय लेने का निर्देश दिया है। याचिकाकर्ता नमहा ने पहले सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी जिस पर शीर्ष अदालत ने 2020 में इसे प्रतिवेदन के रूप में संबंधित मंत्रालयों को विचार के लिए भेजा था। अब कोर्ट ने मंत्रालय को जल्द निर्णय लेकर याचिकाकर्ता को सूचित करने का निर्देश दिया।

नई दिल्ली। केंद्र से संविधान में संशोधन करने और 'इंडिया' शब्द को भारत या हिंदुस्तान से बदलने के लिए एक प्रतिवेदन पर विचार करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश का शीघ्रता से पालन करने का दिल्ली हाई कोर्ट ने निर्देश दिया है। इसमें कहा गया कि केंद्र के वकील को सुप्रीम कोर्ट द्वारा पारित आदेश के शीघ्र अनुपालन के लिए संबंधित मंत्रालयों को उचित रूप से अवगत कराना चाहिए।

न्यायमूर्ति सचिन दत्ता की पीठ ने उक्त निर्देश के साथ याचिकाकर्ता को याचिका वापस लेने की अनुमति दे दी। याचिकाकर्ता नमहा ने शुरू में सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी और इस पर शीर्ष अदालत ने वर्ष 2020 में निर्देश दिया था कि याचिका को एक प्रतिवेदन के रूप में लेकर उपयुक्त मंत्रालयों द्वारा विचार किया जा सकता है।

मंत्रालय को जल्द से जल्द निर्णय लेने के निर्देश

इसके बाद याचिकाकर्ता नमहा ने वरिष्ठ अधिवक्ता संजीव सागर के माध्यम से हाई कोर्ट में याचिका दायर कर प्राधिकारियों को उनके आवेदन पर निर्णय करने का निर्देश देने का अनुरोध किया। इस पर पीठ ने मंत्रालय को जल्द से जल्द निर्णय लेकर याची को सूचित करने का निर्देश दिया।

SC के फैसले पर केंद्र की तरफ से कोई अपडेट नहीं: याचिकाकर्ता

याचिकाकर्ता ने शुरू में सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जिसने 2020 में निर्देश दिया था कि याचिका को एक अभ्यावेदन के रूप में माना जाए जिस पर उपयुक्त मंत्रालयों द्वारा विचार किया जा सकता है। याचिका में कहा गया, ₹याचिकाकर्ता के पास वर्तमान याचिका के माध्यम से इस अदालत का दरवाजा खटखटाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा है क्योंकि याचिकाकर्ता के आवेदन पर लिए गए किसी भी निर्णय के बारे में केंद्र की ओर से कोई अपडेट नहीं है।₹

'इंडिया' देश की संस्कृति-परंपरा का प्रतिनिधित्व नहीं करता: याचिकाकर्ता

याचिका में कहा गया है कि अंग्रेजी नाम 'इंडिया' देश की संस्कृति और परंपरा का प्रतिनिधित्व नहीं करता है और इसका नाम बदलकर 'भारत' करने से नागरिकों को औपनिवेशिक बोझ से छुटकारा पाने में मदद मिलेगी। इसलिए याचिका में संविधान के अनुच्छेद 1 में संशोधन की मांग की गई है, जो संघ के नाम और क्षेत्र से संबंधित है।

1948 में भी भारत या हिंदुस्तान करने की थी मजबूत लहर: याचिकाकर्ता

याचिका में कहा गया है कि तत्कालीन मसौदा संविधान के अनुच्छेद 1 पर 1948 की संविधान सभा की बहस का हवाला देते हुए याचिका में कहा गया है कि उस समय भी देश का नाम 'भारत' या 'हिंदुस्तान' रखने के पक्ष में मजबूत लहर थी। हालांकि, अब समय आ गया है कि देश को उसके मूल और प्रामाणिक नाम यानी भारत से पहचाना जाए, खासकर तब जब हमारे शहरों का नाम बदलकर भारतीय लोकाचार के साथ पहचान की जा रही है।"

क्या महिला किसानों तक पहुँच रही है तकनीक?

भारत की कृषि-खाद्य प्रणालियाँ, जिनमें कृषि, पशुधन, कृषि वानिकी और मत्स्य पालन शामिल हैं, महिलाओं के भुगतान और अवैतनिक श्रम दोनों पर बहुत अधिक निर्भर हैं। महिलाएँ भारतीय कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, खाद्य उत्पादन, पशुधन प्रबंधन और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को समर्थन देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पूर्णकालिक ग्रामीण कार्यबल का लगभग 75% हिस्सा महिलाओं का है और वे कृषकों का 33% हिस्सा हैं। उनकी भागीदारी बुवाई, निराई, कटाई, कटाई के बाद प्रसंस्करण, डेयरी फार्मिंग और पशुधन देखभाल जैसी विभिन्न गतिविधियों में फैली हुई है। उनके आवश्यक योगदान के बावजूद, भूमि स्वामित्व एक चुनौती बनी हुई है, जिसमें केवल 12-13% महिला किसानों के पास भूमि का स्वामित्व है। हालाँकि, डिजिटल तकनीकों और छोटी पहलों में प्रगति कृषि में लैंगिक अंतर को कम करने में मदद कर रही है, महिलाओं को अधिक स्वतंत्र, आर्थिक रूप से स्थिर और निर्णय लेने में प्रभावशाली बनने के लिए सशक्त बना रही है। उनके प्रभाव को और बढ़ाने के लिए, डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना, स्मार्टफोन तक पहुँच में सुधार करना और नीति समर्थन प्रदान करना महत्त्वपूर्ण होगा।

प्रियंका सौरभ

डिजिटल तकनीक और छोटे-मोटे हस्तक्षेपों ने भारतीय कृषि में महिलाओं के लिए परिदृश्य को काफ़ी हद तक बदल दिया है। इन नवाचारों ने महिला किसानों को भूमि स्वामित्व, बाज़ार तक पहुँच, वित्तीय समावेशन और ज्ञान के आदान-प्रदान से सम्बंधित पारंपरिक बाधाओं को तोड़ने में सक्षम बनाया है। डिजिटल उपकरण कृषि में महिलाओं को सशक्त बना रहे हैं। एप्लिकेशन और हेल्पलाइन वास्तविक समय के मौसम पूर्वानुमान, इष्टतम कृषि तकनीक और वर्तमान बाज़ार मूल्य प्रदान करते हैं। किसान सुविधा, पूसा कृषि और इफको किसान ऐप जैसे संसाधन महिला किसानों को अच्छी तरह से सूचित विकल्प बनाने में सहायता करते हैं। व्हाट्सएप ग्रुप और यूट्यूब ट्यूटोरियल सहकर्मी सीखने और ज्ञान के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करते हैं। यूपीआई, डिजिटल वॉलेट और ऑनलाइन बैंकिंग सहित डिजिटल भुगतान प्रणाली महिलाओं को सीधे ऋण और सब्सिडी सुरक्षित करने में सक्षम बनाती है। किसान क्रेडिट कार्ड और डिजिटल माइक्रोफाइनेंस प्लेटफ़ॉर्म, जैसे कि पेटीएम और नाबार्ड के ई-शक्ति, महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। ई-एनएएम (राष्ट्रीय कृषि बाजार) और एग्रीबाज़ार जैसे प्लेटफ़ॉर्म महिला किसानों को अपने उत्पाद सीधे उपभोक्ताओं को बेचने की अनुमति देते हैं, जिससे बिचौलियों की ज़रूरत नहीं पड़ती।

-प्रियंका सौरभ, रिसर्च स्कॉलर इन पॉलिटिकल साइंस, हरियाणा

महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियाँ अपने जैविक कृषि उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए फ़ेसबुक और इंस्टाग्राम का उपयोग कर रही हैं। एआई तकनीकें मिट्टी के स्वास्थ्य, कीटों का पता लगाने और सटीक खेती की तकनीकों के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करती हैं। उन्नत सिंचाई प्रणाली और सौर ऊर्जा से चलने वाले पंप पानी के उपयोग को कम करने और महिला किसानों के शारीरिक कार्यभार को कम करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं। स्वयं सहायता समूहों के सदस्यों को समूह ऋण, प्रशिक्षण और कृषि संसाधनों तक पहुँच से लाभ होता है। तेलंगाना में डेक्कन डेवलपमेंट सोसाइटी इन महिलाओं के नेतृत्व वाली सहकारी समितियों के माध्यम से बाजरा की खेती का समर्थन करती है। महिलाओं पर बोझ कम करने में मदद करने के लिए बीज बोने वाले, हाथ से चलने वाले ट्रैक्टर और सोलर ड्रायर जैसे सरल कृषि उपकरण उपलब्ध हैं। सरकारी पहल मशीनीकृत उपकरणों के लिए सब्सिडी प्रदान करती है, जो महिलाओं के लिए फायदेमंद है। महिला किसान सशक्तिकरण परियोजना जैसे एनजीओ और सरकारी कार्यक्रम आवश्यक कौशल प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। डिजिटल साक्षरता पहल महिला किसानों को नए तकनीकी समाधानों को अपनाने के लिए सशक्त बनाती है। महिलाएँ जैविक खेती, पर्माकल्चर और जलवायु-स्मार्ट कृषि पद्धतियों में तेज़ी से शामिल हो रही हैं। वर्मीकम्पोस्टिंग पिट, छत पर बगीचे और कृषि वानिकी जैसे छोटे पैमाने के हस्तक्षेप स्थायी आय में योगदान करते हैं। टाटा ट्रस्ट्स द्वारा लखपति किसान पहल ने झारखंड में आदिवासी महिलाओं को कृषि प्रौद्योगिकी और ई-कॉमर्स में प्रशिक्षित किया है। डिजिटल ग्रीन पहल ग्रामीण महिलाओं को बेहतर खेती के तरीकों के बारे में शिक्षित करने के लिए वीडियो का उपयोग करती है। वाग्धारा जैसे किसान उत्पादन संगठन (एफपीओ) महिलाओं को सामूहिक रूप से बेहतर कीमतों पर बातचीत करने में सहायता करते हैं।

आज की दुनिया में, डिजिटल तकनीक और छोटे-छोटे हस्तक्षेप कृषि में महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। परंपरागत रूप से, महिलाओं को निराई, थ्रेसिंग और डी-हल्किंग जैसे श्रम-गहन और समय लेने वाले काम सौंपे जाते रहे हैं। हालाँकि, मशीनीकरण उनके कार्यभार को हल्का करने में मदद करता है, जिससे उन्हें अधिक मूल्यवान कृषि गतिविधियों में संलग्न होने की अनुमति मिलती है। मोबाइल ऐप, हेल्पलाइन और सलाहकार सेवाओं सहित डिजिटल उपकरण महिलाओं को अप-टू-डेट बाज़ार और मौसम की जानकारी प्रदान करते हैं, जो बेहतर फ़सल योजना और संसाधन प्रबंधन में सहायता करता है। कई महिलाओं को ऋण और वित्तीय संसाधनों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो आधुनिक कृषि तकनीकों में निवेश करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है। सौभाग्य से, डिजिटल भुगतान प्रणाली और ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म मछली विक्रेताओं और किसानों जैसी महिलाओं को स्वतंत्र रूप से लेन-देन करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे बिचौलियों पर उनकी निर्भरता कम होती है। महिलाओं को कृषि मशीनरी चलाने के कौशल से लैस करके, ये छोटे-छोटे हस्तक्षेप जड़ जमाए हुए लैंगिक पूर्वाग्रहों को चुनौती देते हैं और महिलाओं को खेती में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाते हैं। सूचना और प्रौद्योगिकी तक पहुँच महिलाओं की पारंपरिक बाधाओं को दूर करने और अपनी स्वतंत्रता का दावा करने की क्षमता को बढ़ाती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएँ डिजिटल साक्षरता से जूझती हैं, जो मोबाइल एप्लिकेशन और ऑनलाइन सेवाओं का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की उनकी क्षमता में बाधा डालती है। स्मार्टफ़ोन तक सीमित पहुँच और अविश्वसनीय इंटरनेट कनेक्शन से स्थिति और भी खराब हो गई है। सामाजिक मानदंड निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में महिलाओं की भागीदारी को प्रतिबंधित करना जारी रखते हैं। घरेलू स्तर पर निवेश अक्सर उन तकनीकों पर केंद्रित होता है जो मुख्य रूप से पुरुषों को लाभ पहुँचाती हैं, महिलाओं की अनूठी ज़रूरतों की उपेक्षा करती हैं। इसके अतिरिक्त, सरकारी नीतियाँ और कृषि विस्तार सेवाएँ अक्सर लिंग-विशिष्ट मुद्दों को अनदेखा करती हैं। केवल 13% ग्रामीण महिलाओं के पास ज़मीन है, इसलिए ऋण और कृषि कार्यक्रमों तक उनकी पहुँच बहुत सीमित है। कृषि और मत्स्य पालन में मशीनीकरण के बढ़ने से महिलाओं की नौकरियाँ चली गई हैं, जिससे उन्हें अधिक अस्थिर और अनौपचारिक रोज़गार में जाना पड़ रहा है। मछली बाज़ारों में बड़े खरीदारों और निर्यात व्यापारियों के बढ़ते प्रभुत्व ने छोटे पैमाने की महिला विक्रेताओं को हाशिये पर धकेल दिया है, जिससे मछली की आपूर्ति और उचित मूल्य तक उनकी पहुँच सीमित हो गई है। हालाँकि मोबाइल एप्लिकेशन, ऑनलाइन मार्केटप्लेस और डिजिटल भुगतान प्रणाली नए अवसर प्रदान करती हैं, फिर भी कई ग्रामीण महिलाओं को स्मार्टफ़ोन, इंटरनेट एक्सेस और डिजिटल कौशल की कमी के कारण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। रिपोर्ट से पता चला है कि भारत में सिर्फ़ 31% ग्रामीण महिलाओं के पास स्मार्टफ़ोन हैं, जबकि पुरुषों के लिए यह आँकड़ा 51% है। इस अंतर को पाटने के लिए, सरकार की पहल महिला किसानों के लिए स्मार्टफ़ोन के लिए सब्सिडी दे सकती है।

इसके अतिरिक्त, स्वयं सहायता समूहों में डिजिटल साक्षरता प्रशिक्षण को शामिल करना महत्त्वपूर्ण है। आपको क्या लगता है कि महिलाओं की तकनीक तक पहुँच को सीमित करने में किसका ज़्यादा प्रभाव पड़ता है: वित्तीय बाधाएँ या सामाजिक मानदंड? सोलर पंप, डिजिटल भुगतान प्रणाली और माइक्रोलोन जैसे छोटे पैमाने के समाधान तत्काल, उल्लेखनीय सुधार ला सकते हैं। दूसरी ओर, भूमि अधिकार और कृषि तकनीक को अपनाने जैसे व्यापक सुधारों के लिए नीतिगत बदलावों की आवश्यकता होगी और इसमें अधिक समय लगेगा। ओडिशा में, ₹मिशन शक्ति₹ पहल ने हज़ारों महिलाओं को वित्तीय साक्षरता और डिजिटल लेन-देन में सफलतापूर्वक शिक्षित किया है। हालाँकि, ई-एनएएम प्लेटफ़ॉर्म, जो भारत का डिजिटल कृषि बाज़ार है, अभी भी भूमि स्वामित्व चुनौतियों के कारण कम महिला भागीदारी से जूझ रहा है। आपको कौन-सी रणनीति महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए अधिक प्रभावी लगती है: लक्षित, छोटे पैमाने के हस्तक्षेप या व्यापक प्रणालीगत सुधार? महिलाओं के नेतृत्व वाली कई एग्रीटेक स्टार्टअप इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण प्रगति कर रही हैं। उदाहरण के लिए, अपूर्वा बी. के. द्वारा स्थापित कमल किसान छोटे पैमाने के किसानों के लिए किफायती कृषि उपकरण प्रदान करता है, जबकि फ़ार्मिज़ेन जैविक फ़ार्म-टू-टेबल मॉडल के माध्यम से महिला किसानों को सीधे शहरी उपभोक्ताओं से जोड़ता है। क्या सरकार को महिलाओं के नेतृत्व वाली एग्रीटेक उपक्रमों के लिए समर्पित निधि प्रदान करने पर विचार करना चाहिए?

एक सहयोगी दृष्टिकोण जो सरकारी नीतियों, सामुदायिक पहलों और निजी क्षेत्र के नवाचारों को जोड़ता है, यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि भारत में महिला किसानों के पास प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच हो।

27 में टिकट के लिए शुरू जंग, नवीन पंडित ने रैली निकाल दिखाई किदवई नगर में ताकत

सुनील बाजपेई

कानपुर। 2027 में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए टिकट की मंशा से शक्ति प्रदर्शन की शुरुआत कर दी गई है। जिसमें एक नाम पार्षद दल के नेता नवीन पंडित का है । उन्होंने यहां केमिकल के खिलाफ विशाल जन जागरूकता रैली के रूप में जन समर्थन के माध्यम से किदवई नगर विधानसभा क्षेत्र टिकट के लिए अपनी ताकत दिखाई।

पार्षद दल के नेता नवीन पंडित की अगुवाई में यह रैली गोविन्द नगर के रामलीला मैदान से शुरू की गई ,जिसमें सबसे आगे लाउडस्पीकर से केमिकल प्रयोग के खिलाफ संदेश देते हुए वाहन चल रहा था। इसके पीछे हाथो में जन जागरुकता के पोस्टर थामे व नारे लगाते सैकडों दुपहिया वाहन चल रहे थे । इनके पीछे 40-50 कारो का काफिला था। रैली का जगह जगह पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया गया।

यह रैली गोविन्द नगर रामलीला मैदान से चावला मार्केट चौराहा, जूही डिपो, बारादेवी, किदवई नगर चौराहा, गौशाला, दीप टाकीज तिराहा, सचान चौराहा होते हुए बरां के दरोगा आटा चक्की चौराहा पर समाप्त हुई।

यह भी अवगत कराते चलें कि विभिन्न क्षेत्र बदलकर पार्षद का चुनाव लगातार पांचवीं बार जीतने वाले ,1991 में राम जन्मभूमि आन्दोलन में फतेहगढ़ जेल में 11 महीने और 1993 में पुनः कानपुर कारागार में 09 महीने बन्द रह चुके पार्षद दल के नेता नवीन पंडित पार्टी और जनता के हित में किए गए अनगिनत कार्यों और आंदोलनों को लेकर चर्चा में रह चुके हैं। यही नहीं स्व० भारत रत्न अटल बिहारी बाजपेयी , लाल कृष्ण आडवाणी, कलराज मिश्र, राजनाथ सिंह, स्व.राजेन्द्र गुप्त, विनय कटियार, उमाभारती, डा .दिनेश शर्मा जैसे नेताओं ने राम जन्मभूमि आंदोलन में रासुका में बंद रहने के दौरान नवीन पंडित से जेल में मुलाकात कर उनकी हौसला आफजाई भी की थी। इसी के साथ नवीन पंडित प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कानपुर लोकसभा क्षेत्र में मतदाताओं के संदर्भ में चलाये गये नमो एप में भी सभी को पछाड़ते हुए सर्वाधिक 10 लाख अंक हासिल करके भी कानपुर में अपनी लोकप्रियता साबित कर चुके हैं।

इस रैली में प्रमुख रूप प्रकाश वीर आर्य, पार्षद अनिल यादव, बल्देवराज मल्होत्रा, राजिन्दर सिंह जिंदी, संतोष सिंह चंदेल, जसपाल भगत, वैभव पाहवा, राजेश सेठी, विवेक मिश्रा, सुनील महाजन, अवध बिहारी अवस्थी, अनुभव मिश्रा, हरबंस लाल चुग, शम्मी भल्ला, समीर मंडल, मोहित शर्मा, राजेश श्रीवास्तव आदि शामिल रहे।

पत्रकारों की सुरक्षा पर अब मोदी और योगी सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए : जिलाध्यक्ष विष्णु सिकरवार

- "उन्होंने मुख्यमंत्री से मांग की है कि राज्य में पत्रकार सुरक्षा कानून बनाकर उसे सख्ती के साथ लागू किया जाए साथ ही, उत्पीड़न की घटनाओं पर रोक लगाई जाएं"
- "अगर पत्रकार डर गया और उसकी आवाज दबाई गई, उसकी हत्या की गई, तो भ्रष्टाचार की जड़ें और गहरी होंगी साथ ही, समाज में गुंडों, बदमाशों, माफियाओं और भ्रष्टाचारियों की ताकत और बढ़ेगी"

आगरा, संजय साग़र सिंह। सीतापुर में 8 मार्च को हुई पत्रकार राघवेंद्र वाजपेयी की हत्या के मामले पर चर्चा करते हुए, ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन जिला इकाई आगरा के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार सहित सम्मानित वरिष्ठ एवं कनिष्ठ पत्रकारों ने योगी सरकार से मांग की है कि राज्य में पत्रकार सुरक्षा कानून बनाया जाए और उसे सख्ती से लागू किया जाए। उन्होंने पत्रकार उत्पीड़न की घटनाओं पर रोक लगाने की आवश्यकता भी व्यक्त की।

ग्रामीण पत्रकार एसोसिएशन जिला इकाई आगरा के जिलाध्यक्ष पत्रकार विष्णु सिकरवार ने आगे कहा, "अगर पत्रकार डर गया और उसकी आवाज दबाई गई, उसकी हत्या की गयी तो उत्तर प्रदेश में भ्रष्टाचार की जड़ें और गहरी होंगी। समाज में गुंडों, बदमाशों, माफियाओं और भ्रष्टाचारियों की ताकत और बढ़ेगी।₹ उन्होंने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से अपील की कि राज्य में पत्रकार सुरक्षा कानून लागू किया जाए। इसके साथ ही, पत्रकार उत्पीड़न की घटनाओं पर रोक लगनी चाहिए और पत्रकारों से जुड़े मामलों की सुनवाई फास्ट ट्रैक कोर्ट में की जाए। उन्होंने सीतापुर के पत्रकार राघवेंद्र वाजपेयी की विधवा पत्नी को आर्थिक सहायता प्रदान करने की भी मांग की और दोषियों को कड़ी सजा, विशेष रूप से मृत्यु दंड देने की अपील की।

श्री सिकरवार ने कहा, "अगर उत्तर प्रदेश की योगी सरकार हर स्तर पर सफल है, लेकिन पत्रकारों की जिंदगी की सुरक्षा में चूक जाती है, तो यह चिंताजनक है। अब योगी जी को पत्रकारों की सुरक्षा पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।"

उन्होंने यह भी कहा, "कई राज्यों में पत्रकार सुरक्षा कानून बनाया गया है, लेकिन उत्तर प्रदेश में इस तरह का कानून नहीं बन पाया है। पत्रकारों के मामलों में त्वरित कार्रवाई का कोई उदाहरण नहीं मिलता। ऐसे में पत्रकारिता के माध्यम से आजीविका चलाना कठिन होता जा रहा है। सत्ता पक्ष की असहिष्णुता तो समझी जा सकती है, लेकिन यह बहुत दुखद है कि पत्रकारिता से जुड़े अधिकतर संस्थान भी अपने संवाददाता की सुरक्षा की गारंटी नहीं देते। यह बहुत चिंताजनक है।₹

अंत में उन्होंने कहा, ₹एक रिपोर्ट के अनुसार, 2017 से 2022 के बीच उत्तर प्रदेश में 12 से अधिक पत्रकारों की हत्या हुई है। इस दौरान 138 से अधिक पत्रकारों पर हमले हुए हैं। पिछले साल अक्टूबर 2024 में फतेहपुर में पत्रकार दिलीप सैनी की हत्या कर दी गई थी। 2020 में 7 पत्रकारों की हत्या की गई थी, जिनमें राकेश सिंह, सूरज पांडेय, उदय पासवान, रतन सिंह, विक्रम जोशी, फराज असलम और शुभम मणि त्रिपाठी शामिल थे। अब 8 मार्च को सीतापुर जिले के युवा पत्रकार राघवेंद्र वाजपेयी की दिनदहाड़े गोली मारकर हत्या कर दी गई। उनके परिवार में बूढ़े मां-बाप, पत्नी और दो छोटे बच्चे हैं। इस घटना से पूरे देश के पत्रकारों में भारी रोष है। उत्तर प्रदेश के कई जिलों में पत्रकारों ने प्रदर्शन किया और विरोध दर्ज कराया है, लेकिन एक सप्ताह बाद भी अपराधी पुलिस की पकड़ से दूर हैं। अब हर तरफ से एक ही सवाल उठ रहा है- आखिर पत्रकार ईमानदारी की कीमत कब तक चुकाते रहेंगे?"

अपनी नहीं, अपनों की सलामती के लिए धीमे चलें

हर सुबह जब हम अखबार खोलते हैं, तो एक जैसी दिल दहला देने वाली सुर्खियाँ हमारी आंखों के सामने से गुजरती हैं—"तेज़ रफ्तार कार ने फुटपाथ पर सो रहे लोगों को कुचला", "बेकाबू बाइक ट्रक से भिड़ी, युवक ने मौके पर दम तोड़ा", "ओवरस्पीडिंग का कहर—सड़क हादसे में पूरा परिवार छिन गया" ये खबरें पढ़ते ही मन सिहर उठता है, दिल एक पल को ठहर जाता है। फिर हम चाय की चुस्की लेते हैं, और रोज़मर्रा की आपाधापी में फिर से गुम हो जाते हैं। मगर क्या कभी ठहरकर सोचा कि जिनके घरों में ये खबरें मातम की सूरत में दाखिल होती हैं, उनकी दुनिया उसी पल वीरान हो जाती है? उनकी हँसी, उनके सपने, उनके अपने—सब कुछ एक लापरवाह रफ्तार की भेंट चढ़ जाते हैं। और जो बिछड़ गए, वे सरकारी कागज़ों में बस एक आँकड़ा बनकर सिमट जाते हैं।

हमारी सड़कों पर गाड़ियाँ नहीं, बल्कि अहंकार की रेस चल रही है। कोई 100-120 की रफ्तार से कार को हवा में दौड़ा रहा है, तो कोई बाइक को आसमान छूने की ज़िद में जान जोखिम में डाल रहा है। सड़कें अब सड़कें नहीं, स्टंट का मैदान बन चुकी हैं, जहाँ हर शख्स खुद को हीरो साबित करने की जंग लड़ रहा है। ट्रैफिक सिग्नल? वो तो बस सड़क का मूक सजावटी सामान बनकर रह गया है। हॉर्न की ज़रूरत किसे? मगर एक्सीलेटर को दबाकर गाड़ी को रॉकेट में बदलने का जुनून हर गली-नुक्कड़ पर नज़र आता है। कोई इन बेकाबू सनकबाज़ों को बताए कि सड़कें कोई फिल्मी सेट नहीं, जहाँ स्टंटबाज़ी की तालियाँ बटोरी जाएँ। ज़िंदगी कोई वीडियो गेम भी नहीं, जहाँ क्रैश होने पर 'रिस्टार्ट' का बटन दब जाए। जो एक बार चला गया, वह लौटकर नहीं आता—न चेहरा, न मुस्कान, न उम्मीद।

मगर यह सच्चाई शायद उन अहंकारी सड़क के 'शहंशाहों' को समझ नहीं आती, जो अपनी सनक में दूसरों की साँसों को कुचलने का हक़ समझ बैठते हैं।

तेज़ गाड़ी चलाने वाले खुद को 'फास्ट एंड फ्यूरियस' का सुपरस्टार समझते हैं, मगर हकीकत में वे अपनी नादानी और लापरवाही का तमाशा बनाते हैं। स्पीड ब्रेकर उनके लिए रुकने की चेतावनी नहीं, बल्कि एक्सीलेटर दबाकर उछाल मारने का मौका है। लाल बत्ती? उसे पार करना तो उनकी 'शान' की बात है, मानो हर सिग्नल उनकी बहादुरी का इम्तिहान ले रहा हो। हेलमेट और सीट बेल्ट? ये तो बस चालान से बचने का जुगाड़ हैं, जान की परवाह किसे! मगर क्या कभी इस 'रफ्तार के रोमांच' की कीमत पर गौर किया? एक पल की सनक में टूटते परिवार के अरमान, माँ की गोद में पड़ी बेटे की ठंडी लाश, बहन के हाथों में भाई की बुझी चिता की राख, या एक बच्चे की आँखों में पिता की याद बनकर सिमटा अनाथापन। क्या यही है उनकी बहादुरी का सबूत?

सरकार हर साल सड़क सुरक्षा के ढोल पीटती है। सड़कों पर चमचमाते होर्डिंग्स चिल्लाते हैं—"सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा", "स्पीड ब्रेकर आपकी जान बचाने के लिए हैं", "गति को काबू करो, वरना ज़िंदगी हाथ से छूट जाएगी" मगर ये नारे कागज़ों और बोर्डों तक ही सिमटकर रह जाते हैं। सड़क पर खड़ा ट्रैफिक पुलिसकर्मी हेलमेट या सीट बेल्ट न पहनने वालों को तो पकड़ लेता है, पर ओवरस्पीडिंग के शहंशाहों के आगे उसकी हिम्मत भी जवाब दे जाती है। कभी सुना है कि किसी रफ्तारबाज़ को सिर्फ तेज़ गाड़ी चलाने की सख्त सजा मिली हो? चालान काटा, जेब से कुछ नोट निकाले, और फिर वही रफ्तार का खेल शुरू। टीवी पर हादसे की खबर आती है, लोग दो मिनट अफसोस जताते हैं, और फिर मोबाइल स्क्रॉल करके अगला टाइमपास ढूंढ लेते हैं। सड़क पर पड़ा घायल इंसान मदद की गुहार लगाए, मगर लोग उसे बचाने की बजाय कैमरे निकालकर वीडियो बनाते हैं—सोशल मीडिया पर लाइक्स जो बटोरने हैं। यह कैसी बेरहम बेपरवाही है, जहाँ इंसानियत भी रफ्तार की बलि चढ़ गई?

यह सवाल सिर्फ आपकी साँसों का नहीं, बल्कि उन बेकसूर ज़िंदगियों का है, जो सड़क पर हर कदम के साथ घर लौटने का भरोसा लिए चलते हैं। उन नन्हे बच्चों का, जो खिड़की से पिता की राह निहारते हैं, उन माँओं का, जो हर दुआ में बेटे की सलामती माँगती हैं। मगर एक पल की सनकी रफ्तार उनकी दुनिया को तहस-नहस कर देती है—हँसी चीखों में बदल जाती है, और सपने मलबे में दफन हो जाते हैं। अगर रफ्तार का शौक इतना ही है, तो रेस ट्रैक पर जाकर अपने जुनून को आज़माइए, जहाँ तालियाँ बटोरने का हक़ है। लेकिन सड़कों को मौत का मंज़र मत बनाइए। गाड़ी के साथ-साथ अपनी समझ को भी रफ्तार दीजिए, वरना ज़िंदगी की डोर हाथ से छूटते देर नहीं लगेगी। आपकी कहानी भी अखबार के किसी कोने में ₹एक और हादसा₹ बनकर सिमट जाएगी—न कोई हीरो, न कोई तारीफ, बस एक खामोश अफसोस। तो अगली बार सड़क पर कदम रखें, तो एक्सीलेटर की बजाय अपनों की मुस्कान को थामें। असली सुख धीरे चलने की ठंडक में है, न कि रफ्तार की आग में जलने में। वरना आप नहीं रहेंगे—बस आपकी धुँधली यादें रह जाएँगी, और आपके अपने उस रफ्तार के नीचे कुचले हुए सपनों का मातम मनाते रह जाएँगे।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ट्रम्प 2.0: विश्व राजनीति में तूफान या परिवर्तन की आहट?

[विश्व मंच पर गरजते ट्रम्प : विश्व राजनीति में उथल-पुथल का नया अध्याय]

डोनाल्ड ट्रम्प ने 20 जनवरी 2025 को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली थी, और अब उनके शपथ ग्रहण को दो महीने पूरे हो चुके हैं। इस छोटे से समय में उनकी नीतियों, बयानबाजी और विवादास्पद निर्णयों ने न केवल अमेरिका, बल्कि वैश्विक मंच पर भी उथल-पुथल मचा दी है। ट्रम्प का पहला कार्यकाल (2017-2021) अपने आप में एक अनोखा अध्याय था, और अब उनकी दूसरी पारी ने राजनीति, अर्थव्यवस्था और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को एक नई दिशा में मोड़ दिया है। दो महीनों में ही उनके फैसलों ने दुनिया भर में चर्चा और चिंता को जन्म दिया है।

ट्रम्प के शपथ ग्रहण के बाद से अमेरिकी राजनीति में अस्थिरता बढ़ी है। पिछले दो महीनों में उनकी 'अमेरिका फर्स्ट' नीति और अप्रवासन पर सख्त रुख ने समाज को और ध्रुवीकृत कर दिया है। शपथ लेते ही उन्होंने 6 जनवरी 2021 के कैपिटल हिल हमले के दोषियों को माफी देने का फैसला किया, जिसने उनके विरोधियों को भड़का दिया। डेमोक्रेटिक पार्टी और मुख्यधारा का मीडिया इसे लोकतंत्र पर हमला बता रहा है, जबकि उनके समर्थक इसे ट्रम्प की निष्ठा का सबूत मानते हैं। पिछले दो महीनों में रिपब्लिकन पार्टी भी उनके प्रभाव से अछूती नहीं रही। कुछ नेता उनके फैसलों का समर्थन कर रहे हैं, तो कुछ इसे पार्टी के भविष्य के लिए खतरा बता रहे हैं। ट्रम्प की आक्रामक शैली ने अमेरिकी राजनीति को एक बार फिर अनिश्चितता की ओर धकेल दिया है।

ट्रम्प के शपथ (20 जनवरी, 2025) लेने के दो महीनों में ही अर्थव्यवस्था पर उनके फैसलों का असर दिखने लगा है। उन्होंने चीन और अन्य देशों पर भारी टैरिफ लगाने की घोषणा की, जिसकी नींव उनके पहले कार्यकाल में ही पड़ चुकी थी। इन टैरिफ्स ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किया है और कई देशों के साथ व्यापारिक तनाव बढ़ा है। विशेषज्ञों का मानना है कि यह कदम अमेरिकी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की कोशिश है, लेकिन इससे सहयोगी देशों में आर्थिक अनिश्चितता भी पैदा हुई है। पिछले दो महीनों में ट्रम्प ने पेरिस जलवायु समझौते से अमेरिका को फिर से बाहर करने का आदेश दिया, जिससे पर्यावरण नीतियों पर बहस तेज हो गई है। यह फैसला जहां उनके समर्थकों को घरेलू उद्योगों के लिए फायदेमंद लगता है, वहीं वैश्विक स्तर पर इसे आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।

ट्रम्प के शपथ ग्रहण के बाद बीते दो महीनों में उनकी विदेश नीति ने वैश्विक मंच को हतप्रभ कर दिया है। नाटो पर बढ़ते दबाव और यूक्रेन को सैन्य सहायता रोकने की उनकी घोषणा ने रूस की आक्रामकता को बढ़ावा देने का खतरा पैदा कर दिया है। अपने पहले भाषण में तीसरे विश्व युद्ध को टालने का दम्भरस वादा करने वाले ट्रम्प की नीतियां अब यूरोप और अमेरिका के बीच दरार डाल रही हैं। दूसरी ओर, चीन के साथ टकराव ने भी इस अवधि में जोर पकड़ा है। ताइवान को लेकर उनका सख्त रुख एशिया में अस्थिरता का नया सबब बन सकता है। महज दो महीनों में ट्रम्प की नीतियों ने वैश्विक भू-राजनीति को एक अनिश्चित और तनावपूर्ण मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है।

पिछले दो महीनों में ट्रम्प की वापसी ने सोशल मीडिया और अमेरिकी समाज में ध्रुवीकरण को और गहरा किया है। शपथ लेने के बाद उन्होंने बोलने की आजादी बहाल करने और सरकारी सेंसरशिप पर रोक लगाने का आदेश दिया, जिसे उनके समर्थकों ने स्वागत किया। हालांकि, उनके विवादास्पद बयानों ने विरोधियों के साथ टकराव को बढ़ाया है। इन दो महीनों में फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार की समस्या भी बढ़ी है। ट्रम्प का मुख्यधारा के मीडिया को 'फेक न्यूज़' कहकर खारिज करना पिछले दो महीनों में और तेज हुआ है, जिससे सूचना की विश्वसनीयता पर सवाल उठ रहे हैं।

ट्रम्प के शपथ ग्रहण के बाद बीते दो महीनों में भारत के लिए उनकी नीतियों का असर एक जटिल और बहुआयामी तस्वीर पेश करता है, जिसमें अवसर और चुनौतियां एक साथ सिर उठाए खड़े हैं। उनके पहले कार्यकाल में भारत और अमेरिका के बीच रिश्तों ने मजबूती का एक नया दौर देखा था—चाहे वह रक्षा साझेदारी हो या कूटनीतिक मंचों पर तालमेल। अब भी, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी व्यक्तिगत मित्रता और आपसी विश्वास एक सकारात्मक संकेत के रूप में उभरता है, जो दोनों देशों के बीच सहयोग की संभावनाओं को जिंदा रखता है। मगर इस चमकती सतह के नीचे कुछ कांटे भी छिपे हैं। टैरिफ नीतियों में सख्ती और एच-1बी वीजा जैसे मुद्दों पर कड़ा रुख भारत के लिए आर्थिक और तकनीकी क्षेत्र में नई बाधाएं खड़ी कर रहा है। भारतीय निर्यातकों को अमेरिकी बाजार में बढ़ती लागत का सामना करना पड़ रहा है, तो दूसरी ओर तकनीकी पेशेवरों के लिए अमेरिका के दरवाजे संकुचित होते दिख रहे हैं।

इन चुनौतियों के बीच, पिछले दो महीनों में ट्रम्प का चीन के प्रति आक्रामक रवैया भारत के लिए एक रणनीतिक वरदान साबित हुआ है। उनकी नीतियों ने बीजिंग की बढ़ती दादागिरी को निशाना बनाया है, खासकर हिंद-प्रशांत क्षेत्र में, जहां भारत और अमेरिका का गठजोड़ अब पहले से कहीं ज्यादा मजबूत नजर आता है। दोनों देशों ने मिलकर चीन की विस्तारवादी नीतियों को संतुलित करने और समुद्री मार्गों पर उसकी मनमानी को रोकने की ठोस कोशिश की है। यह भारत के लिए इसलिए भी अहम है, क्योंकि हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता और संप्रभुता उसके दीर्घकालिक हितों की रीढ़ है। ट्रम्प की यह रणनीति न केवल भारत को क्षेत्रीय शक्ति के रूप में मजबूत करती है, बल्कि वैश्विक मंच पर उसकी स्थिति को भी नई ऊंचाई देती है। इस तरह, इन दो महीनों में ट्रम्प के फैसलों ने भारत के सामने जहां एक ओर आर्थिक दबाव पैदा किया, वहीं दूसरी ओर सामरिक लाभ के दरवाजे भी खोले हैं।

ट्रम्प के शपथ ग्रहण को दो महीने बीत चुके हैं, और यह स्पष्ट हो चला है कि उनकी वापसी ने वैश्विक पटल पर तूफान खड़ा कर दिया है। अमेरिका के भीतर राजनीतिक अस्थिरता की चिंगारी, अर्थव्यवस्था में छाई अनिश्चितता की धुंध और अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आए भूचाल—ये सब उनके शुरुआती फैसलों की तीखी छाप हैं। इन दो महीनों में उनके कदमों ने कुछ देशों के लिए उम्मीद की किरण जलाई है, तो कई अन्य को अभूतपूर्व चुनौतियों के भंवर में धकेल दिया है। अब सवाल यह उठता है कि क्या ट्रम्प की नीतियां आगे चलकर वैश्विक संतुलन की बुनियाद रखेंगी, या यह उथल-पुथल एक बड़े संकट का आगाज बनकर उभरेगी? ये तीन महीने तो महज एक झलक हैं—एक तूफानी शुरुआत, जिसका असली मंजर आने वाला वक्त ही सामने लाएगा। यह तय है कि उनकी वापसी वैश्विक व्यवस्था को किसी अनजान मोड़ की ओर ले जा रही है, और दुनिया सांस थामे उस दिशा का इंतजार कर रही है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

दुर्लभ बीमारियों के बोझ तले कहराते मरीज

डॉ सत्यवान सौरभ

दुर्लभ बीमारियाँ ऐसी स्थितियाँ हैं जो आबादी के एक छोटे से हिस्से को प्रभावित करती हैं, फिर भी वे सामूहिक रूप से भारत में 70 मिलियन से अधिक लोगों को प्रभावित कर रही हैं। दुर्लभ बीमारियों के लिए राष्ट्रीय नीति 2021 उनके उपचार से जुड़ी चुनौतियों से निपटने का प्रयास करती है, लेकिन वित्तीय सीमाएँ एक महत्त्वपूर्ण बाधा बनी हुई हैं। हर साल प्रति मरीज़ ₹10 लाख से ₹16 करोड़ तक के उपचार ख़र्च के साथ, अपर्याप्त फंडिंग तंत्र रोगियों के लिए आवश्यक देखभाल तक पहुँचना मुश्किल बनाते हैं, जिससे उनकी परेशानी और बढ़ जाती है। अधिकांश दुर्लभ बीमारियों का एक आनुवंशिक आधार होता है और अक्सर गंभीर, पुरानी स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनते हैं। कई में उचित निदान विधियों या उपचार प्रोटोकॉल का अभाव होता है और मौजूदा उपचार आमतौर पर इलाज़ प्रदान करने के बजाय केवल लक्षणों का प्रबंधन करते हैं। भारत में, कई विकासशील देशों की तरह, दुर्लभ बीमारियों की कोई सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत परिभाषा नहीं है। भारत में दुर्लभ बीमारियों का बोझ काफ़ी अधिक है, जो वैश्विक मरीजों का लगभग एक तिहाई हिस्सा है। दुर्लभ रोगों के लिए राष्ट्रीय नीति से पता चलता है कि भारत में लगभग 50-100 मिलियन व्यक्ति इन स्थितियों से प्रभावित हैं। देश में 450 से अधिक मान्यता प्राप्त दुर्लभ बीमारियाँ हैं, जिनमें स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी और गौचर रोग जैसी प्रसिद्ध स्थितियाँ शामिल हैं। लगभग 8 से 10 करोड़ भारतीय दुर्लभ बीमारियों से पीड़ित हैं, जिनमें से 75% से अधिक बच्चे हैं। इन गंभीर स्थितियों से जुड़ी रुग्णता और मृत्यु दर की उच्च दर एक प्रमुख कारण है कि इनमें से कई बच्चे वयस्कता तक जीवित नहीं रह पाते हैं।

प्रति मरीज़ ₹50 लाख की एकमुश्त फंडिंग, पुरानी दुर्लभ बीमारियों के आजीवन प्रबंधन के लिए अपर्याप्त है, जिसके परिणामस्वरूप उपचार बंद हो जाता है। हालाँकि 12 उत्कृष्टता केंद्रों को ₹143.19 करोड़ आवंटित किए गए हैं, लेकिन फंड वितरण में देरी से आवश्यक उपचारों तक पहुँच में बाधा आती है। कुछ उत्कृष्टता केंद्रों ने फंड का प्रभावी ढंग से उपयोग करने में देरी की है, जिससे गौचर रोग के रोगियों के लिए एंजाइम रिप्लेसमेंट थेरेपी में देरी हो रही है, इसके स्थापित लाभों के बावजूद 2021 में एसिड स्फिंगोमाइलेनेज डेफिसिएंसी जैसी अति-दुर्लभ स्थितियाँ शामिल नहीं हैं, जिससे पात्र रोगी वित्तीय सहायता के बिना रह जाते हैं। भारत में, एसिड स्फिंगोमाइलिनेज की कमी के रोगी सरकारी सहायता के बिना हैं, भले ही चिकित्सकीय रूप से स्वीकृत उपचार उपलब्ध हों। फंड के उपयोग की निगरानी करने और समय पर उपचार प्रदान करने के लिए कोई निरीक्षण नहीं है। संसद द्वारा समर्थित पहलों के क्रियान्वयन में देरी हो रही है, जिससे लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर वाले रोगी आवश्यक सहायता के बिना पीड़ा झेल रहें हैं। लंबी स्वीकृति प्रक्रिया और खराब अंतर-एजेंसी समन्वय के कारण उपचार में रुकावट आती है। क्राउडफंडिंग पोर्टल से फंड का इंतज़ार कर रहे मरीजों को अक्सर अस्पष्ट पात्रता मानदंड और प्रक्रियात्मक बाधाओं के कारण देरी का सामना करना पड़ता है। राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति 2021 एक स्थायी फंडिंग मॉडल के बजाय एकमुश्त अनुदान पर निर्भर करता है, जिससे चल रहे उपचार अव्यवहारिक हो जाते हैं। लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर के रोगियों को आजीवन एंजाइम रिप्लेसमेंट थेरेपी की आवश्यकता होती है, लेकिन नीतिगत प्रावधान ₹50 लाख के बाद फंडिंग को समाप्त कर देते हैं।

राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति 2021 में 450 से अधिक दुर्लभ बीमारियों में से आधे से भी कम को कवर किया गया है, जिससे कई मरीज बिना किसी सहायता के रह जाते हैं। पॉम्पे और फैब्री रोग जैसी स्थितियाँ, जिनके प्रभावी उपचार उपलब्ध हैं, नीति द्वारा पूरी तरह से कवर नहीं की गई हैं। प्रदर्शन ऑडिट की अनुपस्थिति अप्रभावी कार्यान्वयन और उत्कृष्टता केंद्रों में धन के कम उपयोग की ओर ले जाती है। इन केंद्रों ने पारदर्शी निधि वितरण प्रदान करने में देरी की है, जिसके परिणामस्वरूप लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर के रोगियों के लिए गंभीर देरी हुई है। डॉक्टरों और रोगियों दोनों को अक्सर उपलब्ध उपचारों और वित्तपोषण विकल्पों के बारे में जानकारी का अभाव होता है, जो आउटरीच प्रयासों में बाधा डालता है। राष्ट्रीय दुर्लभ रोग नीति 2021 लाभों के लिए अर्हता प्राप्त करने वाले कई परिवार इनके बारे में नहीं जानते हैं, जिसके परिणामस्वरूप केंद्रों में नामांकन दर कम है। केंद्रीकृत डेटाबेस की कमी से रोगी के ग़लत अनुमान और धीमी नीति प्रतिक्रियाएँ होती हैं। एक राष्ट्रीय रजिस्ट्री वास्तविक समय की उपचार आवश्यकताओं की प्रभावी रूप से निगरानी कर सकती है, जिससे बेहतर निधि वितरण और समय पर नीति समायोजन की सुविधा मिलती है। आजीवन उपचार खर्चों को कवर करने के लिए प्रति रोगी ₹50 लाख से अधिक का एक स्थायी सरकारी कोष बनाना आवश्यक है। जर्मनी और यूके जैसे देशों ने दुर्लभ बीमारियों के लिए विशेष कोष स्थापित किए हैं, जिससे निरंतर रोगी देखभाल सुनिश्चित होती है। हमें सरकारी संसाधनों को बढ़ाने के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी फंडिंग, दवा कंपनियों के साथ साझेदारी और क्राउडफंडिंग प्रयासों का उपयोग करना चाहिए। उदाहरण के लिए, भारत में नोवार्टिस की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व पहल ने स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी के रोगियों को महंगी जीन थेरेपी की आवश्यकता के लिए सहायता प्रदान की है। दुर्लभ बीमारियों के लिए आजीवन उपचार को शामिल करने के लिए आयुष्मान भारत और राज्य बीमा कार्यक्रमों का विस्तार करना महत्त्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त, फंड के उपयोग की निगरानी, रोगी के उपचार की प्रगति को ट्रैक करने और सीओई की जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए एक डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विकसित किया जाना चाहिए। ब्लॉकचेन-आधारित ट्रैकिंग सिस्टम को लागू करने से नौकरशाही बाधाओं के बिना पारदर्शी फंड वितरण की गारंटी मिल सकती है।

त्वरित निदान, किफ़ायती उपचार और बेहतर बुनियादी ढाँचा सुनिश्चित करने के लिए ₹974 करोड़ की पहल में तेज़ी लाएँ। इस कार्यक्रम को तेज़ी से आगे बढ़ाने से हज़ारों अनुपचारित रोगियों को बहुत लाभ हो सकता है और बाल मृत्यु दर को कम करने में मदद मिल सकती है। एक संपूर्ण दुर्लभ रोग नीति को केवल इरादों से आगे बढ़कर प्रभावी निष्पादन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। सरकारी सहायता, कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व प्रयासों और सार्वजनिक-निजी भागीदारी को मिलाकर स्थायी वित्तपोषण आवश्यक है। प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल बनाना, प्रारंभिक निदान को बढ़ाना और बीमा कवरेज को व्यापक बनाना उपचार को और अधिक सुलभ बना देगा। भारत में दुर्लभ रोग रोगियों के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए मज़बूत संस्थागत ढाँचों द्वारा समर्थित रोगी-केंद्रित दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण है। स्वास्थ्य सेवा पेशेवरों को अपनी निदान सटीकता बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। दुर्लभ रोगों के पारिवारिक इतिहास वाली गर्भवती माताओं को अनिवार्य प्रसव पूर्व जाँच और प्रसवोत्तर देखभाल से गुजरना चाहिए। सरकार को दुर्लभ रोगों की स्पष्ट परिभाषा स्थापित करनी चाहिए, बजट आवंटन बढ़ाना चाहिए, दवा विकास और उपचारों के लिए धन आवंटित करना चाहिए और उत्कृष्टता केंद्रों की संख्या का विस्तार करना चाहिए। ये क़दम दुर्लभ बीमारियों की राष्ट्रीय नीति 2021 को मज़बूत करेंगे। सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों को सीएसआर पहलों और वित्तपोषण सहयोग के माध्यम से दुर्लभ बीमारियों के लिए सामाजिक सहायता कार्यक्रमों के वित्तपोषण में शामिल होना चाहिए। इसके अतिरिक्त, दुर्लभ बीमारियों के लिए सभी जीवन रक्षक दवाओं से जीएसटी हटाने से इन दवाओं को और अधिक किफायती बनाने में मदद मिलेगी।

स्कोडा कायलैक बेस वर्सेज टॉप वैरियंट: डिजाइन, इंटीरियर और फीचर्स के मामले में कितना अंतर

रिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा कायलैक को हाल ही में भारत में लॉन्च किया गया है। इसे चार वेरिएंट Classic Signature Signature Plus और Prestige में लाया गया है। इसकी भारतीय बाजार में एक्स-शोरूम कीमत 7 .89 लाख से लेकर 14 .40 लाख रुपये तक है। हम यहां पर आपको इसके बेस मॉडल और टॉप मॉडल में क्या-क्या अंतर है और कौन-सा वेरिएंट आपके लिए बेहतर हो सकता है इसके बारे में बता रहे हैं।

नई दिल्ली। स्कोडा ने हाल ही में अपनी नई Skoda Kylaq SUV को लॉन्च किया है। इसकी भारतीय बाजार में एक्स-शोरूम कीमत 7.89 लाख से लेकर 14.40 लाख रुपये तक है। इसे चार वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो Classic, Signature, Signature Plus और Prestige है। हम यहां पर आपको इसके बेस वेरिएंट Classic और टॉप वेरिएंट Prestige में क्या अंतर है और कौन-सा वेरिएंट आपके लिए बेहतर हो सकता है, इसके बारे में बता रहे हैं।

1. डिजाइन

फ्रंटः Classic में पिक्सेलेटेड LED DRLs और मल्टी-रिफ्लेक्टर LED हेडलाइट्स को दिया गया है। वहीं, Prestige DRLs का डिजाइन अलग दिया गया है और प्रोजेक्टर हेडलाइट्स को शामिल किया गया है। दोनों के फ्रंट में LED हेडलाइट्स, LED DRLs, और स्कोडा की बटरफ्लाई ग्रिल दी गई है और दोनों के डिजाइन में हल्का अंतर है। प्रेस्टीज वेरिएंट को बेहतर और प्रीमियम लुक दिया गया है।

साइड प्रोफाइलः Classic में कवर के साथ 16-इंच के ब्लैक स्टील व्हील्स दिया गया है, जबकि Prestige में 17 इंच के ड्यूल-टोन एलॉय व्हील्स, डोर हैंडल पर क्रोम एलिमेंट और शार्क-फिन एंटीना दिया गया है।दोनों वेरिएंट के साइड प्रोफाइल में काफी अंतर देखने के लिए मिलता है। दोनों ही वेरिएंट में रियर व्यू मिरर (ORVMs), रूफ रेल्स और बॉडी क्लैडिंग पर लगे टर्न इंडिकेटर्स मिलते हैं, लेकिन बेस वेरिएंट में डोर हैंडल पर क्रोम एलिमेंट और शार्क-फिन एंटीना नहीं दिया गया है। वहीं, टॉप वेरिएंट में अलॉय व्हील भी काफी शानदार दिए गए हैं।

रियरः Classic में LED टेल लाइट्स और ब्लैक बम्पर दिया गया है, जबकि Prestige में भी LED टेल लाइट्स और ब्लैक बम्पर मिलते हैं। साथ ही रियर वाइपर और वॉशर दिया गया है और टेल लाइट को जोड़ने के लिए ब्लैक स्ट्रिप भी दी गई है। इसके अलावा रियर बंपर पर सिल्वर फॉक्स स्किड प्लेट भी दी गई है। क्लासिक वेरिएंट के मुकाबले प्रेस्टीज वेरिएंट के रियर डिजाइन को काफी प्रीमियम लुक दिया गया है, जिसकी वजह से आपको क्लासिक वेरिएंट कुछ फीकी लग सकती है।

2. इंटीरियर्स और फीचर्स

Skoda Kylaq के दोनों वेरिएंट के केबिन का लेआउट एक जैसा ही है, जिसमें लेयर्ड डैशबोर्ड डिजाइन, 2-स्पोक स्टीयरिंग व्हील और AC वेंट्स पर क्रोम सराउंड दिया गया है। बेस मॉडल में टचस्क्रीन नहीं मिलती है, जबकि टॉप मॉडल में 8-इंच की टचस्क्रीन दी गई है। वहीं, जहां बेस में एनालॉग डायल और मल्टी-इंफॉर्मेशन डिस्प्ले (MID) के साथ एक इंस्ट्रूमेंट क्लस्टर दिया गया है, जबकि टॉम मॉडल में पूरी तरह से डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले मिलता है। प्रेस्टीज वेरिएंट में टच-इनेबल ऑटो AC पैनल और लेदरिट सीट अपहोल्स्ट्री दी जा रही है, जबकि क्लासिक वेरिएंट में मैन्युअल AC और सेमी-लेदर सीट्स दी गई है।

3. सेफ्टी फीचर्स

क्लासिक वेरिएंट में 6 एयरबैग्स, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकर, और रियर पार्किंग सेंसर्स जैसे फीचर्स को शामिल किया गया है, जबकि प्रेस्टीज वेरिएंट में एक्स्ट्रा सेफ्टी फीचर्स के रूप में रियर पार्किंग कैमरा और टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) भी दिया गया है, जो क्लासिक में नहीं मिलते हैं। इसके अलावा, प्रेस्टीज वेरिएंट में ज्यादा आरामदायक और सुविधाजनक फीचर्स मिलते हैं, जैसे कि 6-वे इलेक्ट्रिकली एडजस्टेबल फ्रंट सीट्स और सिंगल-पेन सनरूफ।

4. इंजन

Skoda Kylaq के सभी वेरिएंट में 1-लीटर टर्बो-पेट्रोल इंजन दिया जाता है। इसका इंजन 115 PS की पावर और 178 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। दोनों वेरिएंट में इंजन तो समान ही मिलता है, लेकिन ट्रांसमिशन में अंतर है। क्लासिक वेरिएंट को केवल मैन्युअल ट्रांसमिशन में लाया गया है, जबकि प्रेस्टीज वेरिएंट को ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ-साथ मैन्युअल ट्रांसमिशन में भी पेश किया जाता है।

5. कीमत

क्लासिक वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 7.89 लाख रुपये है, जबकि प्रेस्टीज वेरिएंट की 13.35 लाख से 14.40 लाख की एक्स-शोरूम कीमत में आती है।

मारुति सुजुकी की गाड़ियां अप्रैल से और हो जाएंगी महंगी, कीमतों में होगा 4% तक इजाफा

परिवहन विशेष न्यूज

अप्रैल 2025 से मारुति सुजुकी की गाड़ियां और महंगी होने जा रही है। Maruti अपनी गाड़ियों की कीमत में फिर से 4 फीसद तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। कंपनी ने कीमतों को बढ़ाने के पीछे का कारण कच्चे माल की बढ़ती लागत और ऑपरेशनल खर्चों को बताया है। कीमतों का इजाफा मॉडल के आधार पर होगा।

नई दिल्ली। मारुति सुजुकी की गाड़ियां और महंगी होने वाली है। कंपनी अप्रैल 2025 से अपनी गाड़ियों की कीमत को फिर से बढ़ाने जा रही है। इस बार भी कंपनी अपनी गाड़ियों की कीमत में 4% तक की बढ़ोतरी करने जा रही है। देश की सबसे बड़ी कार निर्माता कंपनी ने नियामकीय फाइलिंग के दौरान इसके बारे में बताया। कंपनी की तरफ से कहा गया है कि गाड़ियों की कीमतों में 4 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हो सकती है और यह मॉडल पर अलग-अलग होगी।

कंपनी ने बताया ये कारण

मारुति सुजुकी ने गाड़ियों की कीमत को बढ़ाने के पीछे का कारण बताते हुए कहा कि कंपनी लगातार लागतों को अनुकूलित करने और अपने ग्राहकों पर प्रभाव को कम करने का प्रयास करती है, लेकिन बढ़ी हुई लागत का कुछ हिस्सा बाजार में डालने की आवश्यकता हो सकती है। मारुति सुजुकी इंडिया ने कहा है कि कार की कीमतें बढ़ाने का फैसला, कच्चे माल की बढ़ती लागत और ऑपरेशनल खर्चों के कारण लिया गया है।

कंपनी की तरफ से यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि किन मॉडलों की कीमतों से सबसे ज्यादा बढ़ोतरी देखने के लिए मिलेगी। मारूती भारतीय बाजार में एंट्री-लेवल हैचबैक से लेकर प्रीमियम एसयूवी तक की गाड़ियों को पेश करती है।

2025 में कब-कब बढ़ी कीमत

कंपनी इससे पहले भी 4% की बढ़ोतरी कर चुकी है। इसकी घोषणा कंपनी ने पिछले साल दिसंबर में की गई थी और उसे जनवरी में लागू किया गया था। इस दौरान अलग-अलग मॉडल की कीमतों में 1,500 रुपये से 32,500 रुपये तक की बढ़ोतरी की गई थी। इसकी तरह से फरवरी 2025 में भी गाड़ियों की कीमत में बढ़ोतरी की गई थी।

मारुति सुजुकी भारत में ये मॉडल करती है पेश

देश की सबसे बड़ी ऑटोमेकर मारुति सुजुकी हाल के समय में भारतीय बाजार में Alto K10 to the S-Presso, Eeco, Celerio, Wagon R, Ignis, Swift, Baleno, Dzire, Fronx, Brezza, Ertiga, Ciaz, Grand Vitara, XL6, Jimny और Invicto को ऑफर करती है।

नए रंग-रूप में लॉन्च हुई होण्डा शाइन 100, नया डिजाइन समेत फीचर्स भी मिले

परिवहन विशेष न्यूज

होंडा ने अपडेटेड 2025 Honda Shine 100 को भारतीय बाजार में लॉन्च कर दिया है। इसके इंजन को OBD-2B के अनुपालन के साथ लाया गया है लेकिन इसके इंजन को पहले की तरह ही रखा गया है। इसे नया डिजाइन और ग्राफिक्स दिया गया है। भारतीय बाजार में यह Hero HF100 Hero Splendor और Bajaj Platina 100 को टक्कर देती है।

नई दिल्ली। होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया (HMSI) ने नई 2025 Honda Shine 100 को भारत में लॉन्च कर दिया है। इसका इंजन अब OBD-2B के अनुपालन के साथ आया है। इसे एक ही वेरिएंट में लॉन्च किया गया है, लेकिन इसे पाँच कलर स्कीम में पेश किया गया है, जो ब्लैक विद रेड, ब्लैक विद ब्लू, ब्लैक विद ऑरेंज, ब्लैक विद ग्रे और ब्लैक विद ग्रीन है। इसके साथ ही 2025 Honda Shine 100 के बॉडी पैन को नए रिफ्रेश ग्राफिक्स के साथ लेकर आया गया है। इसे अपडेट मिलने बाद कंपनी को इसकी बिक्री और बढ़ने की उम्मीद है।

इंजन

2025 Honda Shine 100 में वही पुराने 98.98 cc, एयर-कूल्ड, सिंगल सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 7.38 PS की पावर और 8.05 Nm का टॉर्क जनरेट करता है। अब इसका इंजन OBD-2B का अनुपालन करता है। इसके इंजन को पहले की तरह ही 4-स्पीड गियरबॉक्स से जोड़ा गया है।

कीमत

नई Honda Shine 100 को नई कीमत में लॉन्च किया गया है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 68,767 रुपये है, जो पहले से 1,867 रुपये महंगी है। भारतीय बाजार में इसका मुकाबला Hero HF100, Hero Splendor और Bajaj Platina 100 से देखने के लिए मिलता है।

अंडरनिपिंग

अपडेटेड Honda Shine 100 में पहले की तरह ही टेलिस्कोपिक फोर्क और ट्विन शॉक एब्जॉर्बर को दिया गया है। इसे पहले की तरह ही ट्यूब वाले टायर के साथ 17 इंच के अलॉय व्हील दिए गए हैं। इसमें ब्रेकिंग के लिए CBS (कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम) के साथ 130 mm फ्रंट और 110 mm रियर ड्रम ब्रेक दिया गया है। इसमें 786 mm की सुलभ सीट ऊंचाई, 168mm का ग्राउंड क्लीयरेंस और सिर्फ 99 kg का वजन है।

फीचर्स

2025 Honda Shine 100 में एनालॉग इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, जिसमें स्पीडोमीटर, ओडोमीटर और फ्यूल गेज सहित नियमित रीडआउट की जानकारी मिलती है। बाइक में सेफ्टी को ध्यान रखते हुए साइड-स्टैंड इंजन कट-ऑफ फीचर को शामिल किया गया है।

यह हमेशा से ही लोगों के बीच पॉपुलर रही है। वहीं, यह किफायती होने के साथ ही काफी कम मेंटेन वाली बाइक रही है। अब यह OBD-2B अपडेट के साथ पर्यावरण के अनुकूल हो गई है। वहीं, इसे नए कलर मिलने से संभावित खरीदारों के बीच इसकी अपील भी बढ़ सकती है।

हुंडई ग्रेंड 10 एनआईओएस का नया कॉर्पोरेट वैरियंट लॉन्च,

परिवहन विशेष न्यूज

साउथ कोरियाई कार निर्माता Hyundai Motors की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन Cars And SUVs को ऑफर किया जाता है। Hyundai Motor India की ओर से हाल में ही हैचबैक कार के तौर पर ऑफर की जाने वाली Grand i10 Nios का नया Corporate Variant लॉन्च किया गया है। इसे किस कीमत पर और किन खूबियों के साथ लाया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी की बिक्री करने वाली साउथ कोरियाई वाहन निर्माता Hyundai Motors ने हैचबैक कार Grand i10 Nios का नया Corporate Variant लॉन्च कर दिया है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि इस नए वेरिएंट में कंपनी की ओर से क्या खूबियां दी गई हैं। साथ ही इसे किस कीमत पर खरीदा जा सकता है।

Hyundai Grand i10 Nios का Corporate Variant लॉन्च

हुंडई मोटर इंडिया की ओर से भारतीय बाजार में ऑफर की जाने वाली हैचबैक कार आई-10 का नया कॉर्पोरेट वेरिएंट लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की ओर से इसमें कई बेहतरीन खूबियों को भी दिया गया है। इस वेरिएंट के जरिए कंपनी युवाओं को लुभाने की तैयारी कर रही है।

कैसे हैं फीचर्स

हुंडई ने ग्रैंड आई-10 नियोस के कॉर्पोरेट वेरिएंट में 17.14 सेमी टचस्क्रीन दिया है। इसके साथ गाड़ी में ड्यूल टोन स्टाइल के 15 इंच व्हील्स, छह एयरबैग, 30 से ज्यादा सेफ्टी फीचर, ड्यूल टोन ग्रे इंटीरियर, ड्राइवर सीट हाइट एडजस्टमेंट, फुटवेल लाइट, फ्रंट रूम लैंप, स्टेयरिंग व्हील माउंटिड कंट्रोल, रियर एसी वेंट, पैसेंजर वेनिटी मिरर, टीपीएमएस, एबीएस, ईबीडी, एलईडी डीआरएल, टेलगेट पर कॉर्पोरेट बैजिंग को दिया गया है। इस कार में कुल सात मोनोटोन रंगों का विकल्प दिया गया है। जिसमें अमेजन ग्रे को नए रंग के तौर पर शामिल किया गया है। इसके अलावा इसमें Atlas White, Typhoon Silver, Titan Grey, Teal Blue, Fiery Red, Spark Green जैसे रंग मिलेंगे।

कितना दमदार इंजन

हुंडई ने आई-10 नियोस में 1.2 लीटर Kappa पेट्रोल इंजन दिया है। जिसके साथ पांच स्पीड मैनुअल और स्मार्ट ऑटो एएमटी ट्रांसमिशन का विकल्प दिया गया है।

कितनी है कीमत

हुंडई ने ग्रैंड आई-10 नियोस के कॉर्पोरेट एडिशन को 6.93 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया है। वहीं इसके एएमटी वेरिएंट की एक्स शोरूम कीमत को 7.58 लाख रुपये रखा गया है।

महिंद्रा XUV700 की ऑल-ब्लैक एडिशन में एंट्री, पैनोरमिक सनरूफ समेत ADAS जैसे फीचर्स से है लैस

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा XUV700 का ऑल-ब्लैक एडिशन लॉन्च हो गया है। इसे Ebony Edition के रूप में लॉन्च किया गया है। इसकी एक्स-शोरूम कीमत 19 .64 लाख रुपये है। इसके एक्सटीरियर और इंटीरियर को ऑल-ब्लैक थीम दिया गया है। इसके डिजाइन को रेगुलर XUV700 की तरह ही रखा गया है। इसमें वो सभी फीचर्स मिलते हैं जो XUV700 के टॉप-स्पेक AX7 और AX7 L वेरिएंट में दिए जाते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में महिंद्रा ऑटो Mahindra XUV700 को पेश करती है। अब कंपनी ने Mahindra XUV700 Ebony Edition को लॉन्च कर दिया है। इसमें ऑल-ब्लैक एक्सटीरियर और इंटीरियर थीम दी गई है, लेकिन इसके डिजाइन को रेगुलर SUV के जैसा ही रखा गया है। आइए जानते हैं कि Mahindra XUV700 के नए एडिशन में क्या नया दिया गया है।

कीमत (Price)

वेरिएंट	
रेगुलर XUV700	
XUV700 Ebony	
कीमतों में अंतर	
AX7 टर्बो-पेट्रोल MT	
19.49 लाख रुपये	
19.64 लाख रुपये	
15,000 रुपये	
AX7 टर्बो-पेट्रोल AT	
20.99 लाख रुपये	
21.14 लाख रुपये	
15,000 रुपये	
AX7 डीजस MT	
19.99 लाख रुपये	
20.14 लाख रुपये	
15,000 रुपये	
AX7 डीजल AT	
21.69 लाख रुपये	
21.79 लाख रुपये	
10,000 रुपये	
AX7 L टर्बो-पेट्रोल AT	
23.19 लाख रुपये	
23.34 लाख रुपये	
15,000 रुपये	
AX7 L डीजल MT	
22.24 लाख रुपये	
22.39 लाख रुपये	
15,000 रुपये	
AX7 L डीजल AT	
23.99 लाख रुपये	
24.14 लाख रुपये	
15,000 रुपये	

Mahindra XUV700 Ebony Edition को इसके टॉप-स्पेक AX7 और AX7 L वेरिएंट के 7-सीटर वर्जन पर आधारित है। इसमें टर्बो-पेट्रोल और डीजल दोनों इंजन ऑप्शन दिया जा रहा है।

क्या मिला नया?

Mahindra XUV700 Ebony Edition को सिर्फ ब्लैक-आउट वर्जन में लाया गया है, इसलिए इसका बाहरी डिजाइन रेगुलर मॉडल के जैसा ही है। इसके दोनों वर्जन में हेडलाइट्स, LED DRLs, LED फॉग लैंप और टेल लाइट्स सामान ही दिए गए हैं।

Ebony Edition में ब्लैक-आउट 18-इंच अलॉय व्हील्स, ग्रिल पर ब्लैक इंसर्ट, ब्लैक रूफ रेल्स और आउटसाइड रियर व्यू मिरर (ORVMs), फ्रंट और रियर स्किड प्लेट्स पर भी सिल्वर फिनिश और डोर हैंडल पर क्रोम एक्सेंट दिया गया है। इसे रेगुलर वेरिएंट से अलग दिखाने के लिए ORVMs के नीचे फ्रंट डोर पर 'Ebony' बैज दिया गया है।

Ebony Edition के केबिन को रेगुलर वेरिएंट के जैसा ही दिया गया है। इसमें एक्सटीरियर की तरह ही इंटीरियर में भी ऑल-ब्लैक थीम दी गई है। इसमें ऑल-ब्लैक डैशबोर्ड, सीट और डोर पैड पर ब्लैक लेदरेट अपहोल्स्ट्री और डार्क क्रोम AC वेंट्स दिए गए हैं। इसके अलावा लाइट ग्रे हेडलाइनर, डैशबोर्ड और डोर पैड पर सिल्वर एक्सेंट को शामिल किया गया है। वहीं, अंदर के डोर हैंडल और सेंटर कंसोल को पियानो ब्लैक फिनिश दी गई है।

फीचर्स (Features And Safety)

फीचर्स के मामले में दोनों में ही वह सभी फीचर्स दिए गए हैं, जो Mahindra XUV700 के AX7 और AX7 L वेरिएंट में मिलते हैं। इसमें 0.25-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.25-इंच डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, पैनोरमिक सनरूफ, 6-वे पावर्ड ड्राइवर सीट, डुअल-ज़ोन ऑटो AC, वेंटिलेटेड फ्रंट सीटें वायरलेस फोन चार्जर, 12-स्पीकर वाला सोनी ऑडियो सिस्टम, ऑटोमैटिक हेडलाइट्स और वाइपर दिया गया है।

इसमें लोगों की सुरक्षा के लिए 7 एयरबैग, 360-डिग्री कैमरा, सभी पहियों पर डिस्क ब्रेक, इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक, ISOFIX चाइल्ड सीट एंकरेज, टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS), ऑटोनॉमस इमरजेंसी ब्रेकिंग, लेन कीप असिस्ट और फॉरवर्ड कोलिजन वार्निंग सहित एडवांस्ड ड्राइवर-असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

इंजन (Powertrain Options)

इंजन	
2-लीटर टर्बो-पेट्रोल	
2.2-लीटर डीजल	
पावर	
200 PS	
Up to 185 PS	
टॉर्क	
380 Nm	
450 Nm	
ड्रांसमिशन	
6-स्पीड MT/ 6-स्पीड AT	
6-स्पीड MT/ 6-स्पीड AT	
ड्राइवट्रेन	
FWD	
FWD/AWD	

Mahindra XUV700 दो इंजन ऑप्शन के साथ पेश की जाती है। इसके Ebony Edition को केवल FWD ड्राइवट्रेन में पेश किया गया है।

प्रतिद्वंद्वी (Rivals)

भारतीय बाजार में Mahindra XUV700 Ebony Edition का मुकाबला Tata Safari, MG Hector Plus और Hyundai Alcazar जैसी गाड़ियों से देखने के लिए मिलेगा।

विजय गर्ग

नेशनल स्टाक एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिला निवेशकों की संख्या 22 फीसद से अधिक हो गई है, जो वर्ष 2015 के मुकाबले 6.8 गुना अधिक है। यह वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि महिलाएं अब निवेश के क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। भारतीय स्टेट बैंक की एक रपट में भी इस बदलाव की पुष्टि की गई है।

महिलाओं की बढ़ती वित्तीय भागीदारी

भारतीय अर्थव्यवस्था में हाल के वर्षों में कई महत्त्वपूर्ण बदलाव देखने को मिले हैं, जिनमें से एक है 'महिलाओं की वित्तीय बाजार में बढ़ती भागीदारी। शेयर बाजार में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी एक सकारात्मक बदलाव का संकेत है, जो देश के आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य में परिवर्तन को दर्शाता है। यह बदलाव स्मार्टफोन की व्यापक पहुंच, डिजिटल कोराबार मंचों की सहजता और वित्तीय साक्षरता में तेजी से हो रही वृद्धि के कारण संभव हुआ है। पहले जहां महिलाएं पारंपरिक बचत साधनों तक ही सीमित थीं, वहीं अब वे शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड और इक्विटी जैसे निवेश विकल्पों को अपना कर धन-संपदा बढ़ाने की दिशा में अहम योगदान दे रही हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्वतंत्रता परिलक्षित होती है, बल्कि वित्तीय समावेशन और समानता की दिशा में भी मजबूत कदम है।

नेशनल स्टाक एक्सचेंज के आंकड़ों के अनुसार, भारत में महिला निवेशकों की संख्या 22 फीसद से अधिक हो गई है, जो वर्ष 2015 के मुकाबले 6.8 गुना अधिक है। यह वृद्धि इस बात का प्रमाण है कि महिलाएं अब निवेश के क्षेत्र में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं। भारतीय स्टेट बैंक की एक रपट में भी इस बदलाव की पुष्टि की गई है। इसमें बताया गया है कि 2021 से हर साल औसतन तीन करोड़ नए डीमैट खाते खोले जा रहे हैं, जिनमें से। लगभग हर चौथा खाता महिला निवेशक के नाम पर है। यह बदलाव दर्शाता है कि महिलाएं न केवल वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हो रही बल्कि जोखिम प्रबंधन और धन सृजन में भी बड़ी भूमिका निभा रही हैं। अक्तूबर 2023 तक के आंकड़ों अनुसार देश में कुल 10.55 करोड़ व्यक्तिगत निवेशकों में से 2.52 करोड़ महिलाएं हैं, जो कुल हिस्सेदारी का लगभग 23.9 फीसद है। निवेशकों के पंजीकरण के मामले में महाराष्ट्र तमिलनाडु, गुजरात और केरल जैसे राज्यों में महिला निवेशकों की हिस्सेदारी 27 फीसद तक है, जबकि दिल्ली में यह आंकड़ा 29.8 फीसद तक पहुंच गया है। गोवा में महिला निवेशकों का हिस्सा सबसे अधिक, 32 फीसद दर्ज किया गया है। यह वृद्धि केवल महानगरों तक सीमित नहीं है, छोटे शहरों और ग्रामीण इलाकों में भी महिलाएं निवेश के प्रति जागरूक हो हो रही हैं।

महिलाओं की वित्तीय स्वायत्तता का प्रमाण हालिया अध्ययनों से पता चलता है। 47 फीसद महिलाएं अपने वित्तीय निर्णय स्वयं ले रही हैं। इस स्वायत्तता ने म्यूचुअल फंड और इक्विटी में उनकी भागीदारी को और मजबूत किया है। पिछले पांच वर्षों में भारत की महिला श्रमशक्ति भागीदारी 24.5 फीसद से बढ़ कर 41.7 फीसद हो गई है, जो न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी एक बड़ा बदलाव है। वर्ष 2019 से 2024 के बीच कामकाजी महिलाओं की संख्या में भी जबर्दस्त इजाफा हुआ है। यह संख्या 11 करोड़ से बढ़ कर 21 करोड़ तक पहुंच गई है, जो महिलाओं के बढ़ते आत्मविश्वास और सशक्तीकरण का परिचायक है। इस परिवर्तन के पीछे एक प्रमुख कारण उच्च शिक्षा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी है। वर्ष 2015 में जहां 1.57 करोड़ महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही थीं, वहीं 2022 तक यह संख्या 2.07 करोड़ हो गई है, जो 31.6 फीसद की वृद्धि को दर्शाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति और डिजिटल साक्षरता अभियानों ने महिलाओं को आधुनिक कौशल से लैस किया है, जिससे वे अधिक आत्मनिर्भर बनी और वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम हो पाई हैं।

महिलाओं की बढ़ती वित्तीय भागीदारी का प्रभाव ग्रामीण इलाकों में भी देखा जा सकता है। डिजिटल तकनीक और आनलाइन निवेश मंचों की सुलभता ने महिलाओं के लिए शेयर बाजार प्रवेश को आसान बना दिया है। साथ ही, पिछले कुछ वर्षों में सरकार और निजी संस्थानों द्वारा वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए चलाए गए अभियानों ने भी महिलाओं को आर्थिक निर्णय लेने में अधिक सक्षम बनाया है। इस बदलाव के संदर्भ में नोबेल पुरस्कार विजेता मोहम्मद यूनुस का कथन उल्लेखनीय है, 'गरीबी इतिहास के संग्रहालय का हिस्सा बन सकती है, यदि महिलाओं को वित्तीय रूप से सशक्त बनाया जाए।' महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भूमिका इस विचार को साकार करने की दिशा में एक मजबूत कदम है। महिलाओं का वित्तीय समावेशन देश की आर्थिक प्रगति के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारक बन गया है। बैंकिंग और अन्य संगठित वित्तीय क्षेत्रों में उनकी सक्रिय भागीदारी से न केवल पारिवारिक बचत दर में वृद्धि हुई है, बल्कि यह विविध और स्थिर निवेश के अवसरों को भी बढ़ावा देता है। पहले महिलाएं वित्तीय फैसलों में झिझकती थीं, पर अब वे निवेश के विभिन्न साधनों से अपने धन को बढ़ाने में सक्रियता दिखा रही हैं।

माइक्रो फाइनेंस संस्थान के आंकड़े बताते हैं कि महिलाएं अपनी निवेश योग्य संपत्ति का लगभग 51 फीसद 'फिक्स्ड डिपाजिट' और बचत खातों में रखती हैं, जबकि सोना और जमीन-जायदाद जैसे सुरक्षित निवेश विकल्पों में भी उनकी मजबूत उपस्थिति है। हालांकि, अब वे दीर्घकालिक लाभ को पहचानते हुए इक्विटी निवेश की ओर भी आकर्षित हो रही हैं। यह प्रवृत्ति न केवल उनके व्यक्तिगत सशक्तीकरण के लिए, बल्कि देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए भी लाभकारी है।

विडंबना है कि देश में एक प्रमुख चुनौती कार्यस्थल पर वेतन असमानता की है। भारत में महिलाओं को परुषों की को पुरुषों की तुलना में में औसतन 19 फीसद कम वेतन मिलता है, जिससे उनके निवेश योग्य धन की मात्रा सीमित हो जाती है। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक मानसिकता के कारण महिलाओं को उच्च जोखिम वाले निवेश से दूर रहने की सलाह दी जाती है, जिससे वे अपेक्षाकृत सुरक्षित, लेकिन कम लाभ देने वाले विकल्पों तक सीमित रह जाती हैं। अब समय आ गया है कि महिलाओं की वित्तीय साक्षरता को और अधिक बढ़ावा दिया जाए और उन्हें निवेश के उन्नत विकल्पों के बारे में जागरूक किया जाए। सरकार और निजी क्षेत्र को मिल कर ऐसी पहल करनी चाहिए, जिससे महिलाओं को आर्थिक रूप से अधिक स्वतंत्र बनाया जा सके। स्वयं सहायता समूहों, माइक्रो फाइनेंस और डिजिटल वित्तीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं को सही निवेश रणनीतियों की जानकारी दी जाए।

जब महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता केवल उनकी व्यक्तिगत समृद्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समग्र आर्थिक विकास में भी योगदान दे रही है। महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त होती हैं, तो वे न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करती, बल्कि समाज में भी एक सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम होती हैं। यदि महिलाओं को सही वित्तीय जानकारी मिलती है, तो वे अधिक प्रभावी निवेशक बन सकती हैं और भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकती हैं। यह व्यक्तिगत या पारिवारिक स्तर पर ही नहीं, राष्ट्रीय विकास के लिए भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। अब समय आ गया है कि महिलाएं इस आर्थिक स्वतंत्रता के अवसर का अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपने निवेश के फैसलों में आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें। उनके इस योगदान से न केवल उनकी अपनी स्थिति सशक्त होगी, बल्कि इससे समाज और राष्ट्र के विकास की नई राहें भी खुलेंगी। भारत एक समावेशी और स्थिर अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर होगा।

हास्य के बदलते रंग

विजय गर्ग

फागुन आ गया है। ढोलक और चंग की थाप हवा में गूंज रही है। फागुन पर कभी होली, ठुमरी और राजस्थान में खयाल गाए जाते थे। फागुन में होली गीतों में भी गालियों के गायन की परंपरा रही है। हमारे समाज में गालियां जिस रूप में रही हैं, उनका मकसद जो रहा है, उसमें गालियों का समर्थन नहीं किया जा सकता। हालांकि सिर्फ मनोरंजन और शुद्ध सात्विक भाव से गालियों के बिना भी मजाक किया जा सकता है और यह आनंद का जरिया बन सकता है। इसी तरह उलाहने और ताने के बजाय जली- कटी हो, तो वह सद्भाव के माहौल को बाधित करता है। अब आजादी के इतने दशकों के उपरांत हम एक सभ्य और संस्कृतिशील समाज की जगह अपसंस्कृति के शिकार होते जा रहे हैं, तो यह हम सबके लिए सोचने की बात है। अपनी अभिव्यक्ति की आजादी का हम रचनात्मक उपयोग कम, उसका विध्वंसात्मक और कुत्सित उपयोग अधिक कर रहे हैं।

फागुन में कहे- सुने का कोई बुरा नहीं मानता। हास्यपरक टिप्पणी की जाती है। लेकिन इन दिनों होली के मौके पर गालियों में एक किस्म की विकृत मानसिकता झांकती दिखाई देती है।

कुछ वर्ष पहले तक पत्र-पत्रिकाओं के होली विशेषांक आया करते थे। पर लगता है समय के साथ-साथ यह परंपरा खत्म होती गई है, लोकतंत्र, अभिव्यक्ति और सहिष्णुता का मोर्चा कमजोर हुआ है। आज के राजनेता और शासक अपने ऊपर बने कार्टून और तंज या व्यंग्य को बर्दाश्त नहीं कर पाते। सोशल मीडिया पर या तो व्यापार है या फिर वहां कई वजहों से टिप्पणियों को बाधित या प्रतिबंधित कर दिया जाता है। तंज और व्यंग्य के जरिए आगे की राह देखने वाला हमारा समाज आज आहिस्ता आहिस्ता एक गाली प्रधान समाज में तब्दील होता जा रहा है। ओटीटी चैनल और हास्य प्रधान कार्यक्रम इसके ज्वलंत उदाहरण हैं, जिन्होंने कमजोर साइबर कानून का भरपूर फायदा उठाया है। ओटीटी चैनलों पर तो इतनी नग्नता और अश्लीलता भरी पड़ी है कि कोई परिवार के संग, ढंग से बैठकर धारावाहिक देख नहीं सकता। हास्य कार्यक्रम में माता- पिता पर भद्दी टिप्पणियां की जाती हैं। इससे रिश्तों की गरिमा न केवल तार-तार हो रही है, बल्कि लिहाज का पर्दा भी समाप्त हो रहा है। आपसी मर्यादा भंग हो रही है।

लोकप्रियता और ज्यादा प्रसिद्धि या प्रचार पाने का यह खेल भारतीय समाज को 'बोल्ड' या आधुनिक नहीं, असभ्य और असांस्कृतिक समाज के रूप में तब्दील कर रहा है। समाज और सत्ता तंत्र के कुछ हिस्से में गालियां बेहिचक बोलने क चलन-सा है और उसे सहजता से लिया जाता है। युवाओं के बीच आपसी बातचीत में कई विदेशी के साथ-साथ देशी गालियां दोस्ती यारी में दे दी जाती हैं। इसका सबसे दुखद पक्ष यह है कि अधिकतर गालियां स्त्रियों के शरीर को लक्षित करके दी जाती हैं, जो पुरुषों की कुत्सित मानसिकता और पुरुषवादी समाज का कुरूप चेहरा भी बताती हैं।

किसी भी सभ्य समाज की पहचान परस्पर शालीन आचरण और सहअस्तित्व की भावना तथा स्वीकार्यता से होती है। दूसरों को लक्षित करके की गई टिप्पणियां और गालियां, चाहे वह लिंग आधारित हों या जातीय या नस्लीय श्रेष्ठता का वर्चस्व स्थापित करने वाली। उससे न केवल आपसी मनमुटाव बढ़ता है, बल्कि कटुता का वातावरण बनता है। कलाकारों, लेखकों और शिक्षित समाज का काम है समाज को सुसंस्कृत और वैचारिक रूप से समृद्ध बनाना, न कि आग में घी डालकर अपने हितों को तथाकथित फिल्म निर्माताओं की तरह पूर्ण करना।

हालात यहां तक बदतर हो चुके हैं कि राजनीतिक हलकों में भी कई बार अपशब्दों का प्रयोग कर दिया जाता है। यह हमारे राजनीतिक नेतृत्व की अपरिपक्वता और असंयम का उदाहरण तो है ही, सस्ती लोकप्रियता प्राप्त करने का संक्षिप्त रास्ता भी है। सदनों में कई-कई दिनों तक गतिरोध की स्थिति रहती है और लाखों रुपए जाया होते हैं। जनता के हित के विषय, बिना तार्किक निष्कर्षों के या तो पारित हो जाते हैं या लटके रह जाते हैं। भाषणों और चुनावों में तो जिस तरह की हल्की और आपत्तिजनक भाषा, बयानों और टिप्पणियों का प्रयोग एक दूसरे के खिलाफ होता है, वह भारतीय राजनीति को शर्मसार करने के लिए पर्याप्त है। अफसोस की बात है कि आज समाज और संसार अपने ज्यादा सभ्य और आधुनिक होने का दावा कर रहा है, विकास के साथ-साथ आगे बढ़ने के नए मानक पेश किए जा रहे हैं, लेकिन विचार-विमर्श के स्तर में गिरावट हो रही है, भाषा की गहराई कम होती जा रही है। जाहिर है, इसी के साथ-साथ लोगों के सोचने-समझने और मानसिक स्थिति में भी गिरावट आ रही है। हास्य और व्यंग्य के नाम पर अपने बरक्स या समांतर खड़े किसी व्यक्ति, समूह या वर्ग को अपमानित करने या उसके प्रति दुराग्रह से भरी धारणा का निर्माण करने वाली बातें की जाती हैं। इस सबको किस तरह समानता का संदेश कहा जाएगा? सवाल है कि इस तरह के विचार और व्यवहार की बुनियाद पर खड़े समाज का ढांचा भविष्य की पीढ़ियों के लिए क्या छोड़ेगा। हर तरफ गालियों, कटुक्तियों, निंदा और आलोचना का बाजार गर्म है और इसकी उठती लौ में स्वस्थ हास्य, बौद्धिक विमर्श और चिंतन देने वाला व्यंग्य कोने में पड़ा कहीं कराह रहा है... उसका पूछनहार कोई नहीं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

कहानी : विजय पताका

विजय गर्ग

"ऐसा कीजिये, दोनों बच्चियों की यूनिफार्म के दो-दो सेट्स और दे दीजिये", दुकानदर को पेमेंट कर मैंने सारे पैकेट्स उठाए और बाहर किताबों के बण्डल पकड़े खड़े अपने चपरासी माधोसिंह को पकड़ाते हुए कहा, "हो गए सब काम, चलो"। सारे पैकेट्स कार में रखवा कर, मैंने माधोसिंह को ऑटो से ऑफिस वापस भेज दिया और खुद अपनी कार में, दोनों बच्चियों को घर छोड़ने आ गयी।

इतने समय से लगे-लगे अब जाकर सब काम पूरे हो पाए थे। सब काम - यानि अन्नू दी की अभय जीजाजी से डिवोर्स की प्रक्रिया और उनकी दोनों बच्चियों का एक अच्छे नामी स्कूल में एडमिशन। अब जाकर थोड़ी शांति मिली थी मुझे कि मेरे बाबा का यह काम तो पूरा कर पायी मैं।

दोनों बच्चियों को खाना खिलाकर मैंने और माँ ने भी खा लिया। जितना मैंने सोचा था, उससे काफी कम समय में ही बच्चियों के स्कूल में सारे काम हो गए थे। शायद इसलिए कि मिड-सेशन था और वर्किंग डे था। माँ ने मुझसे बहुत प्यार से कहा था थोड़ी देर आराम करने के लिए। मैंने भी सोचा कि अब अगली मीटिंग तो शाम छह बजे से ही है और बीच में इतना काम भी नहीं है, तो माँ के पास रुक ही जाती हूँ।

दोनों बच्चियाँ, थकी हुई तो थीं ही, लेटते ही सो गयी थीं। दूसरे पलंग पर माँ लेटी थीं। आज मैं भी थोड़ी हिम्मत करके माँ के बगल में ही आकर लेट गयी थी। वैसे तो मैं हमेशा अपने कमरे में ही लेटती थी। आशा के विपरीत, माँ लेटे-लेटे मेरे कंधे पर, सिर पर हाथ फेरने लगी थीं। बिलकुल नया सा अनुभव था यह मेरे लिए, जब माँ इस तरह मेरा दुलार कर रही थीं। कितना भरोसा, कितना आश्वासन मिल रहा था मुझे आज। जैसे अब मुझे संसार की कोई ताक़त नहीं हरा सकती। अभी तक तो यह मज़बूती सिर्फ बाबा से ही मिलती थी। आज माँ से मिली, तो अचानक बाबा मेरी आँखों के आगे आकर मुस्कुराने लगे थे, जैसे कह रहे हों, "देखा न, कैसे तूने अपनी माँ को भी जीत लिया मेरी अपराजिता, मेरी अप्पू" और हमेशा की तरह ज़ोर से हँसे थे।

ऐसे में मुझे बाबा की कमी और अधिक खलने लगी। माँ भी शायद यही महसूस कर रही थीं, तभी अचानक बोल उठी थीं, "अप्पू, तू नाराज़ तो नहीं है मुझसे"?

चौंक उठी थी मैं। जीवन में यह प्रथम अवसर था, जब माँ ने मुझसे ऐसा कुछ कहा था।

"ऐसे क्यों कह रही हैं आप"? इस बात से ही मेरा गाला भर आया था।

माँ भी चुप थीं, मैं भी चुप थी। दोनों सब कुछ जानते थे, सब कुछ समझते थे। कौन किसे समझाए? दोनों ही विगत के गर्त में डुबकी लगा चुके थे।

बाबा, माँ और हम तीन बहनों का मध्यम-वर्गीय परिवार था। माँ बाबा की पहली बेटी आनंदिता - यानि मेरी अन्नू दी - के जन्म के समय घर में खूब खुशियां मनायी गयी थीं। उनके दो वर्ष के होते-होते दूसरी संतान की आहट से सभी उत्साहित थे। दबी-दबी सी बेटे की चाहत भी थी इस बार। पर आयी दूसरी बेटी, अर्चिता, यानि मेरी अर्चू दी। पापा तो संतुष्ट थे अपनी दो बेटियों के परिवार के संग। पर माँ की एक बेटे की चाहत ने घर में एक और संतान का आगमन करवा दिया था। पर इस बार भी संतान के रूप में बेटे की जगह आयी थी, एक और बेटी, तीसरी बेटी यानि मैं - अपराजिता।

पहले हम सब एक साथ, दादाजी के घर में ही रहते थे। ताऊ, ताई, उनके दो बच्चे - बड़ी प्रियांशी दी और छोटा प्रणम्य यानि बबलू। बबलू और मैं हमउम्र थे और माह भर के अंतर पर ही जन्मे थे। माँ अक्सर बतातीं थीं कि जब बबलू और मैं होने वाले थे, तब ताई और माँ दोनों ने एकसाथ गर्भावस्था का समय खूब एन्जॉय किया था। दोनों एक दूसरे की हर तरह से मदद करती थीं। दादी के गुस्से से एक दूसरे को बचाया करती थीं और सबसे छुप-छुप कर एक दूसरे को उसकी पसंद की चीज़ें भी खिलाया करती थीं। जब तक मेरा और बबलू का जन्म नहीं हुआ था, दोनों पक्की सहेलियां थीं। शायद ऐसे ही चलता भी रहता, पर ताई के यहाँ आये बेटे यानि बबलू, और माँ के यहाँ आयी तीसरी बेटी - यानि मैं - ने ताई का स्वागत दादी के पाले में करवा दिया था। बस, इसके बाद से ही दादी के माँ को दिए जाने वाले ताने, अक्सर ताई के मुँह से भी सुनायी देने लगे थे। 'बेटे की माँ' और 'तीसरी बेटी की माँ' की एक अनदेखी, मज़बूत दीवार दोनों के बीच खिंच चुकी थी, और इस तरह से, एक सीधी-सच्ची दोस्ती ने अपने अंत को प्राप्त किया था।

बाद में बेटा न होने के ताने सुनने से बेतरह दुखी माँ की ज़िद के चलते, हम लोग, यानि मेरे बाबा का परिवार, दादाजी का घर छोड़ कर इस नए घर में रहने चला आया था।

एक बार बहुत पहले, मेरे पड़ोस की एक आँटी मेरी दोनों बहनों से बता रही थीं, तभी मैंने भी सुन लिया था कि जब मेरा जन्म हुआ तब, जब नर्स ने मुझे माँ की गोद में पकड़ाना चाहा, तो यह सुनकर कि बेटी हुई है, माँ ने मुँह दूसरी ओर फेर लिया था और आँसुओं की कुछ बूँदें उनकी आँखों से छलक पड़ी थीं।

मेरे बचपन के दौरान भी, माँ मेरी ओर से उदासीन ही रहती थीं। जब किसी परीक्षा में मेरे नंबर अच्छे आते या मैं कक्षा में प्रथम आती, तब, जब कभी भी माँ मेरी ओर मुस्कुरा कर देख लेतीं, या बात करती थीं, तो मुझे लगता, जैसे मैं सातवें आसमान में उड़ रही हूँ, वरना अधिकतर तो वह मुझसे खिंची-खिंची सी ही रहती थीं। पर मेरे बाबा मेरा हौसला कभी कम नहीं होने देते थे। अक्सर वह मुझे गोद में बैठा कर कहते थे, "मेरी अप्पू क्या बेटों से कम है। देखना, यह बेटों की तरह काम भी करेगी और हमारा नाम भी रोशन करेगी। यह है मेरी अपराजिता", यह सुन माँ एक फीकी सी मुस्कान फेंक काम में व्यस्त हो जाती थीं।

जाने यह माँ की उस फीकी, दर्दभरी मुस्कान का असर था या बाबा के मेरे ऊपर भरोसे का नतीजा था कि मेरा पढ़ने-लिखने का शौक़ बढ़ता चला गया था। छुटपन से ही मुझे यह बात समझ में आ गयी थी कि जीवन में सफल होने के लिए, ख़ासकर माँ को खुश और प्रभावित करने के लिए, अच्छी पढ़ाई करना प्रथम अनिवार्यता थी। हर परीक्षा, हर टेस्ट में प्रथम आना जैसे मेरी आदत बन चुकी थी। मेरी दोनों बहनें भी पढ़ाई में बहुत अच्छी थीं।

परन्तु, खानदान में हम सबकी सहानुभूति के पात्र थे। हर कोई जैसे हम पर तरस खाता था। ताऊ हम लोगों के बचपन से ही बाबा को पैसा जोड़ने की सलाह देते थे। उनके अनुसार माँ-बाबा पर मुसीबतों का पहाड़ टूटा है। कई बार मैं गुस्से में बाबा से कहती थी कि आप ताऊ को कहते क्यों नहीं कि हम ताऊ के भी बच्चे हैं, तो हमारी शादी की ज़िम्मेदारी ताऊ की भी तो है और बबलू के होते आप को भी तो बेटे का सुख मिलना चाहिए। पर मेरी ऐसी बातों को बाबा हँसी में उड़ा दिया करते थे। फिर मुझे समझाया करते थे कि "हम सब एक परिवार हैं, भाई है वह मेरे। कोई कुछ भी करे, तुम लोगों को हमेशा सही काम करना है और सबको इज़्ज़त देनी है"।

उधर ताई भी अपने तौर-तरीक़ों से माँ को अक्सर नीचा दिखाती रहती थीं। मुझ पर तरस भरी गहरी नज़र डालते हुए "दो लड़कियां तो चलो, फिर भी ठीक हैं, पर तीसरा बच्चा तो लड़का ही होना चाहिए था" जैसे वाक्य कहने से नहीं चूकती थीं। ऐसे चुभते हुए वाक्य मेरे मन-मस्तिष्क में अपना डेरा जमाते जाते थे और मेरी और अच्छी पढ़ाई करने की इच्छा बलवती होती जाती थी।

अभी अन्नू दी ने बीस वर्ष भी पूरे नहीं किये थे कि एक दिन ताऊ उनके लिए एक रिश्ता लेकर आ गए थे। अन्नू दी बेहद मासूम सी, भोली-भाली रूपसी बाला थीं। ज़माने की ऊंच-नीच से पूरी तरह अन्जान। उस समय उन्होंने BA में प्रवेश लिया ही था। खानदान के किसी विवाह समारोह में, ताऊ के किसी दोस्त के बेटे अभय, अन्नू दी को देख उनके स्निग्ध सौंदर्य से अछूते नहीं रह पाए थे। महीने भर बाद ही ताऊ के माध्यम से उनके घर से अन्नू दी के लिए शादी के लिए प्रस्ताव आ गया था। अर्चू दी और मैंने काफी विरोध किया था इस विवाह का। पर ताऊ का मानना था कि 'हीरे जैसा लड़का है। जाना-पहचाना घर-बार है। तीन-तीन बेटियां निपटानी हैं बाबा को, तो इस रिश्ते को हाथ से जाने देना निरी मूर्खता ही होगी'। यह सब बातें सुन-सुनकर अन्नू दी ने भी इस विवाह के लिए हामी भर दी थी। जल्दी ही हमारी हैसियत के अनुसार अन्नू दी का विवाह हो गया था।

तब तक मैं एक प्रतिष्ठित इंस्टिट्यूट से अपनी बीटेक की डिग्री ले चुकी थी। मेरा सपना था किसी अच्छी पीएसयू, यानि पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग में काम करना। मैंने गेट की परीक्षा भी बहुत अच्छी रैंक के साथ उत्तीर्ण की। इसके बाद मेरा सेलेक्शन मेरी ड्रीम पीएसयू में हो गया था। मुझे मेरी मंज़िल दिख गयी थी। बस, अब मेहनत से आगे बढ़ना था। इस बीच पता चला था, अर्चू दी किसी को पसंद करती हैं। मलय जीजाजी में कोई कमी नहीं थी, सिवाय इसके कि वह अभय जीजाजी के मुकाबले, रईसी में काफी नीचे के पायदान पर थे। हाँलाँकि समझ और संस्कारों में उनसे ऊंचे पायदान पर थे। दूसरे, उस समय तक अभय जीजाजी और उनके घरवालों की कलई उतरनी भी शुरू हो गयी थी। इसलिए उनसे अर्चू दी शादी तय कर दी गयी थी। अर्चू दी और मलय जीजाजी दोनों की नौकरी अच्छी थी। अर्चू दी अपनी ससुराल में खुश थी।

इधर अन्नू दी के, कभी हाथ में पट्टी बंधी होती, तो कभी चेहरे पर सूजन दिखाई देती। कभी खुलकर कुछ न बताने पर भी, हम काफ़ी कुछ समझने लगे थे। उन दिनों माँ-बाबा अर्चू दी के विवाह की तैयारियों में व्यस्त थे। बाबा अक्सर काफी परेशान दिखते थे। एक बार बहुत ज़िद करने मुझे मुझे पता चला कि उन्होंने सोच रखा है कि पहले अर्चू दी की शादी अच्छी तरह से निपट जाए, फिर आनंदिता को डिवोर्स दिलवा देंगे और बच्चियों का यहीं किसी अच्छे स्कूल में एडमिशन करवा देंगे। अन्नू की पढ़ाई पूरी करवा कर, उसे आत्मनिर्भर बनायेंगे। पर उस नारसिस्टिक आदमी के साथ अब अपनी बेटी को नहीं रहने देंगे। ज़ाहिर है, माँ-बाबा के साथ, अब यह मेरा भी लक्ष्य बन चुका था।

परन्तु नियति को कुछ और ही मंज़ूर था। अर्चू दी की शादी की बाद से ही बाबा को सीने में हल्का-हल्का दर्द रहना शुरू हो गया था और जल्दी ही वह परलोकवासी हो गए थे। हमारी दुनिया उजड़ गयी थी। अब मैंने सबकी ज़िम्मेदारी स्वतः ही ले ली थी। हमें आश्चर्य इस बात का था कि अब ताऊ लोगों ने हमसे सम्बन्ध समाप्त कर लिए थे। बाद में किसी ने बताया था कि बेटियों की ज़िम्मेदारी से घबरा कर उन लोगों ने ऐसा किया था।

मेरी गाड़ी के हॉर्न की आवाज़ से मैं वर्तमान में आ गयी। ऑफिस से ड्राइवर मुझे लेने आ गया था।

चाय पीते हुए सोच रही थी कि माँ को बताऊँ या नहीं कि कल ऑफिस में क्या हुआ था। लेकिन माँ जब अपना कप लेकर मेरे पास आकर बैठीं, तो मेरी वाणी ने खुद ही मेरी चुगली कर दी।

"माँ, कल ऑफिस में मेरे पास बबलू आया था"।

"क्या" माँ के कप से थोड़ी सी चाय छलक कर उनकी साड़ी पर गिर गयी।

"क्यों? क्यों आया था"?

"उसको अपने इंस्टिट्यूट में लोगों को स्किल ट्रेनिंग करवाने के लिए आर्थिक मदद चाहिए"।

"फिर? तूने किया उसका काम"? माँ की उत्सुकता छलकी पड़ रही थी।

मैं चुप रही। समझ नहीं आया क्या जवाब दूँ। माँ बेध्यानी में आगे झुक आयी थीं और उत्सुक निगाहों से मेरी ओर देख रही थीं।

मैंने धीरे से कहा, "अभी नहीं"।

"हम्म" माँ एकदम से शांत होकर कुर्सी पर वापस पीछे टिक गयीं। धीरे-धीरे चाय के घूँट भरती हुई। आँखें शून्य में देखती हुई।

हाँलाँकि मेरी नौकरी ने घर के हालात, रहन-सहन के स्तर को काफी पहले ही बदल दिया था, पर आज माँ की आँखें असली विजय के दर्प से चमक रही थीं। उनकी जेठानी ने अपने जिस बेटे की वजह से उन्हें बार-बार नीचा दिखाया था, आज किस्मत ने उसी बेटे को, उनकी उसी बेटी के रहमो-करम पर लाकर छोड़ दिया था।

मीटिंग शुरू होने का समय छह बजे से था। अभी सिर्फ साढ़े तीन बजे थे। समय था हमारे पास। माँ की आँखों में विजय दर्प का सागर लहलहा रहा था। होंठों पर वक्र मुस्कान थी। गर्वोन्मत चेहरा दमक रहा था। माँ एकदम से तैयार होकर आ गयीं, "चल तेरी ताई के पास चलते हैं। इतने बरस हम दोनों ने जो इतनी बेइज़्ज़ती करवाई है, आज उसका हिसाब बराबर करने का समय आ गया है"।

कुछ ही देर में हम ताई के दरवाज़े के बाहर खड़े थे। आज इतने वर्षों बाद माँ ताई से मिलने जा रही थीं। उनकी देवरानी की हैसियत से नहीं, वरन एक ऐसे अफसर की माँ की हैसियत से, जिसके पास ताई के बेटे का ज़रूरी काम अटका हुआ था। एक कामयाब बेटी की माँ होने का गर्व उनकी विजय पताका को ऊंचा फहरा रहा था।

समय के पासे ने अपनी गोट कितनी चुन कर फेंकी थी, सही जगह पर और सही समय पर। पिछली बार जब माँ वह घर छोड़ कर आयी थीं, तब भी कारण मैं और बबलू थे। आज चौबीस बरस बाद, जब माँ उसी घर में वापस आयी हैं, तब भी कारण मैं और बबलू ही हैं।

हम दोनों तैयार खड़े थे कि दरवाज़ा खुले और हम इतने बरस तक अपने साथ किये गए अन्याय का हिसाब पूरा करें। अपनी विजय पताका फहराएं।

हमने घंटी बजायी। अंदर से कुछ देर तक कोई जवाब नहीं आया।

पर उन क्षणों में न जाने क्या हुआ। बाबा की बातें याद आने लगीं। 'असली अपराजिता वही है, जो दूसरों को भी पराजित न होने दे, फिर वह तो तुम्हारा अपना परिवार है'। अंदर जैसे कुछ बिखरने सा लगा था। मैंने माँ से कहा, "माँ रहने देते हैं। अब तो यह साबित हो ही गया है कि आपकी बेटी किसी बेटे से कम नहीं। दुखियारे को और दुःख क्या देना, चलिए वापस चलते हैं"।

माँ ने गर्दन घुमा कर मेरी ओर देखा। उनके चेहरे के भावों से लगा कि वह भी शायद ऐसा ही कुछ कहने के लिए मुँह खोलने ही वाली थीं कि 'खड़ाक' की आवाज़ के साथ दरवाज़ा खुल गया। सामने ताई खड़ी थीं।

पर, यह तो वह पहले वाली रोबीली ताई न होकर, कोई दूसरी ही ताई थीं। निर्बल कलेवर एक साधारण सी, सूती धोती में लिपटा हुआ था। ढेर सारी झुर्रियों वाला चेहरा मुरझाया सा था। आँखों में दीनता का भाव पसरा हुआ था।

माँ को देख ताई अचकचा गयीं। फिर अस्फुट स्वर में मुँह से निकला, "सरोज"?

फिर मुझे देख बोलीं, "ये कौन है? सबसे छोटी वाली है"? माँ पहले थोड़ी ठिठकीं, फिर उनके पैर छूते हुए हामी भरी।

"अच्छा, इसी के बारे में बबलू बता रहा था कल"।

अंदर दालान में जाकर बैठते हुए मेरी आँखों के आगे बचपन के वही दृश्य साकार हो उठे थे जब बबलू भैया मुझे 'लड़की लड़की, तीसरी लड़की' कह कर चिढ़ाया करते थे और ताई हमें ताने दिया करती थीं।

ताऊ के बाद से, घर की खस्ता हालत के बारे में बताते हुए, ताई ने बबलू के इंस्टिट्यूट की गिरती हुई हालत के बारे में भी बताया, "पैसा बिलकुल है नहीं। काम करे तो कैसे? अब सरकार के यहाँ अर्ज़ी दी है। कल बता रहा था, जिस अफ़सर के हाथ में सब कुछ है, वह अपनी अप्पू ही है। शर्मिंदा भी हो रहा था कि किस मुँह से जाऊं उसके पास"?

ताई की आँखें बार-बार भर आ रही थीं जिन्हें वह पल्लू से पोंछती जा रही थीं। शायद कुछ कहना चाह रही थीं, पर संकोच कर रही थीं।

फिर एकदम से बोलीं, "सरोज, बबलू के इस काम की वजह से नहीं कह रही हूँ, पहले भी कई बार सोचा बात करने को, पर हिम्मत ही नहीं पड़ी। तुम्हारी कुसूरवार हूँ मैं। याद है मुझे, कैसे इसके होने पर मैं तुम्हें तीसरी बेटी होने का ताना देती थी। बुद्धि फिर गयी थी मेरी उस समय। पर देखो, किस्मत आज बबलू को तुम्हारी उसी बेटी के पास ले गयी। मेरा कहा-सुना सब भूल जाओ सरोज। जान गयी हूँ मैं कि अपना किया-धरा लौट कर यहीं वापस आता है"।

ताई के स्वर में किसी भी तरह की कृत्रिमता नहीं थी। भरी हुई आँखें भी साफ़-साफ़ बता रही थीं कि पश्चाताप के ये उद्गार सीधे उनके हृदय से निकल रहे थे।

मैं कुछ बोलती, उससे पहले ही ताई ने मेरे ऊपर आशीषों की बरसात कर दी, "मेरी गुड़िया, मेरी बिटिया, खूब आगे बढ़ो। भगवान तेरी सब इच्छाएं पूरी करें"।

फिर अचानक मेरा हाथ पकड़ लिया, बोलीं, "बिटिया, यह सब मैं इसलिए नहीं कह रही कि तुम हमारा काम करो। पर अब इस उम्र में मैं अपनी पहले की गयी गलतियां सुधारना चाहती हूँ। माफ़ कर दे अपनी ताई को"।

आँखों में भरी झील के पार, मैंने माँ को देखने की कोशिश की। वहां भी अनवरत अश्रुधार बह रही थी। मैंने और माँ ने एक दूसरे की ओर देखा। जाने किसने क्या कहा, क्या समझा, पर तत्क्षण मेरे मुँह से निकला, "आपकी बेटी हूँ ताई, माफ़ी क्यों मांग रही हैं आप मुझसे"। ठीक उसी क्षण माँ के भी मुँह से निकला, "अरे, जीजी, आपकी बेटी है, बबलू उसका भाई है। उसका काम नहीं करेगी तो किसका करेगी"?

कुछ समय पश्चात, रिश्तों पर बरसों से जमा कुहासा छंट चुका था। जेठानी-देवरानी के गिले-शिकवे चुक गए थे और मैं ताई की छोटी सी रसोई में हम तीनों के लिए चाय बना रही थी। दालान से ताई और माँ की आवाज़ें आ रही थीं। दोनों अपने पुराने दिनों की यादें ताज़ा कर रही थीं। माँ कह रही थीं, "और याद है जीजी, जब हम अम्मा जी से झूठ बोल कर, कि कुछ देर आराम करने जा रहे हैं, खेत में अम्बिया चुराने चले गए थे और बाबूजी की आवाज़ आते ही कैसे घबरा कर गिरते-पड़ते भागे थे", दोनों के समवेत कहकहों की आवाज़ से मैं भी रसोई में मुस्कुरा पड़ी थी।

आज सुबह, ऑफिस आते ही,मैंने बबलू की फ़ाइल निकलवा कर, अपनी ओर से अप्रूव कर दी है और खुद फाइल लेकर चल दी हूँ अपने सर की टेबल पर सबसे ऊपर रखने, जिससे सर सबसे पहले इसी फाइल पर काम करें।

कॉरिडोर से गुज़र रही थी तो अचानक ऐसा लगा, जैसे सामने बाबा खड़े मुस्कुरा कर कह रहे हैं कि "अब तू बनी है मेरी असली अपराजिता। देख, अब तेरी विजय पताका कितनी ऊंची फहरा रही है"।

नीट युजी 2025: उच्च स्कोर के साथ परीक्षा पास करने में मदद करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव

विजय गर्ग

एनसीईआरटी अवधारणाओं को संशोधित करने, मॉक टेस्ट का अभ्यास करने, प्रभावी ढंग से समय का प्रबंधन करने, उच्च-वेटेज विषयों को प्राथमिकता देने और सकारात्मक मानसिकता बनाए रखने पर ध्यान दें।

हर साल नीट के लिए उपस्थित होने वाले 23 लाख से अधिक उम्मीदवारों के साथ, एक उच्च स्कोर हासिल करने के लिए तैयारी और एक रणनीतिक अंतिम-मिनट दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। नीट 2025 दृष्टिकोण के रूप में, इन अंतिम दिनों में अपने प्रदर्शन को अधिकतम करने में आपकी मदद करने के लिए व्यावहारिक सुझाव। , सही मानसिकता और रणनीति के साथ, आप इन अंतिम दिनों को सफलता के लिए अपने कदम पत्थर में बदल सकते हैं।

1. ।स्मार्टली रिवाइज करें, ब्लाइंडली नहीं

नीट के लिए 23 लाख उम्मीदवारों के साथ, रणनीतिक अंतिम मिनट की तैयारी महत्वपूर्ण है

इस स्तर पर, आपका 90% ध्यान नए विषयों को सीखने के बजाय संशोधन पर होना चाहिए। नीट परीक्षा पैटर्न लगातार बना हुआ है, 80-85% प्रशन एनसीईआरटी पाठ्यपुस्तकों से सीधे आ रहे हैं। विशेष रूप से जीव विज्ञान और रसायन विज्ञान में एनसीईआरटी अवधारणाओं, आरेखों और सूत्रों को प्राथमिकता दें।

2.। वास्तविक परीक्षा की शर्तों के तहत अभ्यास करें शोध से पता चलता है कि परीक्षा से पहले कम से कम 10 पूर्ण लंबाई के मॉक टेस्ट लेने वाले छात्र अपने स्कोर में 15-20% की सुधार करते हैं। वास्तविक परीक्षण वातावरण का अनुकरण करें:

200 मिनट की समय सीमा के भीतर कागजात का प्रयास करना

उन्हें दोहराने से बचने के लिए गलतियों का विश्लेषण करना

उन विषयों की पहचान करना जहां आप अक्सर अंक खो देते हैं

तेजी से निर्णय लेने के लिए एमसीकुऊ में उन्मूलन विधि का अभ्यास 3। मास्टर टाइम मैनेजमेंट

आत्मविश्वास बनाने और समय बचाने के लिए अपने सबसे मजबूत विषय के साथ शुरू करें। शुरू में कठिन प्रश्नों को छोड़ें और बाद में अटक जाने से बचने के लिए उनके पास लौटें।

4। उच्च-वेटेज विषय को प्राथमिकता दें कुछ विषय नीट में लगातार अधिक वजन उठाते हैं।

पिछले रुझानों के आधार पर:

x जीव विज्ञान (360 अंक): आनुवंशिकी और विकास (12-15 Qs), मानव शरीर विज्ञान (10-12 Qs), पारिस्थितिकी (8-10 Qs)

x रसायन विज्ञान (180 अंक): कार्बनिक रसायन विज्ञान (12-14 Qs), रासायनिक संबंध (5-6 Qs), समन्वय यौगिक (4-5 Qs)

x भौतिकी (180 अंक): यांत्रिकी (10-12 Qs), आधुनिक भौतिकी (6-8 Qs), इलेक्ट्रोडायनामिक्स (5-7 Qs)

इन प्रमुख क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके, आप परीक्षा के दौरान सटीकता और दक्षता बढ़ा सकते हैं।5.।शांत रहें और एक सकारात्मक मानसिकता बनाए रखें पिछले नीट टॉपर्स के डेटा से पता चलता है कि जो लोग मानसिक संयम बनाए रखते हैं, वे घबराने वालों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं। पाठ्यक्रम पूरा होने और ध्यान केंद्रित करने के बारे में अनावश्यक चर्चा से बचें:

x तनाव मुक्त रहने के लिए ध्यान और गहरी साँस लेना

x सकारात्मक प्रतिज्ञान जैसे कि मैं अच्छी तरह से तैयार और आश्वस्त हूं

x अन्य उम्मीदवारों के साथ नकारात्मक तुलना से बचना

6। पर्याप्त नींद लें और सही खाएं एक अच्छी तरह से आराम करने वाला मस्तिष्क 30% अधिक जानकारी रखता है, इसलिए परीक्षा से पहले कम से कम 6-7 घंटे की नींद का लक्ष्य रखें। मस्तिष्क बढ़ाने वाले नट, केले और डार्क चॉकलेट के साथ हल्का, पौष्टिक भोजन खाएं। हाइड्रेटेड रहें, लेकिन अत्यधिक कैफीन से बचें, जिससे चिंता बढ़ सकती है।

अंतिम विचार इन पिछले कुछ दिनों में, अपनी तैयारी पर भरोसा करें और केंद्रित रहें। इन वर्षों में, मैंने देखा है कि छात्र केवल खुद पर विश्वास करके और एक संरचित, अंतिम-मिनट के दृष्टिकोण का पालन करके अपने स्कोर को बदलते हैं। नीट केवल ज्ञान, रणनीति, आत्मविश्वास और निष्पादन के बारे में नहीं है।

सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

वैज्ञानिक पहली बार प्रकाश को फ्रीज करते हैं : विजय गर्ग

इतालवी वैज्ञानिकों की एक टीम ने "सुपरसॉलिड," पदार्थ की एक दुर्लभ स्थिति की तरह प्रकाश कार्य करने का एक तरीका ढूंढ लिया है। 5 मार्च को नेचर जर्नल में प्रकाशित उनकी खोज बदल सकती है कि हम प्रकाश के व्यवहार को कैसे समझते हैं

एक सुपरसॉलिड क्या है? एक सुपरसॉलिड एक विशेष प्रकार का पदार्थ है जो तरल की तरह बहता है लेकिन इसमें ठोस जैसी संरचना होती है। अब तक, वैज्ञानिकों ने केवल इस राज्य को बेहद ठंडी गैसों में देखा था। यह नया प्रयोग साबित करता है कि प्रकाश भी इस तरह से व्यवहार कर सकता है।

वैज्ञानिकों ने प्रकाश को कैसे फ्रीज किया? आम तौर पर, जब एक तरल जमा देता है, तो इसके अणु धीमे हो जाते हैं और खुद को ठोस रूप में व्यवस्थित करते हैं। लेकिन इस प्रयोग में, शोधकर्ताओं ने पूर्ण शून्य के पास तापमान के साथ काम किया, जहां अजीब क्वांटम प्रभाव दिखाई देते हैं।

पूर्ण शून्य सबसे कम संभव तापमान है, जहां सभी आणविक गति बंद हो जाती है। इसे 0 केल्विन (K), -273.15 C, या -459.67 F के रूप में परिभाषित किया गया है। इस तापमान पर, परमाणुओं में न्यूनतम ऊर्जा होती है, और पदार्थ असामान्य तरीकों से व्यवहार करता है, जैसे कि बोस-आइंस्टीन संघनित बनाना। जबकि वैज्ञानिक बिल्कुल शून्य तक नहीं पहुंच सकते हैं, वे प्रयोगशाला की स्थितियों में बेहद करीब आ सकते हैं।

सुपरसॉलिड्स की पहली भविष्यवाणी 1960 के दशक में की गई थी और पहली बार 2017 में विशेष गैसों में देखी गई थी। इतालवी शोधकर्ता यह देखना चाहते थे कि क्या वे अर्धचालक का उपयोग करके प्रकाश के लिए समान स्थिति बना सकते हैं, एक सामग्री जो प्रकाश और बिजली को कैसे नियंत्रित करती है।

शोधकर्ताओं ने कहा, "हमने इस बात की जांच करने का फैसला किया कि क्या इन स्थितियों को फोटोनिक सेमीकंडक्टर प्लेटफॉर्म (जिसमें फोटॉन को इलेक्ट्रॉनों के समान तरीके से संचालित किया जाता है) में प्राप्त किया जा सकता है ताकि फोटॉन को एक सुपरसॉलिड के रूप में व्यवहार करने में सक्षम बनाया जा सके।

यह क्यों मायने रखता है? यह अध्ययन बोस-आइंस्टीन कंडेनसेट (बीईसी) नामक एक अवधारणा पर आधारित है, जहां कण बेहद कम तापमान पर एक इकाई के रूप में एक साथ चलते हैं। जब बहुत सारे फोटॉन (प्रकाश के कण) मौजूद थे, तो उन्होंने असामान्य तरीके से व्यवहार करना शुरू कर दिया, ऐसे पैटर्न बनाए जो सुपरसॉलिड व्यवहार दिखाते थे।

शोधकर्ताओं ने बताया, "ये फोटॉन उपग्रह संघनित बनाते हैं जिनमें गैर-शून्य तरंग संख्या के विपरीत होते हैं लेकिन एक ही ऊर्जा होती है"।

उन्होंने निष्कर्ष निकाला, "सुपरसॉलिड स्टेट उभरता है, और सिस्टम में फोटॉन के घनत्व में एक स्थानिक मॉड्यूलेशन होता है जो सुपरसॉलिड स्टेट की विशेषता है।"

यह खोज वैज्ञानिकों को प्रकाश का अध्ययन करने का एक नया तरीका देती है और इससे क्वांटम भौतिकी और प्रौद्योगिकी में प्रगति हो सकती है। **सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब**

क्या है एसआईएफ? म्यूचुअल फंड की स्कीम से कैसे है ये अलग; जानें इससे जुड़ी सभी बातें

परिवहन विशेष न्यूज

एसआईएफ को Specialised Investment Fund भी कहा जाता है। एसआईएफ म्यूचुअल फंड की मौजूदा स्कीम और पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विसेज (PMSes) के बीच आता है। इसकी इन्वेस्टमेंट एप्रोच और स्ट्रेटजी बाकी स्कीम से काफी अलग है। इस स्कीम के तहत निवेशकों को 25 फीसदी तक रिटर्न मिल जाता है। चलिए इसके बारे में विस्तार से बात करते हैं।

नई दिल्ली। सेबी (SEBI) ने पिछले साल इस एसेट क्लास को अनुमति दी थी। एसआईएफ को उन लोगों के लिए बनाया गया है, जो हाई रिस्क उठा सकते हैं। ये मौजूदा म्यूचुअल फंड की स्कीम से काफी अलग है। स्पेशलाइज्ड इनवेस्टमेंट फंड (एसआईएफ) के तहत निवेशकों को एडवान्स इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी (Advanced Investment Strategy) का इस्तेमाल करने का अवसर मिलता है।

एसआईएफ (SIF) के तहत अलग तरह की इनवेस्टमेंट स्ट्रेटजी (Investment Strategy) और एप्रोच (Approach) अपनाई जाती है। एसआईएफ के तहत निवेशकों को अनुमानित 25 फीसदी तक रिटर्न मिल जाता है। हालांकि ये रिटर्न बाजार के उतार-चढ़ाव पर निर्भर करता है। इसमें न्यूनतम निवेश राशि 10 लाख रुपये रखी गई है।

इसके साथ ही म्यूचुअल फंड की कई स्कीम में न्यूनतम निवेश राशि 100 रुपये है। वहीं पोर्टफोलियो मैनेजमेंट सर्विसेज (Portfolio Management Services) में कम से कम 50 लाख रुपये और अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड्स (Alternative Investment funds) में कम से कम 1 करोड़ रुपये निवेश करने होते हैं।

Specialised Investment Fund क्या है?

स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड (Specialised Investment Fund) एक एसेट क्लास (Asset Class) है। ये म्यूचुअल फंड की मौजूदा स्कीम और पीएमएस के बीच में आता है। क्योंकि म्यूचुअल फंड में 100 रुपये से निवेश शुरू कर सकते हैं, वहीं पीएमएस के तहत न्यूनतम 50 लाख रुपये तक निवेश किए जा सकते हैं।

जबकि स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड तहत न्यूनतम 10 लाख रुपये तक निवेश किए जा सकते हैं। इसके अलावा अल्टरनेटिव इन्वेस्टमेंट फंड (AIF) के तहत न्यूनतम 1 करोड़ रुपये निवेश करने होते हैं।

शेयर बाजार को नियंत्रित करने वाली सेबी ने ये देखा कि पीएमएस और म्यूचुअल फंड की स्कीम के बीच कोई भी स्कीम उपलब्ध नहीं है। जिसके कारण निवेशक ज्यादा अमाउंट वाली स्कीम में निवेश करते हैं और इससे पैसा डूबने का खतरा ज्यादा बढ़ जाता है।

SIF में तीन तरह के मिलते हैं फंड

स्पेशलाइज्ड इन्वेस्टमेंट फंड के तहत तीन तरह के फंड ऑफर किए जाते है। इनमें शॉर्ट फंड, एक्स टॉप 100 लॉन्ग शॉर्ट फंड और सेक्टर रोटेशन लॉन्ग शॉर्ट फंड का ऑप्शन मिलता है।

शॉर्ट फंड- इस फंड के तहत आपका पैसा 80 फीसदी तक इक्विटी (equity) और 25 फीसदी तक शॉर्ट पोजीशन कर सकते हैं।

एक्स-टॉप 100 लॉन्ग शॉर्ट फंड के तहत आपका 65 फीसदी पैसा टॉप 100 से बाहर की गई कंपनियों पर लगाया जाता है। 25 फीसदी तक पैसे का शॉर्ट पोजीशन कर सकते हैं।

सेक्शन रोटेशन लॉन्ग-शॉर्ट फंड के तहत आपका पैसा 4 सेक्टर्स में कम से कम 80 फीसदी तक निवेश होता है। वहीं इसके तहत भी आपको 25 फीसदी तक शॉर्ट पोजिशन का ऑप्शन मिलता है।

निवेश के जोखिम को कम करने के लिए एसेट अलोकेशन म्यूचुअल फंड क्यों बेहतर हैं?

परिवहन विशेष न्यूज

इक्विटी मार्केट निवेशकों के लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। ऐसे में एसेट एलोकेशन या निवेश को विभिन्न एसेट क्लास में विभाजित करने का महत्व एक बार फिर चर्चा में है। सितंबर 2024 के बाद से जिन निवेशकों का झुकाव इक्विटी की ओर अधिक था उनके पोर्टफोलियो में उन निवेशकों की तुलना में अधिक गिरावट देखी गई जिनके पोर्टफोलियो में इक्विटी डेट और गोल्ड का संतुलित मिश्रण था।

नई दिल्ली। वर्तमान में, इक्विटी मार्केट निवेशकों के लिए चुनौतियों से भरा हुआ है। ऐसे में एसेट एलोकेशन या निवेश को विभिन्न एसेट क्लास में विभाजित करने का महत्व एक बार फिर चर्चा में है। सितंबर 2024 के बाद से, जिन निवेशकों का झुकाव इक्विटी की ओर अधिक था, उनके पोर्टफोलियो में उन निवेशकों की तुलना में अधिक गिरावट देखी गई, जिनके पोर्टफोलियो में इक्विटी, डेट और गोल्ड का संतुलित मिश्रण था।

घरेलू विकास में मंदी के कारण हाई-वैल्यू भारतीय इक्विटी में गिरावट आई है, जबकि कम ब्याज दरों की संभावना ने डेट मार्केट को स्थिर बनाए रखा है। इसके साथ ही, मैक्रोइकॉनॉमिक और जियोपॉलिटिकल अनिश्चितताओं ने सोने की कीमतों को बढ़ावा दिया है। इस प्रकार, डेट और गोल्ड ने मल्टी-एसेट निवेशकों के नुकसान को सीमित किया है, जिससे न केवल उनकी निवेश यात्रा अधिक स्थिर बनी है, बल्कि भविष्य के पोर्टफोलियो रिटर्न की संभावनाओं में भी सुधार हुआ है।

इतिहास भी इस प्रवृत्ति की पुष्टि करता है—इक्विटी, डेट और गोल्ड के बीच सह-संबंध लगातार देखा गया है। जब एक एसेट क्लास खराब प्रदर्शन करता है, तो दूसरे एसेट का अच्छा प्रदर्शन उसकी भरपाई कर सकता है।

हालांकि, कई निवेशक भीड़ के प्रभाव में आकर ट्रेंडिंग या हाल ही में सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले एसेट क्लास में निवेश कर देते हैं, यह भूलकर कि हर एसेट क्लास समय-समय पर आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार ऊपर-नीचे होता रहता है।महामारी के बाद के वर्षों में, इक्विटी मार्केट ने अच्छा प्रदर्शन किया है, लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि कोई भी एसेट क्लास हमेशा एक ही दिशा में नहीं चलता। यही कारण है कि पोर्टफोलियो में विविधता लाना आवश्यक हो जाता है।

डायवर्सिफिकेशन से पोर्टफोलियो लंबे समय तक स्थिर प्रदर्शन कर सकता है। हालांकि, रिटेल निवेशकों के पास हमेशा इक्विटी, डेट और गोल्ड मार्केट पर नजर रखने या आदर्श पोर्टफोलियो एलोकेशन तय करने का समय और विशेषज्ञता नहीं होती। इस वजह से अधिक या कम एलोकेशन का जोखिम बना रहता है, जिससे निवेशक जरूरत से ज्यादा जोखिम उठाने या संभावित रिटर्न खोने की स्थिति में आ सकते हैं।

एसेट एलोकेशन म्यूचुअल फंड एक कुशल तरीका है, जो शोध-आधारित रणनीतियों की मदद से निवेश जोखिमों में डायवर्सिफिकेशन लाता है और रिटर्न को बढ़ाता है। ऐसा ही एक फंड है ICICI Prudential Asset Allocator Fund (FOF)।

यह फंड इक्विटी, डेट और गोल्ड म्यूचुअल फंड स्कीम/ETF में एलोकेशन को गतिशील रूप से एडजस्ट करने के लिए इन-हाउस वैल्यूएशन मॉडल का उपयोग करता है। 28 फरवरी, 2025 तक, इसने 6.85% का एक साल का रिटर्न हासिल किया है, साथ ही तीन साल में 11.80% और पांच साल में 13.69% का CAGR रिटर्न दिया है।

भारत-चीन के व्यापार में अंतिम तिमाही में वृद्धि, कई विकसित देशों में व्यापार संकुचन: रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

विश्व निकाय की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विकासशील देशों, विशेष रूप से भारत व चीन ने 2024 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में औसत से बेहतर व्यापार विस्तार किया। रिपोर्ट में हालांकि, आगामी तिमाहियों में वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी की संभावना की चेतावनी दी है। इस बारे में विस्तार से जानें।

विश्व निकाय की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि विकासशील देशों, विशेष रूप से भारत व चीन ने 2024 की अक्तूबर-दिसंबर तिमाही में औसत से बेहतर व्यापार विस्तार किया। रिपोर्ट में हालांकि, आगामी तिमाहियों में वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी की संभावना की चेतावनी दी है। इसके मुताबिक, विकासशील देशों, खासकर चीन व भारत में जहां व्यापार विस्तार हुआ, वहीं कई विकसित देशों में व्यापार संकुचन हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास (यूएनसीटीएडी) द्वारा नवीनतम वैश्विक व्यापार अपडेट में कहा गया है कि 2024 में वैश्विक व्यापार लगभग 1,200 अरब डॉलर यानी नौ प्रतिशत के विस्तार के साथ 33,000 अरब डॉलर तक पहुंच गया। यह अपडेट मार्च की शुरुआत तक के आंकड़ों को कवर करता है। इसमें कहा गया है कि चीन और भारत ने 2024 की चौथी तिमाही में मजबूत व्यापार गति देखी, जबकि अमेरिका एक प्रमुख चालक बना रहा। 2024 की चौथी तिमाही में प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के बीच व्यापारिक व्यापार ने मिश्रित रुझान दिखाए। चीन, भारत के व्यापार में, विशेष रूप से निर्यात में वृद्धि जारी रही।

व्यापार में 8% की तिमाही आयात वृद्धि

अमेरिका में, 2024 की चौथी तिमाही में आयात वृद्धि ठीक रही, वहीं निर्यात वृद्धि घट गई। भारत ने 2024 की चौथी तिमाही में माल व्यापार में तिमाही आधार पर 8% और वार्षिक आधार पर 6% आयात वृद्धि दर्ज की। तिमाही निर्यात 7% और सालाना 2% निर्यात वृद्धि रही।

भारत-द.अफ्रीका के लिए सेवा व्यापार मजबूत

2024 की चौथी तिमाही में सेवा व्यापार में वृद्धि जारी रही। यह दर्शाता है कि सेवा व्यापार में सकारात्मक रुझान अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं के लिए स्थिर हो सकता है। भारत व दक्षिण अफ्रीका के लिए सेवा व्यापार में वृद्धि मजबूत रही। वार्षिक आधार पर कई सबसे बड़ी विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए सेवा व्यापार वृद्धि दहाई अंक के आंकड़े तक पहुंच गई।

'भारत को एफटीए के तहत ईयू से चिकित्सा उपकरणों पर करनी चाहिए विशेष छूट की मांग', वैश्विक थिंक टैंक का सुझाव

'थिंक टैंक जीटीआरआई ने सुझाव दिया कि भारत को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते के तहत यूरोपीय संघ से चिकित्सा उपकरणों पर कुछ विशेष छूट की मांग करनी चाहिए, ताकि निर्यात को बढ़ावा मिल सके। भारत को तब ही टैरिफ कम करना चाहिए, जब यूरोपीय संघ अपने गैर-जरूरी अवरोध हटाए।

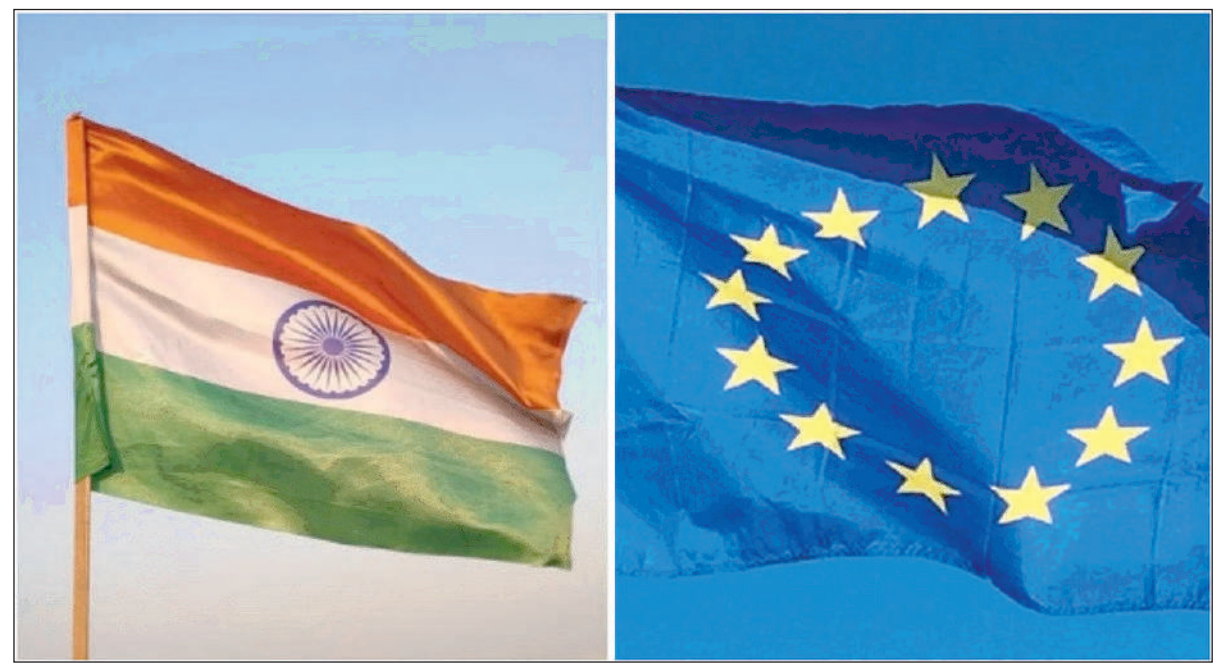

नई दिल्ली। भारत को प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) के तहत यूरोपीय संघ (ईयू) से चिकित्सा उपकरणों के क्षेत्र में कुछ विशेष छूट की मांग करनी चाहिए। इससे भारत अपने निर्यात को बढ़ावा दे सकेगा। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने रविवार को यह सुझाव दिया।

भारत अधिकांश चिकित्सा उपकरणों पर 0 से 10 फीसदी तक टैरिफ लगाता है। अगर भारत बिना यूरोपीय संघ के नियामक चुनौतियों को हल किए चिकित्सा उपकरणों पर टैरिफ कम करता है, तो इससे यूरोपीय संघ से आयात बढ़ सकता है, लेकिन निर्यात कम हो सकता है। जीटीआरआई ने कहा, एक समान और निष्पक्ष व्यापार सौदा करने के लिए भारत को बदले में कुछ छूट की मांग करनी चाहिए। भारत को चिकित्सा उपकरणों पर टैरिफ तभी कम करना चाहिए, जब यूरोपीय संघ अपने गैरजरूरी टैरिफ के अवरोधों को हटाए। चिकित्सा उपकरणों के लिए भारत-यूरोपीय संघ वार्ता असमान है। यूरोपीय संघ जहां चिकित्सा उपकरणों पर भारत से शून्य टैरिफ की मांग करता है, वहीं दूसरी तरफ वह उच्च नियामक अवरोध बनाए रखता है, जो भारत के निर्यात को यूरोपीय संघ के बाजारों के लिए कठिन बना देता है।

चिकित्सा उपकरणों के लिए भारत-ईयू एफटीए वार्ता असमान है। जहां एक तरफ यूरोपीय संघ भारत से चिकित्सा उपकरणों पर शून्य शुल्क की मांग करता है, वहीं दूसरी तरफ भारतीय उत्पादों को अपने बाजार में बेचने में मुश्किलें पैदा करता है। इससे भारत को यूरोपीय संघ के बाजार में अपने निर्यात को बढ़ाने में दिक्कत होती है।

जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा कि यूरोपीय संघ के सीमा शुल्क की दरें शून्य हैं, लेकिन इसके बावजूद बाजार में प्रवेश की लागत बहुत अधिक है, क्योंकि वहां के नियामक ढांचे में कड़ी शर्तें हैं। उन्होंने कहा, यूरोपी संघ में निर्यात करना अब और कठिन हो गया है, क्योंकि उसने मेडिसिन डिवाइस डिरेक्टिव्स (ईयू-एमडीडी) को बदलकर मेडिकल डिवाइस रूल्स (ईयू-एमडीआर) लागू किया है। ये नियम ज्यादा सख्त हैं।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में 15 अरब डॉलर का उछाल, तीन साल में सबसे ज्यादा बढ़ोतरी

विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग चार महीने तक गिरावट रही और हाल ही में यह 11 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया। इसके बाद इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिला, जिसमें कुछ सप्ताह बढ़त और कुछ सप्ताह गिरावट देखी गई।

भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में जबरदस्त उछाल आया है। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के अनुसार, भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में बीते सप्ताह 15.267 अरब डॉलर की बढ़ोतरी हुई है, जिसके बाद भारत का कुल विदेशी मुद्रा भंडार 653.966 अरब डॉलर हो गया है। यह बीते तीन साल में एक सप्ताह में हुई सबसे ज्यादा बढ़ोतरी है।

बीते चार महीने रहा गिरावट का दौर

विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग चार महीने तक गिरावट रही और हाल ही में यह 11 महीने के निचले स्तर पर पहुंच गया। इसके बाद इसमें उतार-चढ़ाव देखने को मिला, जिसमें कुछ सप्ताह बढ़त और कुछ सप्ताह गिरावट देखी गई। इससे पहले बीते साल सितंबर में भारत के विदेशी मुद्रा भंडार ने अभी तक के सबसे उच्च स्तर 704.89 अरब डॉलर के आंकड़े को छुआ था, लेकिन उसके बाद से इसमें लगातार गिरावट रही और फिलहाल यह अपने उस उच्चतम स्तर से सात प्रतिशत नीचे है।

74 अरब डॉलर का सोने का भंडार

विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट की वजह रिजर्व बैंक के हस्तक्षेप को माना जा रहा है, जिसका उद्देश्य रुपये में तेज गिरावट को रोकना है। उल्लेखनीय है कि भारतीय रुपया अब अमेरिकी डॉलर की तुलना में सर्वकालिक निचले स्तर पर आ गया है। आरबीआई के नवीनतम आंकड़ों से पता चला है कि भारत की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां (एफसीए), जो विदेशी मुद्रा भंडार का सबसे बड़ा घटक है, 557.282 अरब अमेरिकी डॉलर पर पहुंच गई हैं। आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार, वर्तमान में सोने का भंडार 74.325 अरब अमेरिकी डॉलर है।

अनुमान के अनुसार, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 10-11 महीने के अनुमानित आयात को कवर करने के लिए पर्याप्त है। 2023 में, भारत ने अपने विदेशी मुद्रा भंडार में लगभग 58 अरब डॉलर जोड़े, जबकि 2022 में इसमें 71 अरब डॉलर की गिरावट आई थी। 2024 में, भंडार में 20 अरब डॉलर से थोड़ा ज़्यादा की वृद्धि हुई।

ट्रंप ने सरकार को छह महीने के वित्तपोषण वाले विधेयक पर किए हस्ताक्षर, शटडाउन का टला खतरा

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सितंबर के अंत तक सरकार को वित्तपोषित करने वाले विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिए हैं, जिससे फिलहाल सरकारी शटडाउन का खतरा टल गया है और कांग्रेस में चल रहा संघर्ष समाप्त हो गया है। आइए इस बारे में विस्तार से जानते हैं।

नईदिल्ली। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने सितंबर के अंत तक सरकार को वित्तपोषित करने वाले विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिए हैं, जिससे फिलहाल सरकारी शटडाउन का खतरा टल गया है और कांग्रेस में चल रहा संघर्ष समाप्त हो गया है। इस मुद्दे पर डेमोक्रेट्स के बीच भी मतविभाजन दिख रहा था।। व्हाइट हाउस के प्रधान उप प्रेस सचिव हैरिसन फील्ड्स ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि ट्रम्प ने शनिवार को सतत प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए।

इस विधेयक में सरकारी वित्तपोषण को मोटे तौर पर जो बाइडन के राष्ट्रपतित्व काल के दौरान निर्धारित स्तर पर ही रखा गया है। हालांकि इसमें कुछ बदलाव भी किए गए हैं। इसमें पिछले वर्ष की तुलना में गैर-रक्षा व्यय में लगभग 13 बिलियन अमेरिकी डॉलर की कटौती की गई है तथा रक्षा व्यय में लगभग 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर की वृद्धि की गई है, जो कि लगभग 1.7 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के शीर्ष व्यय स्तर को देखते हुए मामूली परिवर्तन है। सीनेट ने शुक्रवार को 54-46 पार्टी लाइन वोट से विधेयक को मंजूरी दे दी, जिसमें सीनेट डेमोक्रेटिक कॉकस के 10 सदस्यों ने अपनी पार्टी के भीतर विरोध के बावजूद विधेयक को पारित करने में मदद की।

सीनेट डेमोक्रेट्स ने कई दिनों तक इस बात पर बहस की कि क्या शटडाउन बढ़ावा दिया जाए, क्योंकि सदन में रिपब्लिकन ने उनके इनपुट के बिना ही खर्च के उपाय का मसौदा तैयार किया और उसे पारित कर दिया। डेमोक्रेट्स ने कहा कि यह कानून स्वास्थ्य सेवा, आवास और अन्य प्राथमिकताओं को कमतर तरीके से आंकता है और ट्रम्प को संघीय खर्च को पुनर्निर्देशित करने की पूरी छूट देता है, और उनका प्रशासन और सरकारी दक्षता विभाग कांग्रेस की ओर से स्वीकृत एजेंसियों और कार्यक्रमों को तेजी से खत्म कर रहा है।

अंत में, अधिकांश डेमोक्रेटिक सीनेटरों ने यह निर्णय लिया कि सरकार को बंद करना वित्त पोषण विधेयक को पारित करने से भी अधिक बुरा होगा। सीनेट के डेमोक्रेटिक नेता चक शूमर ने कहा कि शटडाउन से ट्रम्प प्रशासन को संपूर्ण एजेंसियों, कार्यक्रमों और कर्मियों को गैर-आवश्यक मानने की क्षमता मिल जाएगी, और कर्मचारियों को बिना किसी वादे के छुट्टी पर भेज दिया जाएगा कि उन्हें फिर से काम पर रखा जाएगा।

शूमर ने कहा, ₹शटडाउन DOGE को बिना नियंत्रण से काम करने की अनुमति देगा। डोनाल्ड ट्रम्प और एलन मस्क महत्वपूर्ण सरकारी सेवाओं को बहुत तेज गति से नष्ट करने के लिए स्वतंत्र होंगे।₹ सप्ताह के शुरू में सदन के माध्यम से फंडिंग बिल का पारित होना ट्रम्प और हाउस स्पीकर माइक जॉनसन के लिए एक जीत है। वे रिपब्लिकन को एक साथ रखने और डेमोक्रेट्स के समर्थन के बिना बिल को पारित करने में कामयाब रहे।

न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक घोटाला: 12 करोड़ की धोखाधड़ी में कपिल देधिया गिरफ्तार, ईओडब्ल्यू की बड़ी कार्रवाई

ईओडब्ल्यू ने न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक में गड़बड़ी के मामले में वांछित आरोपी कपिल देधिया को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में ईओडब्ल्यू ने बताया कि देधिया को कल वडोदरा में एक समन्वित अभियान के तहत पकड़ा गया और आज मुंबई लाया गया।

मुंबई की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) ने न्यू इंडिया कोऑपरेटिव बैंक में गड़बड़ी के मामले में वांछित आरोपी कपिल देधिया को गिरफ्तार कर लिया है। मामले में ईओडब्ल्यू ने बताया कि देधिया को कल वडोदरा में एक समन्वित अभियान के तहत पकड़ा गया और आज मुंबई लाया गया। गिरफ्तारी के बाद, कपिल देधिया को शनिवार सुबह 11:30 बजे अदालत में पेश किया गया, जहां अदालत ने उसे 19 मार्च, 2025 तक पुलिस हिरासत में भेजने का आदेश दिया।

जांच में हुआ ये खुलासा: ईओडब्ल्यू ने जांच को लेकर जानकारी देते हुए बताया कि अब तक के जांच से यह खुलासा हुआ है कि कपिल देधिया के खाते में कुल 12 करोड़ रुपये जमा किए गए थे, जो बैंक से गलत तरीके से निकाले गए धन का हिस्सा थे। यह राशि दो मुख्य स्रोतों से आई थी। इसमें एक हिस्सा धर्मेश रियल्टी के बिल्डर धर्मेश पौन से प्राप्त हुआ था, जबकि दूसरा हिस्सा अरुणाचलम नामक व्यक्ति द्वारा ट्रांसफर किया गया था, जो मामले में एक और वांछित आरोपी है। इसके अतिरिक्त, उसे कथित तौर पर हितेश मेहता से भी धन प्राप्त हुआ था।

अभी चल रही मामले की जांच: आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) द्वारा मामले की जांच अब भी जारी है। मामले में अधिकारियों का कहना है कि इस मामले में आगे की जांच से और भी जानकारी प्राप्त हो सकती है और गड़बड़ी में शामिल अन्य व्यक्तियों की पहचान की जाएगी।

क्या है मामला?: मुंबई पुलिस ने न्यू इंडिया को-ऑपरेटिव बैंक के महाप्रबंधक, लेखा प्रमुख और उनके सहयोगियों के खिलाफ 122 करोड़ रुपये के गबन का मामला दर्ज किया था। मामले को आगे की जांच के लिए मुंबई पुलिस की आर्थिक अपराध शाखा (ईओडब्ल्यू) को सौंप दिया गया था।

बैलों से खेती:छोटे व सीमांत किसानों को प्रोत्साहन

सुनील कुमार महला

राजस्थान सरकार की ओर से छोटे और सीमांत किसानों के लिए कुछ समय पहले ही एक शानदार व अच्छा फैसला आया है। पाठकों को बताता चलूं कि सरकार के इस फैसले के अनुसार अब राजस्थान सरकार बैलों से खेती करने वालों को 30 हजार रुपए वार्षिक सहायता देगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि राजस्थान सरकार का यह कदम न केवल बैलों के संरक्षण की दिशा में एक अहम्-और महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि इससे छोटे और सीमांत किसानों को आर्थिक संबल भी मिल सकेगा। आज के इस आधुनिक दौर में जब खेती-बाड़ी आधुनिक कृषि यंत्रों ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर, रोटावेटर, पावर टिलर, सीड ड्रिल, स्प्रेयर, ड्रिप सिंचाई सिस्टम आदि और तकनीक से की जाने लगी है, उस दौर में खेती के पारंपरिक तौर-तरीकों पर एकबार पुनः ध्यान केंद्रित किए जाने से आर्गेनिक व जैविक खेती को भी बढ़ावा मिल सकेगा। पाठकों को बताता चलूं कि राजस्थान के नागौर ज़िले में बैल ज़्यादा पाए जाते हैं तथा यहां के बैल अपनी ताकत, तेज़ रफ़्तार, और सुंदरता के लिए दुनिया भर में मशहूर हैं, लेकिन वर्तमान में इन बैलों की पहले के जमाने की भांति अब खेतों में उतनी वैल्यू नहीं रही है, क्यों कि लगातार बढ़ते शहरीकरण, कृषि में आधुनिक कृषि यंत्रों व तकनीक के प्रयोग से तथा लगातार कम होते चरागाहों व वन्य क्षेत्र में पहले की तुलना में कमी के कारण, किसान भी बैल पालने से अब कतराने लगे हैं, ऐसे में वर्तमान में राजस्थान सरकार की ओर से जो खबर आई है, राजस्थान के किसानों में पशुपालन (बैलों) के प्रति जोश व मोह पैदा करेगी। कहना ग़लत नहीं होगा कि सरकार के इस कदम से रामदेव जी पशु मेला, तेजाजी का मेला(परबतसर उपखंड), बलदेवराम जी का मेला(मेड़ता सिटी उपखंड) के अस्तित्व को भी बल मिलेगा, क्यों कि ये मेले बैलों की बिक्री को बढ़ावा देने के लिए लगते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो अब इस सरकारी योजना से उम्मीद जगी है कि बैलों की मांग बढ़ेगी और पशु मेले फिर से जीवंत हो सकते हैं। इससे पारंपरिक पशुपालन को भी बढ़ावा मिलेगा और किसानों को नई आर्थिक संभावनाएं मिलेंगी।सरकार के निर्णय से कृषि यंत्रों से होने वाले प्रदूषण पर भी कुछ हद तक लगाम लग सकेगी और किसान परंपरागत जैविक खेती की ओर अग्रसर होंगे। कहना ग़लत नहीं होगा कि पिछले कुछ वर्षों में बैलों की संख्या में लगातार गिरावट दर्ज की जा रही थी, सरकार की इस योजना के बाद बैलों से खेती पुनर्जीवित हो सकेगी। गोपालन को भी इससे बढ़ावा मिलेगा। साथ ही बैलों के पालन-पोषण पर होने वाले खर्च में इस प्रोत्साहन राशि से काफी सहयोग मिल सकेगा। इस योजना से छोटे किसान रासायनिक उर्वरकों की बजाय खेती में प्राकृतिक तरीकों को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे।अक्सर यह देखा जाता है कि अब तक आर्थिक समस्याओं के चलते छोटे बछड़ों को निराश्रित छोड़ दिया जाता था, लेकिन अब ये उपयोगी साबित हो सकेंगे।खेती की लागत में भी इससे कमी आएगी, क्यों कि आधुनिक कृषि यंत्रों के उपयोग से खेती पर किसानों का काफ़ी खर्च हो जाता है। पारंपरिक खेती को बढ़ावा मिलने से मिट्टी की उर्वरता तो बनी ही रहेगी साथ ही साथ इससे पर्यावरण संरक्षण भी हो सकेगा। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि इस संबंध में कुछ समय पहले ही कृषि विभाग के कृषि आयुक्त ने बजट घोषणा की पालना में एक आदेश जारी कर बैलों से खेती करने वाले किसानों की जानकारी हर जिले से मांगी गई है। जानकारी के अनुसार जिलों में बैलों से खेती करने वाले किसानों की जानकारी एकत्रित कर उच्चाधिकारियों को भेजी जाएगी, ताकि अधिकाधिक लोगों को सरकार की इस शानदार योजना का फायदा मिल सके। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की तर्ज पर यह प्रोत्साहन राशि किसानों को दी जाएगी। यहां यह भी गौरतलब है कि बैलों से खेती पर मिलने वाली प्रोत्साहन राशि के साथ ही बैलों और गायों से मिलने वाले गोबर का उपयोग करने के लिए किसानों द्वारा गोबर गैस प्लांट लगाने पर भी सब्सिडी का प्रावधान है।इस संबंध में जिला कृषि विभाग कार्यालय या नजदीकी कृषि सेवा केंद्र में सम्पर्क किया जा सकता है। वास्तव में यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि यह योजना ग्रामीण भारत की खेती-किसानी को भी एक नया जीवन प्रदान करने में बहुत ही सहायक सिद्ध होगी। योजना से कृषि उत्पादन में भी सुधार होगा और यह योजना कहीं न कहीं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी सुदृढ़ व मजबूत बनाएगी।जैविक खेती को बढ़ावा देने में मदद मिलने से खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। ऊपर बता चुका हूं कि आज बढ़ते खर्च, शहरीकरण, आधुनिकता की आड़ में राजस्थान के अधिकतर किसानों ने बैलों को त्याग दिया है। सिंचाई के साधनों से वंचित किसानों ने भी आधुनिक उपकरणों का सहारा लेकर बैलों की उपयोगिता को भुला सा दिया है। शायद यही कारण भी है कि पिछले कुछ समय से पशुधन की संख्या में भी तेजी से गिरावट आई है। यह योजना इस समस्या का समाधान बखूबी कर सकती है और बैलों के महत्व को फिर से स्थापित कर सकती है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि राजस्थान सरकार ने जो योजना राजस्थान में शुरू की है, वह यदि पहाड़ी क्षेत्रों में भी छोटे किसानों के लिए शुरू की जाए तो पहाड़ी क्षेत्रों के किसानों की तकदीर बदल सकती है, क्यों कि पहाड़ों में(विशेषकर उत्तराखंड और हिमाचल प्रदेश में) अक्सर कृषि जोतें एक-दो हैक्टेयर से छोटी होतीं हैं। आज हिमाचल प्रदेश में पॉवर टिलर को 50 फीसदी तक सब्सिडी देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है।पावर टिलर जैसे यंत्र हमारे पर्यावरण को भी कहीं न कहीं नुकसान पहुंचाते हैं, क्यों कि ये धुंआ छोड़ते हैं और शोर भी करते हैं और इन पर लागत भी कम नहीं है। वैसे भी गरीब किसानों के लिए पावर टिलर खरीदना एक बड़ी बात है ऐसे में पूरे भारतवर्ष में ही जो कृषि जोतें एक या दो हेक्टेयर से छोटी हैं, उनके लिए आत्मनिर्भर होने का मार्ग बैलों से खेती के माध्यम से ही निकल सकता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि किसी पहाड़ी क्षेत्रों में तो यह और भी ज्यादा जरूरी इसलिए है, क्योंकि यहां की 80 से 85 फीसदी जोतें एक हेक्टेयर से भी छोटी हैं, इनमें से कुछ तो एक एकड़ से भी छोटी हैं। यदि हम यहां आंकड़ों की बात करें तो हिमाचल प्रदेश में औसत जोत का आकार 0.95 हेक्टेयर है।राज्य में 88.86 प्रतिशत किसान सीमान्त और लघु वर्ग के हैं।इन किसानों के पास बोई जाने वाली ज़मीन का 55.93 प्रतिशत हिस्सा है। राज्य में 10.84 प्रतिशत किसान मध्यम श्रेणी के हैं।केवल 0.30 प्रतिशत किसान ही बड़े किसानों की श्रेणी में आते हैं।राज्य में कुल भौगोलिक क्षेत्र 55.673 लाख हेक्टेयर है। राज्य में 64 प्रतिशत भूमि जोत एक हेक्टेयर (सीमांत) से कम है। राज्य में 21 प्रतिशत भूमि जोत 1-2 हेक्टेयर के बीच है। राज्य में 70 प्रतिशत लोग सीधे तौर पर कृषि पर निर्भर हैं। ठीक इसी प्रकार से यदि हम उत्तराखंड की बात करें तो यहां भी कृषि भूमि का औसत आकार 0.95 हेक्टेयर है।राष्ट्रीय औसत की तुलना में उत्तराखंड में लघु और सीमांत जोतों का हिस्सा ज़्यादा है। उपलब्ध जानकारी के अनुसार उत्तराखंड में सीमांत, छोटी, और बड़ी कृषि जोतों का क्षेत्रफल क्रमशः 36.23%, 27.6%, और 36.16% है। बहरहाल, यहां यह ठीक है कि बड़ी जोत वाले किसानों के लिए बैलों से कृषि कार्य करना काफी कठिन है, किन्तु छोटी व सीमांत जोत वाले किसानों के लिए ऐसी योजनाएं लाभकारी सिद्ध हो सकतीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि खेती- किसानी यदि आत्मनिर्भर होगी तो किसानों के लिए कर्ज से मुक्ति का रास्ता भी बनेगा, जिसके कारण कृषक आत्महत्याओं पर भी रोक लगेगी। आज जरूरत इस बात की है कि पहाड़ी क्षेत्रों में भी छोटे व सीमांत किसानों को ऐसी योजनाओं का लाभ मिले, ताकि कृषि घाटे का सौदा न रहे और पहाड़ी क्षेत्रों के किसान भी कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भर बन सकें।

किसरा मंडल बंडलागुडा व चिरीयाला जोन स्थित श्री आईजी सेवा संघ में आदविक मुलेवा ढूंढोत्सव व डोयटन कार्यक्रम में उपस्थित समस्त सीरवी समाज गणमान्य पदाधिकारी भंगाराम मुलेवा, भंवरलाल मुलेवा सोहनलाल हाम्बड़ ,मांगीलाल काग, कालुराम काग, डायाराम लचेटा,प्रभुराम परिहारिया,तुलसाराम सिन्दडॉ, अर्जुनलाल बर्फा, किशनसिंह राठौड़, नारायणलाल परिहार, हुक्माराम सानपुरा, कालुराम काग चितल, मोतीलाल काग, ओमप्रकाश पंवार, गीरधारीलाल चोयल, मोतीलाल मादावत, भोमाराम चोयल,मलाराम चोयल, सुरेश सैणचा, नेमाराम हाम्बड़, जगदीश काग, मंगल मुलेवा, जगदीश सीरवी, बाबूलाल मुलेवा, पारसमल शर्मा, ओंकारलाल हाम्बड़ , बाबूलाल मुलेवा,गोपाराम ,लिकमाराम सोहनलाल, महेश , महेन्द्र, ओमप्रकाश,पुकराज ,कानाराम, मोहनलाल ,धर्मीचंद मुलेवा परिवार व समाज बन्धु।

पूर्व केंद्रीय मंत्री देवेंद्र प्रधान (केंद्रमंत्री धर्मेंद्र प्रधान का पिता) का निधन

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान के पिता देवेंद्र प्रधान का निधन। उनकी मृत्यु के समय उनकी आयु 83 वर्ष थी। देवेन्द्र प्रधान वाजपेयी सरकार में भूतल परिवहन मंत्री थे।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देवेन्द्र प्रधान को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की। प्रधानमंत्री ने उन्हें अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की और श्रद्धांजलि अर्पित की।वहीं, भारतीय जनता पार्टी के कई वरिष्ठ नेता भी इस समय मोदी के साथ मौजूद थे।स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में मंत्री के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण विभागीय जिम्मेदारियां संभालकर अपने प्रशासनिक कौशल का भी प्रदर्शन किया है। अपने शोक संदेश में श्री पटनायक ने कहा कि डॉ. प्रधान के निधन से राज्य ने एक प्रभावशाली राजनीतिक व्यक्ति और लोकप्रिय राजनेता खो दिया है। नवीन ने दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की तथा शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की।स्वर्गीय डॉ. प्रधान को गहरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री पटनायक ने कहा कि स्वर्गीय डॉ. प्रधान को उनके अद्वितीय संगठनात्मक कौशल और करिश्माई व्यक्तित्व के लिए याद किया जाएगा।

केन्द्र सरकार नहीं जानती कैसे हुई थी संविधान निर्माता डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की मृत्यु:- नरेश गुणपाल

हिसार/चण्डीगढ़/नई दिल्ली 17 मार्च

आरटीआई एक्टिविस्ट नरेश गुणपाल द्वारा गृह मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली से सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ की धारा 6 की उपधारा 1 के तहत संविधान निर्माता भारत रत्न बाबा साहेब डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की मृत्यु से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं की जानकारी मांगी गई थी, जानकारी मुहैया ना करवाने की स्थिती में उन्होंने गहरी चिंता व्यक्त की है कि केंद्र सरकार के पास रेकॉर्ड्स में संविधान निर्माता की जानकारी उपलब्ध नहीं है। जो कि देश के लिए एक विडम्बना है।

उन्होंने कहा कि बिंदु नंबर एक में डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर की मृत्यु का स्थान और उनकी मृत्यु कैसे हुई थी के बारे जानकारी मांगी थी, बिंदु नंबर दो में डॉ0 बी0 आर0 अम्बेडकर की मृत्यु उपरान्त उनका पोस्टमार्टम करवाने के सम्बन्ध में पोस्टमार्टम की सत्यापित कॉपी की मांग की गई थी , बिंदु नंबर तीन में आवेदक ने संविधान निर्माता की मृत्यु के बारे में जानकारी मांगी गई थी कि उनकी मृत्यु प्राकृतिक थी या फिर उनकी हत्या तथा उनकी मृत्यु किस तारीख को हुई, बिंदु नंबर चार में आवेदक ने संविधान निर्माता की मौत से सम्बन्धित जाँच के बारे में पूछा गया था कि उनकी मौत की जाँच किसी आयोग-समिति द्वारा की गई थी, मौत की जाँच की स्थिती में जाँच की सत्यापित कॉपी की मांग की गई थी। बिंदु नंबर पाँच में आवेदक द्वारा संविधान निर्माता की जन्म तारीख एवं जन्म स्थान के बारे में जानकारी मांगी गई थी। लेकिन एक भी बिंदु की जानकारी का जवाब देना जरुरी नहीं समझा ।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार गृह मंत्रालय नई दिल्ली के उप सचिव (ई) तथा केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी द्वारा डॉक्टर भीम राव अम्बेडकर की मृत्यु से संबंधित जानकारी के आवेदन को सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ की धारा 6 की उपधारा ३ के अंतर्गत आवश्यक कार्यवाही हेतु केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत सरकार जनपथ नई दिल्ली, नोडल लोक सूचना अधिकारी डॉ0 अम्बेडकर फाउंडेशन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग 15 जनपथ नई दिल्ली एवं पुलिस आयुक्त दिल्ली पुलिस मुख्यालय आई. पी. एस्टेट नई दिल्ली को स्थानांतरण कर दी गई।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत सरकार जनपथ नई दिल्ली के सहायक निदेशक एवं केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी ने जवाब दिया की मांगी गई सूचना इस विभाग में उपलब्ध नहीं है, लेकिन राष्ट्रीय अभिलेखागार में डॉ0 भीमराव अम्बेडकर से सम्बंधित अभिलेख उपलब्ध है और यह एक गहन शोध का विषय है अतः आप इस विषय पर शोध के लिए यहाँ किसी भी कार्य दिवस को कार्यालय समय के दौरान आ सकते है। आपको पब्लिक रेकॉर्ड्स एक्ट, 1993 के अंतर्गत सभी सुविधाएं प्रदान की जाएगी।

उन्होंने कहा कि निदेशक एवं केंद्रीय लोक सूचना अधिकारी डॉ0 अम्बेडकर फाउंडेशन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग 15 जनपथ नई दिल्ली द्वारा जवाब दिया गया कि इस कार्यालय में ऐसी कोई जानकारी उपलब्ध नहीं है।

उन्होंने कहा कि कार्यालय पुलिस एवं जन सूचना अधिकारी सामान्य प्रशासन आठवां तल एम0 एस0 ओ0 बिल्डिंग पुलिस मुख्यालय इंद्रप्रस्थ इस्टेट नई दिल्ली के सहायक जन सूचना अधिकारी पुलिस मुख्यालय आई. पी. एस्टेट नई दिल्ली द्वारा आरटीआई आवेदन पत्र की एक प्रतिलिपि

सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ की धारा 6 की उपधारा ३ के तहत उपायुक्त पुलिस एवं जन सूचना अधिकारी उत्तरी जिला सिविल लाइन्स दिल्ली को स्थानांतरित की गई, लेकिन जन सूचना अधिकारी एवं अतिरिक्त उपायुक्त पुलिस उत्तरी जिला सिविल लाईन दिल्ली ने भी आवेदक के आवेदन पत्र की एक प्रतिलिपि सूचना का अधिकार अधिनियम २००५ की धारा 6 की उपधारा ३ के तहत उपायुक्त पुलिस एवं जन सूचना अधिकारी नई दिल्ली जिला पार्लियामेंट स्ट्रीट नई दिल्ली को स्थानांतरित कर दी गई।

उन्होंने कहा कि उपायुक्त पुलिस एवं जन सूचना अधिकारी नई दिल्ली जिला पार्लियामेंट स्ट्रीट नई दिल्ली जिला नई दिल्ली द्वारा जवाब दिया गया कि इस जिला से सम्बन्धित नहीं है।

उन्होंने कहा कि सूचना दिल्ली के कार्यालयों में इधर से उधर घूमती रही लेकिन किसी ने संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के बारे में कुछ भी लिखने से परहेज़ रखा, सरकारी कार्यालयों के लोक सूचना अधिकारियों द्वारा सूचना का जवाब ना देकर यह साबित कर दिया है कि केंद्र सरकार संविधान निर्माता डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर के बारे में कुछ भी नहीं जानती है, जो कि देश के लिए सबसे बड़ी विडंबना है।

शोध पद्धति पर दस दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन 18 मार्च से

परिवहन विशेष अनूप कुमार शर्मा

भीलवाड़ा। संगम विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय में 18 मार्च से 27 मार्च तक भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद प्रायोजित 10 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यशाला में देशभर के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के 30 शोधार्थी भाग लेंगे।कार्यशाला के तहत अनुसंधान पद्धति से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिनमें प्रकल्पना निर्माण, अनुसंधान उद्देश्यों की पहचान, साहित्य समीक्षा, नमूना विधियाँ, डेटा संग्रह, सांख्यिकीय उपकरण एवं तकनीक, अनुसंधान प्रस्ताव तैयार करना एवं एआई का उपयोग शामिल हैं।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं वक्ता प्रो. आनंद पालीवाल (पूर्व सदस्य, भारतीय विधि आयोग एवं अधिष्ठाता, विधि विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर) होंगे।

साथ ही प्रो. अमरेंद्र पाणि (हेड ऑफ रिसर्च डिवीजन, एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज) और डॉ. राजकुमार चतुर्वेदी (प्राचार्य, एमएलवी कॉलेज, भीलवाड़ा) बतौर मुख्य वक्ता कार्यशाला में अपने विचार साझा करेंगे।संगम विश्वविद्याल के कुलपति प्रो. करुनेश सक्सेना ने इसे विश्वविद्यालय के लिए एक गरिमामयी उपलब्धि बताया और कहा कि शोध को बढ़ाने के लिए भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद , भारत सरकार का बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहल है। उप कुलपति प्रो. मानस रंजन पाणिग्रही ने इसे शोधार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी कार्यशाला करार दिया और कहा कि देश में शोध गुणवत्ता बढ़ेगी।

कुलसचिव प्रो. राजीव मेहता ने विभाग को इस कार्य हेतु शुभकामनाएं प्रदान की।परियोजना निदेशक डॉ. तनुजा सिंह ने बताया कि कार्यशाला में प्रायोगिक प्रशिक्षण भी दिया जाएगा ताकि शोधार्थी इसे शोध कार्य में प्रयोग कर सके।प्रबंध संकाय के के अधिष्ठाता डॉ मुकेश शर्मा ने कहा कि इस कार्यशाला में देशभर के विश्वविद्यालयों से शोधार्थी भाग लेंगे, जिनमें देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर, कोटा विश्वविद्यालय, केरल विश्वविद्यालय, दयालबाग विश्वविद्यालय उत्तर प्रदेश, मंदसौर विश्वविद्यालय, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर, मनिपाल विश्वविद्यालय जयपुर. बी.आर. अंबेडकर विश्वविद्यालय एवं जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, भोपाल नोबल विश्वविधालय उदयपुर आदि शामिल हैं।

सरकार ने खनन लुटेरों के लिए खोला छोड़ दिया ; पूरे प्रदेश में माफिया सक्रिय, पुलिस निष्क्रिय

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर: राज्य सरकार ने राज्य में खनिज लूट का माहौल बना दिया है। इसका नेटवर्क सत्तारूढ़ पार्टी के विधायकों के माध्यम से मुख्यमंत्री तक फैला हुआ है। सुबह से शाम तक हर कोई इसके शिकार पर लगा रहता है। कुछ इसी तरह की बात कहते हुए बीजद ने आज खनन भ्रष्टाचार के मुद्दे पर मुख्यमंत्री मोहन माझी पर निशाना साधा है।बीजद विधायक ब्योमकेश रॉय ने भी कहा कि खदान मालिकों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जा रही है। जहां अवैध खनन हो रहा है वहां कोई कार्रवाई नहीं की

जा रही है। खनन माफिया दिनदहाड़े चोरी कर रहे हैं। सरकार इसे प्रोत्साहित कर रही है। क्योंझर में सबसे ज्यादा अवैध खनन हो रहा है। इसका पैसा विधायकों के माध्यम से मुख्यमंत्री तक पहुंचता है। सत्ताधारी पार्टी के विधायक खदानों से चंदा ले रहे हैं। ब्योमकेश ने कहा कि मुख्यमंत्री ने क्योंझर में पहले ही सैकड़ों खनन माफिया पैदा कर दिए हैं।

रघुवर सरकार के पांच मंत्रियों को झारखंड हाईकोर्ट से राहत

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, झारखंड में रघुवर दास सरकार के पांच पूर्व मंत्रियों के खिलाफ हाईकोर्ट में दाखिल जनहित याचिका सोमवार को मुख्य न्यायाधीश की खंडपीठ ने खारिज कर दी गयी है. झारखंड हाईकोर्ट ने पूर्व मंत्री अमर कुमार बाउरी, नीलकंठ सिंह मुंडा, रणधीर सिंह, लुईस मरांडी तथा डॉ नीरा यादव की आय से अधिक संपति मामले में दाखिल पीआईएल सुनवाई के बाद खारिज कर दी. ये सभी तत्कालीन रघुवर दास सरकार में मंत्री थे. वर्ष २०१० में पंकज कुमार यादव नामक व्यक्ति ने आय से अधिक संपति को लेकर एक पी आई एल इनपर दायर की थी। झारखंड हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस एमएस रामचंद्र राव और जस्टिस दीपक रोशन की खंडपीठ में सोमवार को तत्कालीन रघुवर दास सरकार के मंत्री अमर कुमार बाउरी, नीलकंठ सिंह मुंडा, रणधीर सिंह, लुईस मरांडी और डॉ नीरा यादव के खिलाफ हाईकोर्ट में दाखिल पीआईएल पर सुनवाई हुई. इसके बाद खंडपीठ ने आय से अधिक संपति से जुड़ी जनहित याचिका खारिज कर दिया है। यद्यपि तत्कालीन भाजपा मंत्री लुइस मरांडी अब झारखंड मुक्ति मोर्चा की विधायक है।

टाटा का गैंगस्टर मनीष ने किया आत्मसमर्पण

के०के० परिच्छा, स्टेट हेड , झारखंड

जमशेदपुर, शहर के जुगसलाई इलाके का गैंगस्टर मनीष सिंह ने आज पुलिस के समक्ष सरेंडर कर दिया है। मनीष का कांग्रेसी नेता अभिजित सिंह पर फायरिंग का आरोप है। वह पुलिस से बच कर चल रहा था। उस पर हत्या फिरौती के क ई मामले दर्ज हैं।घटना के बारे में जानकारी देते हुए पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अगस्त महीने में जुगसलाई थाना क्षेत्र स्थित गर्ल्स स्कूल रोड के पास कांग्रेसी नेता अभिजीत सिंह के कार्यालय के पास गोली चालन की घटना घटी थी। इस घटना में अभिजीत सिंह को निशाना बनाकर अज्ञात हमलावरों ने गोलीबारी की थी। गोलीबारी में अभिजीत सिंह बाल-बाल बच गए थे, लेकिन इस हमले के बाद उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी। अभिजीत सिंह के बयान पर पुलिस ने

मनीष सिंह और उसके सहयोगियों को इस मामले में नामजद आरोपी बनाया था। जिसके बाद पुलिस ने आरोपी गैंगस्टर मनीष सिंह और उसके सहयोगियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई शुरू की थी । पुलिस ने पहले ही मनीष सिंह के सहयोगियों को गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन मनीष सिंह फरार चल रहा था। पुलिस के द्वारा कई स्थानों पर छापेमारी की गई, लेकिन पुलिस को कोई सफलता नहीं मिली। इसके बाद जुगसलाई थाना प्रभारी सचिन दास ने पुलिस की टीम को और भी सक्रिय किया और मनीष सिंह को दबाव में लाने के लिए लगातार प्रयास जारी रखा। पुलिस के प्रयासों के बाद मनीष सिंह ने आज खुद ही जुगसलाई थाने में आत्मसमर्पण कर दिया।

जिन्दगी जीने दो अपलक...!

इस रफ़्तार पर जिसने भी पैर धरा,
पहले तो जीवन रफ़ियार फिर मरा।
सुख-दुख की संवेदना हुआ खड़ा,
जमाने की अवहेलना से खूब लड़ा।
डिग्रियों का तमगा ले शिखर चढ़ा,
तकनीक के अभाव में पीछे ही रहा।

इस रफ़्तार पर जिसने भी पैर धरा,
पहले तो जीवन रफ़ियार फिर मरा।
रोजगार की तलाश में दर-दर फिरा,
धूप में निकला लड़खड़ाकर गिरा।
आमजनों को दया आई पानी दिया,
फिर उठ खड़ा, रिज्यूम देकर बढ़ा।

इस रफ़्तार पर जिसने भी पैर धरा,
पहले तो जीवन रफ़ियार फिर मरा।
अब उसे लगी नौकरी संतोषजनक,
लड़कीवालों के कान में पड़ी भनक।
हो गई शादी, धूम-धाम से बेधड़क,
देख रहें हैं सितारे निहारते फ़लक।
बस, उन्हें ज़िन्दगी जीने दो अपलक।

संजय एम तराणेकर

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023